Follow us on: @TheDailyPioneer facebook.com/dailypioneer instagram.com/dailypioneer/

RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 15 अंक 116
लखनऊ, शुक्रवार, 14 फरवरी 2025
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ, नगर संस्करण

Established 1865

पायनियर

लखनऊ, नई दिल्ली और रायपुर से प्रकाशित

www.dailypioneer.com

आभ्यन्तर

राष्ट्रीय-10

सरकारी विभागों का आधुनिकीकरण आवश्यकः राष्ट्रपति

मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लागू

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली/इंफाल

संघर्षग्रस्त मणिपुर में घटनाक्रम में तेजी से बदलाव के तहत बृहस्पतिवार को राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया तथा राज्य विधानसभा को निलंबित कर दिया गया। यह घटना मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह के अपने पद से इस्तीफा देने के कुछ दिनों बाद हुई है, जिससे पूर्वोत्तर राज्य में राजनीतिक अनिश्चितता पैदा हो गई और नौकरशाह से राज्यपाल बने अजय कुमार भल्ला के कार्यभार संभालने के एक महीने के भीतर ही यह घटना घट गई। गृह मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, मणिपुर विधानसभा, जिसका कार्यकाल 2027 तक है, को निलंबित कर दिया गया है। मणिपुर में भाजपा सरकार का नेतृत्व कर रहे सिंह ने लगभग 21 महीने की जातीय हिंसा के बाद मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था जिसमें अब तक 250 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है।

सिंह ने 9 फरवरी को इस्तीफा दे दिया था और राष्ट्रीय राजधानी में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात के कुछ घंटों बाद इम्फाल में राज्यपाल अजय कुमार भल्ला को अपना इस्तीफा सौंप दिया था। कांग्रेस, जो संसद सहित हर मंच पर मणिपुर का मुद्दा लगातार उठाती रही है, ने इस तथ्य पर खेद व्यक्त किया कि राज्य में राष्ट्रपति शासन तब लगाया गया जब राज्य के सामाजिक ताने-बाने को, यदि नष्ट नहीं किया गया तो, गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त होने दिया गया। गृह मंत्री अमित शाह प्रधानमंत्री द्वारा सौंपे गए राज्य के प्रबंधन में स्पष्ट रूप से विफल रहे,

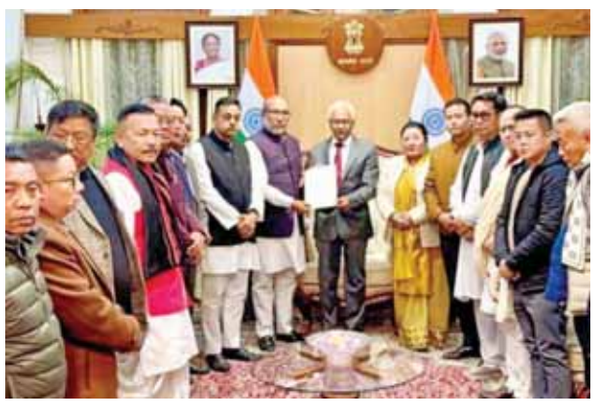

मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने 9 फरवरी को इंफाल में राज्यपाल एके भल्ला को अपना इस्तीफा सौंपा था। फाइल फोटोः पीटीआई

जिसके बाद मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लगाया गया। कांग्रेस ने एक बयान में कहा, 'भाजपा के सहयोगियों को 2022 में मणिपुर में बहुमत मिला, लेकिन उनकी राजनीति के कारण 15 महीने बाद 'भारी त्रासदी' हुई।'

राज्यपाल द्वारा राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को रिपोर्ट भेजे जाने के बाद राष्ट्रपति शासन लगाने का निर्णय लिया गया। अधिसूचना में कहा गया है, रिपोर्ट और मुझे प्राप्त अन्य जानकारी पर विचार करने के बाद, मैं इस बात से संतुष्ट हूं कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है, जिसमें उस राज्य की सरकार भारत के संविधान के प्रावधानों के अनुसार नहीं चल सकती। उन्होंने आगे कहाकि अब, इसलिए, संविधान के अनुच्छेद 356 द्वारा प्रदत्त शक्तियों और उस संबंध में मुझे सक्षम बनाने वाली सभी अन्य शक्तियों का प्रयोग करते हुए, मैं घोषणा करता हूं कि मैं भारत के राष्ट्रपति के रूप में मणिपुर राज्य की सरकार के सभी कार्यों और उस राज्य के राज्यपाल में निहित या उनके द्वारा प्रयोग की जा सकने वाली सभी शक्तियों को अपने ऊपर ले लेता हूं। अधिसूचना में कहा गया है कि राज्य विधानमंडल की शक्तियों का प्रयोग संसद द्वारा या उसके प्राधिकार के तहत किया जाएगा। इसमें यह भी कहा गया है कि मणिपुर के संबंध में संविधान में राज्यपाल के प्रति कोई भी संदर्भ राष्ट्रपति के प्रति संदर्भ माना जाएगा। भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार द्वारा राष्ट्रपति शासन लगाने का निर्णय इसलिए लिया गया क्योंकि पार्टी के पूर्वोत्तर प्रभारी संबित पात्रा और पार्टी विधायकों के बीच कई दौर की चर्चा के बावजूद पार्टी मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार पर आम सहमति बनाने में विफल रही। पात्रा ने केंद्र सरकार के बृहस्पतिवार के फैसले से पहले कुछ बार भल्ला से मुलाकात की थी। यह फैसला ऐसे समय में आया है जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अमेरिका में हैं। राज्यपाल ने पहले ही 12वीं मणिपुर (शेष पृष्ठ 9)

मोदी, गबार्ड ने आतंकवाद को रोकने पर चर्चा की

वाशिंगटन डीसी में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड के साथ बैठक की। पीटीआई

पीटीआई। वाशिंगटन

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने डोनाल्ड ट्रम्प प्रशासन में नवनियुक्त राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड से मुलाकात की और भारत-अमेरिका मैत्री पर चर्चा की, जिसके बारे में उन्होंने कहा कि वह एक 'मजबूत मतदाता' रही हैं। मोदी ने हिन्दू-अमेरिकी गबार्ड को देश के शीर्ष खुफिया अधिकारी के रूप में उनकी नियुक्ति की पुष्टि पर भी बधाई दी। बुधवार को इसकी पुष्टि हुई। मोदी ने एक्स पर लिखा, 'वाशिंगटन डीसी में अमेरिकी राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड से मुलाकात की। उनकी नियुक्ति पर उन्हें बधाई दी। भारत-अमेरिका मैत्री के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की, जिसकी वह हमेशा से प्रबल समर्थक रही हैं।' विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने एक्सएनयूएमएक्स पर एक पोस्ट में कहा कि चर्चा आतंकवाद, साइबर सुरक्षा और उभरते खतरों में खुफिया सहयोग बढ़ाने पर भी केंद्रित थी।

पोस्ट में कहा गया, 'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज वाशिंगटन डीसी में अमेरिकी राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड के साथ एक सार्थक बैठक की। चर्चा आतंकवाद निरोध, साइबर सुरक्षा और उभरते खतरों में खुफिया सहयोग बढ़ाने पर केंद्रित रही।' मोदी फ्रांस की यात्रा के बाद बुधवार को शाम करीब 5.30 बजे (बृहस्पतिवार, भारतीय समयानुसार सुबह 4 बजे) अमेरिकी राजधानी पहुंचे, जहां उन्होंने फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक्शन समिट की सह-अध्यक्षता की थी। मोदी और ट्रम्प बृहस्पतिवार को व्हाइट हाउस में द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। मोदी ने एक्सक्लूसिव कॉन्फ्रेंस में कहा, हमारे देश अपने लोगों के लाभ और हमारे ग्रह के बेहतर भविष्य के लिए मिलकर काम करते रहेंगे। द हिल की रिपोर्ट के अनुसार, बुधवार को सीनेट द्वारा उनकी नियुक्ति की पुष्टि के कुछ ही घंटों बाद गैबार्ड ने ओवल ऑफिस में (शेष पृष्ठ 9)

नया आयकर विधेयक कानून आसान बनाएगा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बृहस्पतिवार को लोकसभा में आयकर विधेयक, 2025 पेश किया और लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से इसे सदन की प्रवर समिति को भेजने का अनुरोध किया। सदन में विधेयक पेश किए जाने का तृणमूल कांग्रेस के सौगत राय समेत कुछ विपक्षी सदस्यों ने विरोध किया। लेकिन सदन ने ध्वनिमत से इसे पेश करने की मंजूरी दी। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने सात फरवरी को नए आयकर विधेयक को मंजूरी दी थी, जो छह दशक पुराने आयकर अधिनियम की जगह लेगा। वित्त मंत्री ने सदस्यों की आपत्तियों के बीच विधेयक सदन में प्रस्तुत किया और

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण नई दिल्ली में संसद के बजट सत्र के दौरान राज्यसभा में बोलती हुईं।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से इसे सदन की प्रवर समिति को भेजने का अनुरोध किया। समिति अगले सत्र के पहले दिन तक अपनी रिपोर्ट सौंपेगी। सीतारमण ने अध्यक्ष से प्रस्तावित समिति के गठन और नियमों पर भी निर्णय लेने का आग्रह किया।

विधेयक पेश किए जाने पर कुछ विपक्षी सदस्यों के ऐतराज पर वित्त मंत्री ने कहा कि कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी और रिवॉल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी (आरएसपी) के एन के प्रेमचंद्रन ने .ये बात गलत कही है कि नए विधेयक में मौजूदा आयकर कानून की तुलना में अधिक धाराएं हैं। उन्होंने कहा कि 1961 में पारित मौजूदा कानून में कुछ ही धाराएं थीं और इतने सालों में इसमें किए गए बदलावों के बाद अब इसमें 819 धाराएं हैं। सीतारमण ने कहा कि प्रस्तावित नए कानून में केवल 536 धाराएं हैं। वित्त मंत्री ने विधेयक पेश किए जाने के विरोध में तृणमूल कांग्रेस सदस्य सौगत राय की दलील को भी खारिज कर दिया। नया विधेयक प्रत्यक्ष कर कानून को समझने में आसान बनाने और कोई नया कर बोझ नहीं डालने की एक कवायद है। इसमें प्रावधान और स्पष्टीकरण या कठिन वाक्य नहीं होंगे। नए विधेयक की घोषणा वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने एक फरवरी को अपने बजट भाषण में की थी। छह दशक पुराने आयकर अधिनियम 1961 की जगह लेने वाला नया आयकर विधेयक प्रत्यक्ष कर कानूनों को पढ़ने-समझने में आसान बनाएगा, अस्पष्टता दूर करेगा और मुकदमेबाजी को कम करेगा। नया अधिनियम उन सभी संशोधनों और धाराओं से मुक्त होगा जो अब प्रासंगिक नहीं हैं। (शेष पृष्ठ 9)

चुनावी ड्यूटी पर न्यूनतम अध्यापकों को लगाने संबंधी दिशानिर्देश का सख्ती से पालन हो : उच्च न्यायालय

प्रयागराज (भाषा)। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने एक महत्वपूर्ण निर्णय में निर्देश दिया है कि अध्यापकों को बूथ (मतदान केंद्र) स्तर के अधिकारी के तौर पर नियुक्त किए जाने की जरूरत नहीं है और न ही उन्हें चुनावी ड्यूटी पर लगाया जाए। उच्च न्यायालय ने कहा कि उनकी तैनाती तभी की जाए जब अन्य वर्गों के कर्मचारियों की उपलब्धता न हो। न्यायमूर्ति अजय भनोट ने यह टिप्पणी करते हुए स्पष्ट किया कि चुनावी ड्यूटी पर अध्यापकों की कम से कम तैनाती के संबंध में निर्वाचन आयोग के दिशानिर्देश का सख्ती से पालन करना होगा। झांसी जिले में एक प्राथमिक स्कूल के सहायक अध्यापक सूर्य प्रताप द्वारा ने बूथ स्तर के अधिकारी की ड्यूटी पर लगाए जाने और मतदाता सूची में संशोधन जैसे कार्य दिए जाने के खिलाफ अदालत में यह याचिका दायर की है।

निर्वाचन आयोग के दिशानिर्देशों पर गौर करने के बाद उच्च न्यायालय ने कहा, निर्वाचन आयोग के दिशानिर्देश शिक्षा के अधिकार के मामले में समाज में अध्यापकों की भूमिका और लोकतंत्र में चुनावी कार्य की आवश्यकता के बीच संतुलन बनाने के प्रयास के तहत अध्यापकों की तैनाती पर रोक लगाता है। उच्च न्यायालय ने कहा कि उक्त दिशानिर्देश में स्पष्ट आदेश है कि अध्यापकों को चुनावी ड्यूटी पर तभी लगाया जाएगा जब अन्य सभी वर्गों के कर्मचारियों की तैनाती पूरी हो गई हो। न्यायमूर्ति भनोट ने कहा, राज्य के अधिकारी अध्यापकों के खाली समय पर हल्के या अव्यवस्थित ढंग से अतिक्रमण नहीं कर सकते। जब तक अन्य विकल्पों का पूरी तरह से दोहन न कर लिया जाए, तबतक अध्यापकों को उनके आत्मचिंतन के समय से नहीं हटाया जाना चाहिए।

हंगामे के बीच वक्फ बिल पर जेपीसी रिपोर्ट संसद में पेश

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

वक्फ विधेयक पर संसद की संयुक्त समिति की रिपोर्ट बृहस्पतिवार को हंगामे के बीच राज्यसभा और लोकसभा में पेश की गई, तथा सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच गरमागरम बहस के बाद कार्यवाही कुछ समय के लिए स्थगित कर दी गई। राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे के नेतृत्व में विपक्षी सांसदों ने आरोप लगाया कि रिपोर्ट से असहमति वाले नोट हटा दिए गए। बाद में लोकसभा में गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि भाजपा को विपक्ष के असहमति नोटों को बिना संशोधन के शामिल किए जाने पर कोई आपत्ति नहीं है और उन्होंने लोकसभा अध्यक्ष से प्रक्रिया के अनुसार निर्णय लेने को कहा।

जब समिति के अध्यक्ष जगदम्बिका पाल रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए खड़े हुए तो विपक्षी सदस्यों ने नारेबाजी शुरू कर दी, जिसका सत्ता पक्ष ने मेज थपथपाकर प्रतिवाद किया। इसके बाद विपक्षी सदस्यों ने पाल के खिलाफ नारे लगाते हुए सदन से बहिर्गमन कर दिया। विपक्ष के शोरगुल के बीच शाह ने कहा, कुछ विपक्षी सदस्यों ने अपनी असहमति की टिप्पणियों को पूरी तरह से संलग्न नहीं किए जाने पर आपत्ति जताई है। मैं अपनी पार्टी की ओर से आपसे अनुरोध करना चाहता हूं कि उनकी जो भी आपत्तियां हैं, आप उन्हें संसदीय परंपरा

विपक्ष के हंगामे के बीच संसद में बृहस्पतिवार को वक्फ विधेयक पर संसद की संयुक्त समिति की रिपोर्ट पेश की गई।

के अनुसार रिपोर्ट के साथ संलग्न कर सकते हैं, जैसा आपको उचित लगे। उन्होंने कहा, 'मेरी पार्टी को इस पर कोई आपत्ति नहीं है।' समिति के अध्यक्ष जगदंबिका पाल ने रिपोर्ट को सदन के पटल पर रखा। साथ ही, उन्होंने समिति के समक्ष आए साक्ष्यों का रिकॉर्ड भी सदन में रखा।

इससे पहले, आज समिति की रिपोर्ट राज्यसभा के पटल पर भी रखी गई। विपक्षी सदस्यों का आरोप है कि उनकी असहमति को रिपोर्ट के साथ संलग्न नहीं किया गया है।गृह मंत्री अमित शाह ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से आग्रह किया कि वह विपक्ष की आपत्तियों को जोड़ सकते हैं और इस पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को कोई आपत्ति नहीं है। इस पर बिरला ने कहा कि कुछ सदस्यों ने उनसे मुलाकात की थी और उनके साथ जिन विषयों पर बात हुई है उन्हें रिपोर्ट के साथ संलग्न कर लिया गया है। विपक्षी सदस्यों ने विरोध जताते हुए सदन से वाकआउट कर दिया और कुछ देर बाद सदन में लौटे। विपक्षी सांसदों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी की, तो सत्तापक्ष के कुछ सदस्यों ने रिपोर्ट पेश किए जाने के बाद भारत माता की जय के नारे लगाए। संसद के वर्तमान बजट सत्र के पहले चरण का आज आखिरी कामकाजी दिन था।

समिति की रिपोर्ट गत 30 जनवरी को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को सौंपी गई थी। समिति की 655 पृष्ठ वाली इस रिपोर्ट को बहुमत से स्वीकार किया गया था, जिसमें भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सदस्यों द्वारा दिए गए सुझाव समाहित हैं। विपक्षी सदस्यों ने इसे असंवैधानिक करार दिया था और आरोप लगाया था कि यह कदम वक्फ बोर्डों को बर्बाद कर देगा। भाजपा सदस्यों ने इस बात पर जोर दिया था कि पिछले साल अगस्त में लोकसभा में पेश किया गया विधेयक वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन में आधुनिकता, पारदर्शिता और जवाबदेही लाने का प्रयास करेगा। समिति ने भाजपा सदस्यों द्वारा प्रस्तावित सभी संशोधनों को स्वीकार कर लिया था और विपक्षी सदस्यों के संशोधनों को खारिज कर दिया था। समिति में शामिल विपक्षी सदस्यों ने वक्फ (संशोधन) विधेयक के सभी 44 प्रावधानों में संशोधन का प्रस्ताव रखा था और दावा किया था कि समिति की ओर से प्रस्तावित कानून विधेयक के दमनकारी चरित्र को बरकरार रखेगा और मुस्लिमों के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करने का प्रयास करेगा। वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2024 को केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्री किरेन रीजीजू द्वारा लोकसभा में पेश किए जाने के बाद आठ अगस्त, 2024 को संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) को भेजा गया था। विधेयक का उद्देश्य वक्फ संपत्तियों को विनियमित और प्रबंधित करने से जुड़े मुद्दों और चुनौतियों का समाधान करने के लिए वक्फ अधिनियम, 1995 में संशोधन करना है।

दूसरी ओर प्रमुख मुस्लिम संगठन जमीयत उलेमा-ए-हिंद के प्रमुख मौलाना अरशद मदनी ने वक्फ (संशोधन) विधेयक को असंवैधानिक और अलोकतांत्रिक करार देते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि मुस्लिम समुदाय इसे स्वीकार नहीं कर सकता। उन्होंने यह भी कहा कि संसद से इस विधेयक के पारित होने पर इसे उच्चतम न्यायालय (शेष पृष्ठ 9)

पीएमएलए का इस्तेमाल कर आरोपी को जेल में रखने पर ईडी की खिंचाई

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने बृहस्पतिवार को एक आरोपी को जेल में रखने के लिए धन शोधन निवारण अधिनियम का प्रयोग करने पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की खिंचाई की और सवाल किया कि क्या दहेज कानून की तरह इस प्रावधान का भी 'दुरुपयोग' किया जा रहा है। न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति उज्ज्वल भुइयां की पीठ ने बुधवार को छत्तीसगढ़ के पूर्व आबकारी अधिकारी अरुण पति त्रिपाठी को जमानत देते हुए यह टिप्पणी की। शीर्ष अदालत ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि यदि शिकायत पर संज्ञान लेने वाले अदालती आदेश को छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय ने रद्द कर दिया था तो आरोपी को हिरासत में कैसे रखा गया।

पीठ ने पूछा, पीएमएलए (धन शोधन निवारण अधिनियम) की अवधारणा यह नहीं हो सकती कि व्यक्ति को जेल में रहना चाहिए। यदि संज्ञान रद्द होने के बाद भी व्यक्ति को जेल में रखने की प्रवृत्ति है, तो क्या कहा जा सकता है? देखिए 498ए के मामलों में क्या हुआ, पीएमएलए का भी उसी तरह दुरुपयोग किया जा रहा है? भारतीय दंड संहिता की धारा 498ए विवाहित महिलाओं को उनके पतियों और उनके रिश्तेदारों द्वारा की जाने

वाली क्रूरता से बचाती है।बारह फरवरी को सुनवाई के दौरान उच्चतम न्यायालय ने ये टिप्पणी की।

एक अन्य अवसर पर, शीर्ष अदालत ने हरियाणा में कांग्रेस के पूर्व विधायक से 15 घंटे की लंबी पूछताछ पर ईडी के मनमाने और अमानवीय आचरण की निंदा की थी। ये पूछताछ आधी रात के बाद तक चली थी। धन शोधन के एक अन्य मामले में एक महिला की जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए उच्चतम न्यायालय ने कहा कि ईडी ने उसकी याचिका का विरोध करने के लिए पीएमएलए के प्रावधानों के विपरीत दलीलें दी हैं। इसने कहा, हम केंद्र सरकार द्वारा कानून के विपरीत दलीलें देने के आचरण को बर्दाश्त नहीं करेंगे। संघीय जांच एजेंसी ने एक पूर्व आईएएस अधिकारी को समन जारी किया और गिरफ्तार कर लिया। शीर्ष अदालत ने ईडी द्वारा अपनी कार्रवाई को अंजाम देने में दिखाई गई जल्दबाजी पर सवाल उठाया। अदालत ने कहा, आतंकवाद या आईपीसी में गंभीर अपराधों के मामलों में भी ऐसा नहीं होता है।

न्यायालय ने धन शोधन के मामलों में दोषसिद्धि की कम दर को रेखांकित किया और ईडी से अभियोजन और साक्ष्य की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करने को कहा। संसद में दिए गए एक बयान का हवाला देते हुए न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां की पीठ ने कहा था कि ईडी को दोषसिद्धि दर बढ़ाने के लिए विज्ञान आधारित जांच करनी चाहिए। ऐसे भी उदाहरण हैं जब उच्च न्यायालयों ने जांच के तौर-तरीकों के लिए एजेंसी की निंदा की है। एक मामले में, बंबई उच्च न्यायालय ने ईडी से कहा था कि सोने का अधिकार एक बुनियादी मानवीय आवश्यकता है और रात भर बयान दर्ज करने के लिए इसका उल्लंघन नहीं किया जा सकता। एक अन्य मामले में, बंबई उच्च न्यायालय ने ईडी को नागरिकों को परेशान करने और कानून को (शेष पृष्ठ 9)

तेंदुआ पहुंचा शादी में, दूल्हा-दुल्हन जान बचाकर भागे

बिस्वजीत बनर्जी। लखनऊ

उत्तर प्रदेश की राजधानी में एक भव्य शादी समारोह उस समय एक्शन से भरपूर रोमांच में बदल गया जब एक बिन बुलाया मेहमान - एक तेंदुआ - ने उत्सव में शामिल होने का फैसला किया। बुधवार की रात एमएम लॉन में अक्षय श्रीवास्तव और ज्योति कुमारी की शादी पूरे जोश के साथ हुई, संगीत, हंसी और गिलासों की खनक ने माहौल को और भी खुशनुमा बना दिया। यह तब तक जारी रहा, जब तक कि रात के करीब 11 बजे एक चार पैरों वाला दरवाज़ा तोड़कर घुसने वाला नाटकीय ढंग से वहां आ गया, जिससे यह स्वप्निल विवाह किसी जीवंत फिल्म के दृश्य में बदल गया। एक अचंभित अतिथि

बाईं ओर की तस्वीर में एक तेंदुआ दिख रहा है, जबकि दाईं ओर की तस्वीर में दुल्हन और अन्य लोग अपनी जान बचाने के लिए भागते दिख रहे हैं। बुधवार देर रात लखनऊ में यह घटना हुई।

ने अपनी सांसें संभालते हुए कहा, पहले तो मैंने सोचा कि यह सजावट का हिस्सा है - जब तक कि यह हिला नहीं गया!

इसके बाद तो पूरी अराजकता फैल गई। मेहमान अपनी प्लेटें छोड़कर चारों दिशाओं में भाग गए। कुछ लोग सीधे गेट की ओर भागे, जबकि एक विशेष रूप से घबराए हुए अतिथि ने पहली मंजिल से कूदना बेहतर विचार समझा - दुर्भाग्यवश, उसे चोटें आईं। दूल्हे के पारिवारिक मित्र राजेश वर्मा ने कहा, 'मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। एक पल हम शादी का आनंद ले रहे थे और अगले ही पल हम अपनी जान बचाने के लिए भाग रहे थे।' इस बीच, दूल्हा-दुल्हन ने अपनी शादी के आरंभ में ही अपनी टीमवर्क की कुशलता साबित करते हुए, अपनी कार की ओर दौड़े और स्वयं को कार के अंदर बंद कर लिया। दूसरी ओर, तेंदुआ चमकती रोशनी और चीखते-चिल्लाते लोगों से भ्रमित होकर, भागने की तलाश में आयोजन स्थल के चारों ओर दौड़ता रहा। वन अधिकारी और पुलिस तत्काल आपातकालीन सूचना के बाद वहां पहुंचे और फिर यह बड़ी बिल्ली के साथ लुका-छिपी का पांच घंटे का खेल बन गया। तेंदुए का पता लगाने के लिए अधिकारियों ने ड्रोन तैनात किया। (शेष पृष्ठ 9)

जर्मनी में कार भीड़ में घुसाई, 28 जख्मी

पीटीआई। बर्लिन

जर्मनी के म्युनिख में बृहस्पतिवार को एक कार चालक ने भीड़ में वाहन घुसा दिया जिससे कम से कम 28 लोग घायल हो गए। बवेरिया के गर्वनर ने कहा कि यह घटना एक हमला प्रतीत होती है। पुलिस ने कहा कि इस घटना में कम से कम 28 लोग घायल हो गए। उसने कहा कि संदेह है कि घटना को अंजाम 24 वर्षीय व्यक्ति ने दिया जो अफगान शरणार्थी है। अधिकारियों ने म्यूनिख शहर के निकट सुबह करीब 10:30 बजे घटी इस घटना के बारे में विस्तृत जानकारी नहीं दी। पुलिस ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर बताया कि इस घटना में चालक को मौके पर ही पकड़ा गया और अब कोई खतरा नहीं

जर्मनी के म्युनिख में हादसे के बाद मौके पर पहुंचे आपात सेवा के कर्मचारी।

है। घटनास्थल पर क्षतिग्रस्त कार को देखा जा सकता है। जर्मनी की समाचार एजेंसी डीपीए के अनुसार, अग्निशमन सेवा ने बताया कि कम से कम 28 लोग घायल हुए हैं, जिनमें से कुछ की हालत गंभीर है। मेयर डाइटर रीटर ने कहा कि वह इस घटना से बेहद दुखी महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि घायलों में बच्चे भी शामिल हैं। घटना के समय सर्विस वर्कर्स यूनियन द्वारा प्रदर्शन किया जा रहा था। यह तुरंत स्पष्ट नहीं हो पाया कि घायलों में प्रदर्शनकारी भी शामिल हैं या नहीं।

पायनियर
लखनऊ, शुक्रवार, 14 फरवरी, 2025

गरीबों के मांगलिक कार्यक्रमों में होंगी फाइव स्टार सुविधाएं: योगी

गोरखपुर शहर के पहले कल्याण मंडपम का मुख्यमंत्री ने किया लोकार्पण, 103 करोड़ रुपए के विकास कार्यों की दी सौगात

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ गोरखपुर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अब गरीबों और आर्थिक दृष्टि से निम्न और मध्यम आय वर्ग के लोगों के कार्यक्रम भी फाइव स्टार सुविधाओं से युक्त होंगे और कल्याण मंडपम इसका माध्यम बनेगा। गोरखपुर के पहले कल्याण मंडपम का आज उद्घाटन हो रहा है और अगले कुछ माह में सात नए कल्याण मंडपम भी बनकर तैयार हो जाएंगे। इनमें से पांच कल्याण मंडपम के लिए धनराशि उन्होंने अपनी विधायक निधि से दी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि नगर निगम के कर्मचारियों और सफाई कर्मचारियों के लिए कल्याण मंडपम की बुकिंग मात्र 11 हजार रुपये में करने के निर्देश नगर निगम को दिए गए हैं।

सीएम योगी गुरुवार को करीब 103 करोड़ रुपये के विकास कार्यों की सौगात देने के लिए खोराबार टाउनशिप में नगर निगम की तरफ से आयोजित लोकार्पण-शिलान्यास समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने नगर के नवसृजित वार्ड खोराबार में 4.71 करोड़ रुपये की लागत से बने शहर के पहले कल्याण मंडपम का लोकार्पण करने के साथ ही 4.55 करोड़ रुपये की लागत से बने गैस आधारित पशु शवदाह गृह, महादेवपुरम से रामगढ़ताल में फेज 2 (पम्पिंग स्टेशन) तक 2.46 करोड़ रुपये से नाला निर्माण कार्य, एकला बांध से पशु शवदाह गृह (कारकस प्लांट) तक 0.68 करोड़ रुपये से सड़क निर्माण, महेवा स्थित कान्हा गोशाला में 0.97 करोड़ रुपये से शेड निर्माण का लोकार्पण किया। कुल 26.31 करोड़ रुपये के कार्यों का लोकार्पण करने के अलावा उन्होंने 76.40 करोड़ रुपये के विकास कार्यों का शिलान्यास भी किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने कहा कि कल्याण मंडपम का उद्घाटन नागरिक सुविधाओं के क्षेत्र में एक नई शुरुआत है। किसी भी मांगलिक या सार्वजनिक कार्यक्रम के लिए यह बहुत अच्छा है। उन्होंने कहा कि जिनके पास साधन हैं वे होटलों या बड़े लॉन में कार्यक्रम कर सकते हैं लेकिन जिनके पास पैसा नहीं है, जो गरीब हैं वे कहां जाएंगे। इसे लेकर नगर निगम और विकास प्राधिकरण से कहा था कि कल्याण मंडपम के रूप में ऐसा स्थान हो जहां गरीब, निम्न और मध्यम आय वर्ग के लोगों के वैवाहिक आयोजन, मांगलिक कार्यक्रम सुविधापूर्ण तरीके से हो सकें। इस कल्याण मंडपम में सभागार, डॉरमेट्री, 6 रूम, किचन और लॉन भी है। सीएम योगी ने कहा कि कल्याण मंडपम गरीबों, निम्न और मध्यम आय वर्ग के लोगों के लिए स्थायी संपदा हैं जहां फाइव स्टार सुविधाएं हैं। सीएम योगी ने कहा कि आज गोरखपुर नगर निगम और नगर निकायों को विकास की अन्य अनेक योजनाओं की सौगात मिल रही है। इसमें एक महत्वपूर्ण परियोजना पशु शवदाह गृह की है। इससे जानवरों के शव के अंतिम संस्कार की समस्या का समाधान होगा और लोगों को बदबू से मुक्ति मिलेगी। उन्होंने कहा कि इसी क्रम में गोरखपुर की पहचान को सुरक्षित रखते हुए घंटाघर का सौंदर्यीकरण कराया जा रहा है। घंटाघर के बगल में स्थित शहीद बंधु सिंह पार्क में मल्टीलेवल पार्किंग का निर्माण युद्धस्तर पर हो रहा है। पार्कों के विकास, सड़कों के चौड़ीकरण व जलनिकासी की परियोजनाओं पर कार्य हो रहे हैं।

उन्होंने कहा कि गोड़धोइया नाला परियोजना के पूर्ण होते ही शहर को जलभराव की समस्या से मुक्ति मिल जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि देसी विधि से रापती नदी में गिरने वाले लिक्विड वेस्ट, दूषित जल का शोधन किया जा रहा है जिसका इस्तेमाल खेती में होगा। मुख्यमंत्री ने लोगों से विकास यात्रा में सहभागी बनने और स्वच्छता के प्रति आग्रही बनने की अपील की। इसके लिए आज विमोचित स्वच्छता कॉमिक का उल्लेख करते हुए सीएम योगी ने कहा कि 40 वर्ष में गोरखपुर समेत पूर्वी उत्तर प्रदेश ने गंदगी के कारण होने वाली मौतों को देखा है।

जगद्गुरु शंकराचार्य के साथ सीएम योगी ने किया विशिष्ट हवन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ गोरखपुर

108 सुंदरकांड पाठ और आञ्जनेय हवन से की गई लोक मंगल व राष्ट्र कल्याण की प्रार्थना

श्रृंगेरी शारदा पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री श्री भारती तीर्थ महासन्निधानम के मंगलमय आशीर्वाद और दिव्य आदेश से विजय यात्रा लेकर मंगलवार (11 फरवरी) को गोरखपुर पधारे जगद्गुरु शंकराचार्य विधुशेखर भारती सन्निधानम गोरक्षपीठ में प्रवास करने के बाद गुरुवार को विदा हो गए। विदा होने से पूर्व शंकराचार्य जी ने गोरक्षपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ गोरखनाथ मंदिर की यज्ञशाला में श्रृंगेरी पीठ की परंपरा के अनुसार विशिष्ट हवन किया। दोनों आध्यत्मिक विभूतियों के सानिध्य में 108 सुंदरकांड पाठ और आञ्जनेय हवन से लोक मंगल व राष्ट्र कल्याण की प्रार्थना की गई

जगद्गुरु शंकराचार्य श्री श्री भारती तीर्थ महासन्निधानम की विजय यात्रा का आगमन मंगलवार देर शाम गोरक्षपीठ में हुआ था। बुधवार शाम गोरक्षपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उनका अभिनंदन किया था और इसके बाद शंकराचार्य जी के वेदपाठी छात्रों और अध्यापकों को शंकर वचन (आशीर्वचन) दिया था। बुधवार रात उन्होंने अपने प्रवास क्षेत्र में श्रृंगेरी पीठ की परंपरा के अनुसार विशिष्ट पूजन किया जिसमें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी सम्मिलित हुए। गुरुवार सुबह शंकराचार्य जी, मुख्यमंत्री की अगवानी में गोरखनाथ मंदिर की यज्ञशाला पहुंचे और आञ्जनेय हवन में सम्मिलित हुए। यहां हवन के बाद जगद्गुरु शंकराचार्य और गोरक्षपीठाधीश्वर ने भगवान आदि शंकर व गुरु गोरखनाथ से लोक मंगल और राष्ट्र कल्याण की प्रार्थना की। शंकराचार्य जी ने मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ को श्रृंगेरी पीठ से लाए दो विशिष्ट स्मृति चिन्ह भेंट किए। हवन अनुष्ठान के उपरांत सीएम योगी ने शंकराचार्य जी को गोरखनाथ मंदिर परिसर का भ्रमण कराया। गोरक्षपीठाधीश्वर ने दोपहर में उन्हें गोरक्षपीठ की परंपरा के अनुसार भावपूर्ण विदाई दी।

गोरखनाथ मंदिर प्रवास के दौरान गुरुवार सुबह सीएम योगी की दिनचर्या परंपरागत रही। उन्होंने प्रात:काल गोरखनाथ मंदिर में गुरु गोरखनाथ का दर्शन-पूजन किया और अपने गुरु ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ की समाधि स्थल पर जाकर मत्था टेका। सीएम योगी जब भी गोरखनाथ मंदिर में होते हैं तो गोसेवा उनकी दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा रहती है। गुरुवार सुबह वह मंदिर परिसर का भ्रमण करते हुए मंदिर की गोशाला में पहुंचे और वहां कुछ समय व्यतीत किया। गोवंश को दुलारकर उन्होंने अपने हाथों से उन्हें गुड़ खिलाया। इस दौरान कुछ गोवंश के साथ सीएम योगी स्नेहिल भाव से कुछ देर खेलते भी रहे। मंदिर परिसर का भ्रमण करते हुए मुख्यमंत्री की नजर जैसे ही श्रद्धालुओं के साथ आए उनके बच्चों पर पड़ी, उन्होंने मुस्कुराते हुए बच्चों को अपने पास बुला लिया, सबके माथे पर हाथ फेरकर प्यार-दुलार और आशीर्वाद देने लगे।

एक सप्ताह के भीतर 722 नए करदाताओं ने जमा किए 4.14 करोड़ रुपए

लखनऊ। राज्य कर विभाग द्वारा करदाताओं के व्यापक हित में संचालित अर्थदंड एवं ब्याज माफी योजना के अंतर्गत 13 फरवरी, 2025 तक कुल 34402 करदाताओं ने इसका लाभ लिया है। 13 फरवरी तक 554.14 करोड़ रुपए की धनराशि सरकारी खजाने में जमा कराया जा चुका है। यह जानकारी प्रमुख सचिव राज्य कर एम. देवराज ने दी। उन्होंने बताया कि अर्थदंड और ब्याज माफी योजना के तहत वर्ष 2017-18, 2018-19 एवं 2019-20 के लिए माल एवं सेवाकर अधिनियम की धारा-73 के समस्त प्रकरणों में करदाता द्वारा मात्र कर जमा कर दिये जाने पर उनके अर्थदंड एवं ब्याज में 100 फीसदी माफी दी जायेगी। उन्होंने बताया कि प्रदेश में उक्त स्कीम के तहत कुल 1.92 लाख करदाता लाभ लेने हेतु पात्र हैं। प्रमुख सचिव ने बताया कि पिछले सप्ताह कुल 33680 करदाताओं ने इस योजना का लाभ लेते हुए लगभग 550 करोड़ सरकारी खजाने में राजस्व जमा कराया था। इस सप्ताह लगभग 722 करदाताओं ने 4.14 करोड़ रुपये राजस्व जमा किया। उन्होंने अन्य पात्र करदाताओं से अपील की है कि इस योजना का लाभ तत्काल लें।

संस्कृति का महाकुंभ: 20 मंचों और 4 पांडालों में दिख रहा है संस्कृति और कला का अदभुत संगम

विद्याधर व्यास की गायकी, बनाश्री राव का कथक और नवदीप वडाली के सुरों की सजेगी महफिल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

महाकुंभ में आयोजित 'संस्कृति का महाकुंभ' अपनी सांस्कृतिक विविधता और कला के सबरंग से श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। गत 13 जनवरी से संस्कृति विभाग की ओर से सजाए गए 20 मंचों और 4 पाण्डालों में सुर, संस्कृति, सभ्यता एवं विविधता में एकता के रंग देखने को मिल रहे हैं। गंगा, यमुना, सरस्वती और त्रिवेणी पाण्डालों में देश के अलग-अलग राज्यों से आए कलाकार वादन, नृत्य, नाट्य जैसी कलाओं की छठा बिखेर कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर रहे हैं।

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने देते हुए बताया कि इसी कड़ी में मेला क्षेत्र के सेक्टर-1 में सजे गंगा पाण्डाल में 14 फरवरी को श्रद्धालु एवं पर्यटक नवदीप वडाली के मधुर संगीत का आनंद उठा पाएंगे, तो वहीं कुचुपुड़ी नृत्य की विभिन्न कलाओं से सभी को मोहित करने के लिए आ रही हैं बनाश्री राव और शास्त्रीय गायन के सुर-ताल से परिचित कराने के लिए आ रहे हैं विद्याधर व्यास जी। मशहूर सूफी गायक एवं कव्वाल पूरनचन्द वडाली के पौत्र नवदीप वडाली ने 19 साल की उम्र में ही इण्यिन आइडल में अपनी गायकी से लोगों को दीवाना बना दिया था। तब से लेकर अब तक मंच पर पहुंचने के बाद सुर, लय और ताल के संगम से नवदीप ने समां बाधा। पर्यटन मंत्री ने बताया कि बनाश्री राव लगभग 30 सालों से विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपने नृत्य की प्रस्तुति से सबका मन मोह रहीं हैं। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता बनाश्री राव कुचुपुड़ी डांस अकादमी में स्वयं शिक्षण का कार्य भी कर रही हैं।

यूपी में बौद्ध धर्म को ऊंचाई पर ले जाने के लिए सभी परिस्थितियां अनुकूल: जयवीर सिंह

पर्यटन मंत्री ने जापानी प्रतिनिधि मंडल का किया स्वागत व अभिनन्दन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

जापान के यामानासी प्रांत के उप राज्यपाल ओसादा के नेतृत्व में राजधानी पधारे जापानी प्रतिनिधि मंडल का हार्दिक अभिनन्दन एवं स्वागत करते हुए प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि उप्र भगवान बुद्ध की कर्म भूमि रही है। भगवान बुद्ध से जुड़े अधिकांश धर्मस्थल उप्र में ही स्थित हैं। जहां पर लाखों की संख्या में बौद्ध श्रद्धालु आते रहते हैं। राज्य सरकार इन धर्मस्थलों की महत्ता को देखते हुए पर्यटन विकास संबंधी योजनाओं पर तेजी से काम किया जा रहा है।

जयवीर सिंह गुरुवार को गोमती नगर के एक स्थानीय होटल में जापानी प्रतिनिधि मंडल का स्वागत कर रहे थे। उन्होंने जापानी प्रतिनिधि मंडल से बौद्ध पर्यटन स्थलों के विकास एवं पूंजी निवेश सहित कई बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि बौद्ध धर्म की उत्पत्ति उप्र की धरती पर हुई। भगवान बुद्ध से जुड़े श्रद्धालुओं के लिए उप्र एक प्रमुख गन्तव्य स्थल है। साथ ही पर्यटन को बढ़ावा देने का भी एक अवसर है। बौद्ध पर्यटकों के वर्ष पर्यन्त उप्र आने से रोजगार के साथ स्थानीय लोगों को भी लाभ मिल रहा है। जयवीर सिंह ने कहा कि बौद्ध धर्म से जुड़े पवित्र स्थलों को सम्मिलित करके पर्यटन विकास की कई योजनायें संचालित की जा रही हैं। 12 टूरिज्म सेक्टरों में से एक योजना बुद्धिष्ट सर्किट भी शामिल है। इसका विकास केन्द्र और राज्य सरकार की प्राथमिकताओं में है। रेल, जल, हवाई और सड़क की बेहतर कनेक्टिविटी पर तेजी से काम किया जा रहा है। उप्र में सुरक्षा की गारण्टी होने के कारण विदेश से आने वाला हर पर्यटक उप्र में स्थित अपने पसंदीदा पर्यटन स्थलों को देख सकता है।

राजधानी में बाघ के बाद तेंदुए का हमला चिंताजनक

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश की 'जुमलाजीवी' भाजपा सरकार अभी छुट्टा पशुओं की समस्या का ही समाधान ढूंढ नहीं पाई थी कि जनता के सामने अब एक और चुनौती आ गई है और वो है प्रदेश की राजधानी में बाघ के बाद 'तेंदुए' का हमला। यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में लोगों की छुट्टा और जंगली जानवरों के हमलों से लगातार मौतें हो रही है। छुट्टा जानवरों की समस्या का समाधान करने में केंद्र और प्रदेश की दोनों डबल इंजन सरकारें फेल हो चुकी हैं। उत्तर प्रदेश में पिछले विधानसभा चुनाव के समय प्रधानमंत्री जी ने भी छुट्टा जानवरों की समस्या के समाधान का वादा किया था, लेकिन उसे भी अपने दूसरे वादों की तरह पूरा नहीं किया।

यादव ने कहा कि राजधानी लखनऊ में एक शादी समारोह में तेंदुए के प्रवेश का समाचार चिंताजनक है। भाजपा सरकार में भ्रष्टाचार का एक रूप ये भी है कि जंगलों में इंसानों का अतिक्रमण बढ़ता ही जा रहा है। ऐसे में हिंसक जंगली जानवर भोजन की तलाश में जंगलों से निकलकर शहरों की तरफ़ आने को मजबूर हो रहे हैं। जिससे आम जनमानस का जीवन ख़तरे में पड़ गया है। कोई कार्रवाई होगी या सरकार ये कहकर इस घटना पर पर्दा डाल देगी कि वो तेंदुआ नहीं 'ओवरसाइज बिल्ला' था या फिर हो सकता है तेंदुए का नाम बदलकर 'बड़ा बिल्ला' रखकर मामला रफ़ा-दफ़ा कर दिया जाए।

राजधानी के ही रहमानखेड़ा में दो महीने से बाघ के कारण पूरे इलाके में दहषत है। किसान खेतों में नहीं जा पा रहे हैं। बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे है। सरकार का पूरा अमला बाघ पकड़ने में नाकाम साबित हुआ है। अखिलेश यादव ने कहा कि बुधवार को ही एटा के थाना कोतवाली देहात के समदपुरा गांव में एक सांड के हमले में चार किसान घायल हो गयें। एटा में ही एत्मादपुर में सांड से टकराने के कारण एक छात्र की मौत हो गयी। बीते सोमवार को शाहजहांपुर के बंडा में छुट्टा पशु से बचने के प्रयास में पेड़ से टकरा कर मोटर साइकिल सवार दो युवकों की जान चली गयी। उत्तर प्रदेश में छुट्टा पशुओं का कहर जारी है। इन मौतों के लिए भाजपा सरकार जिम्मेदार हैं। छुटटा जानवरों से प्रदेश भर में सैकड़ों मौतें हो चुकी है।

यादव ने कहा कि सरकार पीड़ित परिजनों को मुआवजा दे और छुट्टा जानवरों, सांडों और जंगली जानवरों से लोगों की जान और किसानों की फसल बचाने के लिए समाधान तलाशे। झूठे वादों से प्रदेश की जनता परेशान हो चुकी है। जनता 2027 के विधान सभा चुनाव में भाजपा को सत्ता से हटाकर उसकी अकर्मण्यता और झूठे वादों का जवाब देगी।

सामाजिक समरसता व कानून व्यवस्था को पूरी तरह से बर्बाद करने पर तुली है प्रदेश सरकार: अजय राय

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कुशीनगर में मस्जिद धवस्तीरकण की कार्रवाई को बताया दुर्भाग्यपूर्ण

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि प्रदेश की सामाजिक समरसता, भाईचार और कानून व्यवस्था को योगी पूरी तरीके से बर्बाद करने में लगी हुई है। अजय राय ने कहा कि अपनी नाकामी को छुपाने के लिए पूरे प्रदेश में अल्पसंख्यकों के खिलाफ खासतौर पर मुसलमानों के खिलाफ एक माहौल बनाया जा रहा है और प्रशासनिक ढांचे का दुरूपयोग कर उनके धार्मिक स्थानों को भी नुकसान पहुंचाया जा रहा है। यह काम एक सुनियोजित तरीके से पूरे प्रदेश में किया जा रहा है। राय गुरुवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में प्रेस कांफ्रेंस कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विदित हो कि जैसा पहले मध्य उप्र के जनपद बहराइच में फिर पश्चिम के संभल जनपद में और अब पूर्वांचल के कुशीनगर जनपद में मुस्लमानों के खिलाफ सत्ता का दुरूपयोग किया जा रहा है।

राय ने कि 9 फरवरी को जनपद कुशीनगर की हाटा नगर पंचायत में मदनी मस्जिद को बिना नोटिस के गिरा दिया गया। गौरतलब है कि एक दिन पूर्व 8 फरवरी को हाईकोर्ट के स्टे के मियाद समाप्त हो रही थी और 9 फरवरी को रविवार होने की वजह से कोर्ट बंद थी। मस्जिद कमेटी को कोर्ट जाने का अवसर ना मिले इसलिए उनके संवैधानिक अधिकारों का दमन करते हुए 9 फरवरी रविवार अवकाश के दिन में एक दर्जन बुल्डोजर लगाकर आनन-फानन में मस्जिद को गिरा दिया गया। राय ने कहा कि अत्याचार की पराकाष्ठा यह है कि जिस मस्जिद को गिराया गया वहां एक मदरसा भी चलता था जहां बच्चे भी पढ़ते थे। इतना ही नहीं बुल्डोजर चलवाने से पूर्व उन्हें कुर्ता शरीफ और अन्य धार्मिक पुस्तकों को निकालने का अवसर भी नहीं दिया गया। पूरे हाटा को पुलिस छावनी में तब्दील कर इस तानाशाही कार्रवाई को अंजाम दिया गया। राय ने कहा कि एक सुनियोजित योजना के तहत पूर्व में भंग हो चुकी हिंदू युवा वाहिनी के पूर्व पदाधिकारी राम बचन सिंह जिनका न उस जमीन से और न ही पूरे प्रकरण से कोई वास्ता है, उनसे शिकायत कराई जाती है और तुरंत एसडीएम के नेतृत्व में जांच के आदेश पारित कर दिया जाता है। कोर्ट जाने के मस्जिद कमेटी के विकल्पों को पूरा होने से पहले ही मस्जिद को गिरा देना सरकार की ध्रुवीकरण की राजनीति का जीता जागता सबूत है। राय ने कहा कि वहां पर मौजूद लोगों से बातचीत के दौरान पता चला कि इस दुर्भाग्यपूर्ण कार्यवाही में समाजवादी पार्टी के नेता एवं हटा नगर पालिका के अध्यक्ष रामानंद सिंह एवं वहां की ईओ मीनू सिंह ने का प्रमुख भूमिका रही। राय ने कहा कि कल मैं स्वयं घटना की वस्तुस्थिति की जानकारी लेने के लिए जनपद कुशीनगर गया था और पीड़ित पक्ष से वार्ता भी की। एक बात स्पष्ट है कि प्रशासन इस मामले में कई झूठ बोल रहा है एवं तथ्यों को छुपाने का प्रयास कर रहा है। मस्जिद कमेटी के लोगों ने बताया कि जब-जब प्रशासन ने नोटिस दिया तब-तब उसका लिखित जवाब सभी कागजात संलग्न कर दिया गया। मगर उसके बाद भी सिर्फ पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर योगी सरकार ने मस्जिद पर बुल्डोजर चलवा दिया। इस सरकार का सिर्फ एक ही उद्देश्य है धार्मिक तुष्टीकरण कर वोट की राजनीति करना।

इंडियन ओवरसीज कांग्रेस ने राज्यपाल को सौंपा ज्ञापन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा डिपोट किए गए 104 भारतियों के साथ हुए अमानवीय और अपमानजनक व्यवहार के खिलाफ इंडियन ओवरसीज कांग्रेस, उत्तर प्रदेश के चेयरमैन कैप्टन वंशीधर मिश्रा के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल द्वारा राज्यपाल आनंदीबेन पटेल को ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में अमेरिका के आव्रजन और सीमा शुल्क प्रवर्तन (आई.सी.ई.) द्वारा किए गए मानवाधिकार उल्लंघन पर गहरी चिंता व्यक्त की गई। ज्ञापन में उल्लेख किया गया कि 5 फरवरी 2025 को गुरु रामदास अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे, अमृतसर पर अमेरिका से निर्वासित 104 भारतीय नागरिकों को बेड़ियों और हथकड़ियों में जकड़कर भेजा गया। यह न केवल उनके सम्मान को ठेस पहुंचाने वाला कृत्य है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानूनों का गंभीर उल्लंघन भी है।

इस घटना से भारत की छवि को धक्का लगा है और उन नागरिकों को अपमानजनक एवं अमानवीय यातना झेलनी पड़ी। संयुक्त राष्ट्र चार्टर और अंतर्राष्ट्रीय नागरिक एवं राजनीतिक अधिकार संधि, 1967 के अनुच्छेद 7 और अनुच्छेद 10(1) के तहत सभी व्यक्तियों की गरिमा और सम्मान की रक्षा की गारंटी दी गई है, जिसे इस घटना से ठेस पहुंची है। यह भी चिंता का विषय है कि अमेरिका में स्थित भारतीय दूतावास ने इस गंभीर मुद्दे पर प्रभावी कदम नहीं उठाए, जिससे निर्वासित नागरिकों को अत्यधिक मानसिक और शारीरिक कष्ट झेलने पड़े।

मुख्य सचिव ने की कुंभ में प्रस्तावित जलवायु सम्मेलन के तैयारियों की समीक्षा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

जलवायु सम्मेलन का मुख्यमंत्री करेंगे शुभारंभ

मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने 16 फरवरी, 2025 को प्रयागराज महाकुम्भ मेला क्षेत्र में 'कुम्भ की आस्था और जलवायु परिवर्तन' विषय पर प्रस्तावित जलवायु सम्मेलन की तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि जलवायु सम्मेलन का शुभारंभ मुख्यमंत्री करेंगे। सम्मेलन के सफल आयोजन हेतु सभी आवश्यक तैयारियां समय से पूरी कर ली जायें। सम्मेलन में प्रतिभाग करने वाले महानुभावों को आवागमन में किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिये। ट्रैफिक जाम की स्थिति न उत्पन्न हो। मेला क्षेत्र के आस-पास साफ-सफाई व्यवस्था बेहतर रहे।

बैठक में बताया गया कि सम्मेलन में प्रतिभाग करने के लिये लगभग 450 धर्मगुरुओं एवं विषय विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया है। लगभग 140 स्पीकर्स और डेलीगेट्स द्वारा सम्मेलन में प्रतिभाग करने की सूचना प्राप्त हुई है। प्रतिभागियों की सुविधा के लिये एक हेल्प डेस्क कार्यक्रम स्थल पर और एक ट्रेवेल डेस्क प्रयागराज एयरपोर्ट और लखनऊ एयरपोर्ट पर स्थापित की गई है। बैठक में प्रमुख सचिव वन अनिल कुमार सहित सम्बन्धित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी तथा वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के माध्यम से प्रयागराज प्रशासन तथा मेला प्राधिकरण प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

कानपुर के पूर्व भाजपा नेता समर्थकों सहित कांग्रेस में शामिल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कानपुर के भारतीय जनता युवा मोर्चा के पूर्व मंडल अध्यक्ष और भाजपा जिला मंत्री दक्षिण सहित तमाम पदों पर रहे पूर्व वरिष्ठ भाजपा नेता आनंद शुक्ला उर्फ राजा भैया ने अपने तमाम साथियों के साथ कानपुर के पूर्व जिला अध्यक्ष श्याम देव सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर प्रदेश अध्यक्ष अजय राय एवं जॉइनिंग इंचार्ज नितिन शर्मा ने उक्त नेताओं को सदस्यता ग्रहण कराई। इस मौके पर आनंद शुक्ला ने कांग्रेस की नीतियों और कांग्रेस के सिद्धांतों पर अपनी निष्ठा व्यक्त करते हुए राहुल गांधी एवं मल्लिकार्जुन खड़गे के हाथों को मजबूत करते हुए कांग्रेस के कार्यक्रमों में अपनी बढ़चढ़ कर हिस्सेदारी लेते हुए अपना योगदान देने की बात कही। आनंद शुक्ला के साथ सदस्यता लेने वालों में प्रमुख रूप से सूर्य प्रसाद दीक्षित, विनीत कुमार, ऋतु शर्मा, उमाकांत बाजपेई, अर्जुन शुक्ला, श्रीमती ज्योति दीक्षित, अजीत शुक्ला पिंटू आदि शामिल रहे।

पायनियर वर्गीकृत

सूचना

मैंने अपना नाम सीता बाई से बदलकर सीता देवी कर लिया है अब मुझे इसी नाम से जाना जाएगा। फ्लैट न0 1302-A दिलबाग रोज गार्डन फजलगंज, आर के नगर कानपुर 208012

सूचना

मैंने अपना नाम छत्ती से बदलकर छत्ती देवी कर लिया है अब मुझे इसी नाम से जाना जाएगा। फ्लैट न0 1302-A,दिलबाग रोज गार्डन, फजलगंज आर के नगर कानपुर 208012

सूचना

सार्वजनिक सूचना

मैं, **सैयद सरफराज अहमद** पुत्र सैयद औसाफ अहमद, निवासी 211, एल्डेको फन मॉल के पास, गोमती नगर, लखनऊ। सैयद सरफराज अहमद के घर की मूल (बिक्री विलेख), दिनांक 05.05.2022, क्रमांक 8089 खो गई है। संपत्ति का पता फ्लैट सं0 18-05-3डी, 5वीं मंजिल टी० नं० 18, मेट्रो सिटी, लखनऊ है। मैं आगे बताता हूं कि मैं एसबीआई आरडीएसओ शाखा कोड 13427 से ऋण के लिए उक्त संपत्ति पर साम्यिक बंधक बनाना चाहता हूं। खोए हुए (बिक्री विलेख) के संबंध में एफआईआर संख्या 20250000104126 दिनांक 11.02.2025 के तहत पुलिस में एफआईआर दर्ज कराई गई है। अगर किसी को कोई आपत्ति है, तो कृपया एसबीआई की उपरोक्त शाखा **श्रीमती सोनिका गगवार**, मो: 8006141243 पर संपर्क करें।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल हिमांशु कुमार पंत पुत्र भगवती प्रसाद पंत निवासी 2/301, न्यू मल्हर सहारा स्टेट, जानकीपुरम योजना, लखनऊ की सम्पत्ति फ्लैट सं. 2/301, न्यू मल्हर सहारा स्टेट, जानकीपुरम योजना, लखनऊ से सम्बधित दस्तावेज मूल विक्रय विलेख, जो क्रमांक संख्या 698, दिनाँक 28.02.2003 पर उपनिबंधक लखनऊ में पंजीकृत है। जो कि दिनांक 10/04/2023 को मेरे मुव्वकिल से गायब/गिर गया है। यदि किसी व्यक्ति या किसी वित्तीय संस्थान या बैंक को आपत्ति/दावा हो तो कृपया इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से **15 दिन** के भीतर सूचित करें और उपरोक्त समयावधि समाप्त होने के बाद किसी भी प्रकार के दावे पर विचार नहीं किया जाएगा। **बी. एन. त्रिपाठी एडवोकेट,** निवास: सी-15, नेहरू विहार, कल्यानपुर, लखनऊ। मोबाइल: 9336127853

पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य करें कृषि विश्वविद्यालय: राज्यपाल

राज्यपाल की अध्यक्षता में 'भारत में कृषि पर्यटन के माध्यम से कृषि शिक्षा एवं ग्रामीण विकास' विषय पर कृषि विश्वविद्यालयों का 48वां कुलपति सम्मेलन संपन्न हुआ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश की राज्यपाल एवं राज्य विश्वविद्यालयों की कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल की अध्यक्षता में गुरुवार को 'भारत में कृषि पर्यटन के माध्यम से कृषि शिक्षा एवं ग्रामीण विकास' विषय पर कृषि विश्वविद्यालयों का 48वां कुलपति सम्मेलन संपन्न हुआ। कार्यक्रम में आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय अयोध्या का बांदा कृषि विश्वविद्यालय, सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि विश्वविद्यालय सहित सात कृषि विश्वविद्यालयों के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ। राज्यपाल की मौजूदगी में इस मौके पर विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों के बीच कुल 19 एमओयू सम्पन्न हुए।

इस अवसर पर अपने संबोधन में राज्यपाल ने कहा कि अयोध्या एक जनपद ही नहीं बल्कि करोड़ों भारतीयों की श्रद्धा का स्थल है। शहरों में रहने वाले ऐसे पर्यटक जो ग्रामीण जीवन के बारे में नहीं जानते वे गांव की परंपराओं संस्कृति और रीति-रिवाज में भाग लेकर ग्रामीण जीवन के बारे में जान सकते हैं। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने वाला प्रथम राज्य है, यहाँ सतारा, पुणे, नागपुर और नासिक में कई सफल कृषि पर्यटन केंद्र विकसित किए गए हैं। उत्तर प्रदेश में कृषि का एक मजबूत आधार है और यहाँ की समृद्ध, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त है। विश्वविद्यालय शोध, प्रशिक्षण, जागरूकता, नीति निर्माण और तकनीकी सहायता प्रदान करके किसानों को सशक्त बना सकते हैं। कृषि विश्वविद्यालय कृषि पर्यटन से संबंधित नए शोध कर सकते हैं, जिससे किसान इस क्षेत्र में अपनी गतिविधियों को वैज्ञानिक तरीके से संचालित कर सकें। अनुसंधान के माध्यम से यह पता लगाया जा सकता है कि कौन-कौन से मॉडल अधिक सफल हो सकते हैं और पर्यटकों को अधिक आकर्षित कर सकते हैं। जहां छात्र किसान और आम जनता ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया और वेबसाइटों के माध्यम से किसानों को उनके कृषि पर्यटन व्यवसाय के प्रचार प्रसार में मदद कर सकते हैं। भारत में जीडीपी को बढ़ाने में सबसे बड़ा योगदान माताओं और किसानों का है। उन्होंने आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय को पहली बार में ही नैक में 'ए प्लस प्लस' प्राप्त करने पर शुभकामनाएं दी। राज्यपाल ने कहा कि सभी कृषि विश्वविद्यालय भारत में कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने हेतु कार्य करें। उन्होंने कहा कि आचार्य नरेंद्र देव कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पूर्वी उत्तर प्रदेश में कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने में रचनात्मक और सक्रिय भूमिका निभा रहा है तथा सरकार की परियोजना की मदद से कृषि पर्यटन केंद्र स्थापित कर रहा है। विश्वविद्यालय ग्रामीण युवाओं को कृषि आधारित पर्यटन में कौशल प्रदान करने और आय के अवसरों को बढ़ाने के लिए कृषि पर्यटन पर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी शुरू करने जा रहा है जो की अत्यंत सराहनीय है।

मनरेगा के तहत खेल मैदानों के निर्माण से यूपी की निखर रहीं खेल प्रतिभाएं

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

- गांवों में स्टेडियम व ओपेन जिम बनाकर खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहन दे रही प्रदेश सरकार

उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के नेतृत्व व निर्देशन में प्रदेश में खेल प्रतिभाओं को निखारने, दक्ष,और सक्षम बनाने के लिए ग्रामीण अंचल में खेलकूद का आधारभूत ढ़ाचा मजबूत करने के लिए मनरेगा योजनान्तर्गत ग्रामीण अंचल में खेल मैदान बनाये जा रहे हैं। गांवों में स्टेडियम व ओपेन जिम बनाकर खेल प्रतिभाओं को सरकार प्रोत्साहन दे रही है। युवा पीढ़ी गांवो के खेल मैदानों से निखर और संवर कर अपने गांव घर का नाम रोशन करेंगी और गांवों की खेल प्रतिभाएं, दुनिया में भारत का परचम लहरायेगीं। मनरेगा योजनान्तर्गत स्टेडियम, ओपेन जिम, खेल मैदान और पार्क गांवों में बनाये जा रहे हैं और इनका उपयोग भी किया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश में खेल को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण इलाकों में खेल मैदान बनाए जा रहे हैं। इससे गांवों में नई प्रतिभाएं तो निखर ही रही है साथ ही मनरेगा के तहत इन मैदान का निर्माण होने की वजह से श्रमिकों को निरंतर रोजगार भी मिल रहा है। इस पहल का उद्देश्य बेहतर स्वास्थ्य और समग्र सामुदायिक विकास के लिए स्कूली छात्रों और गांव के अन्य सदस्यों के बीच खेलों को प्रोत्साहित करना है। खेल मैदानों में रनिंग ट्रैक बनने से ग्रामीण अँचलों में रहने वाला युवा आर्मी, पैरा मिलिट्री फोर्स, पुलिस, सीआरपीएफ इत्यादि की तैयारी अपने गांव में ही रहकर कर रहे हैं। ग्राम्य विकास विभाग की इस योजना के चलते खेल मैदान बनने से गांव के युवाओं को मैदान में ही दौड़ लगाने के साथ शारीरिक अभ्यास करने में भी मदद मिल रही है। ग्राम्य विकास विभाग द्वारा ग्रामीण इलाकों में बनाये जा रहे खेल मैदान गांव के पिकनिक स्पॉट साबित हो रहे हैं। गांव में आस-पास कोई घूमने की बेहतर जगह न होने के चलते इन मैदानों में ही छोटे-छोटे बच्चे पिकनिक मनाते हैं। यहां पर गाँव के युवाओं के साथ बुजुर्ग भी मॉर्निंग वॉक से साथ शाम को अपना समय बिताते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में खेल मैदान विकसित होने से युवाओं में खेल के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। खेलकूद से युवाओं की शारीरिक दक्षता में भी सुधार हो रहा है। खेल मैदान बनने से गांव का भविष्य चमक रहा है, ऐसे युवा जो इस क्षेत्र में प्रतिभाशाली हैं और गांवों में सुविधाओं के अभाव में उनकी प्रतिभा निखर नहीं पा रही थी, ऐसे में खेल मैदान विकसित होने से युवाओं के अंदर की प्रतिभा निखर रही है और वह आगे बढ़कर विभिन्न खेलों में बेहतर प्रदर्शन कर अपने गांव, जनपद, प्रदेश और देश का नाम रोशन करेंगे।

सील बिल्डिंग में निर्माण कर रहे बिल्डर पर होगी एफआईआर

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

एलडीए में जनसुनवाई करते हुए मंडलायुक्त से वजीरगंज के अस्तबल चारबाग में भूखंड पर बने अवैध अपार्टमेंटसील होने के बाद भी कार्य होने की शिकायत की गयी। मंडलायुक्त द्वारा बिल्डर के खिलाफ एफआईआर दर्ज करते हुए सीलिंग के आदेश दिए गए। यही नहीं सीतापुर रोड योजना के सेक्टर.सी में भवन संख्या.डी एस0.516 पर सलीम नाम के व्यक्ति ने अवैध कब्जे पर नाराज मंडलायुक्त द्वारा संबंधित अधिकारियों को एक सप्ताह के अंदर प्रार्थिनी को भवन का कब्जा दिलाने के निर्देश दिये गए। जनसुनवाई में कुल 30 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुयेए जिनमें से 8 प्रकरणों का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया।

गुरुवार को एलडीए की अध्यक्ष व मण्डलायुक्त डॉ रोशन जैकब ने प्राधिकरण भवन स्थित अपने कार्यालय कक्ष में जन सामान्य की समस्याओं की सुनवाई की। जनसुनवाई में पहुंचे अमीनाबाद निवासी अदनान अली ने प्रार्थना पत्र दिया कि वजीरगंज के अस्तबल चारबाग में भूखण्ड संख्या.162/202 पर बिल्डर द्वारा अवैध तरीके से पांच मंजिला अपार्टमेंट का निर्माण कराया जा रहा है। उक्त प्रकरण में विहित प्राधिकारी न्यायालय द्वारा बिल्डर के खिलाफ वाद योजित करते हुए बिल्डिंग को सील कराया गया था। लेकिन, बिल्डर ने सील तोड़कर स्थल पर पुन: निर्माण कार्य शुरू करा दिया है। इस पर मण्डलायुक्त ने सम्बंधित अधिकारियों को निर्माण कार्य रूकवाने के साथ ही बिल्डर के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने के निर्देश दिये। इसी तरह हजरतगंज निवासी परमिंदर कौर ने प्रार्थना पत्र दिया कि मान्या इन्फ्रा बिल्डवेल प्रालि द्वारा मोहनलालगंज के ग्राम.मऊ में बीसीसी हाईट्स नाम से बहुमंजिला बिल्डिंग का निर्माण कराया गया है, जिसमें उन्होंने फ्लैट में निवेश किया था। बाद में पता चला कि प्रोजेक्ट लखनऊ विकास क्षेत्र में होने के बावजूद बिल्डर ने प्राधिकरण से मानचित्र स्वीकृत नहीं कराया है और वर्तमान में बिल्डर द्वारा फ्लैटों की रजिस्ट्री भी की जा रही है। इस पर मण्डलायुक्त ने मामले की रिपोर्ट तलब करते हुए बिल्डर के खिलाफ एफ आईआर दर्ज कराने के निर्देश दिये।

इसके अलावा अलीगंज निवासी राजेश श्रीवास्तव ने प्रार्थना पत्र दिया कि उन्हें बसंतकुंज योजना में लॉटरी के माध्यम से प्रधानमंत्री आवास संख्या-46/33 आवंटित हुआ है, जोकि तृतीय तल पर स्थित है। प्रार्थी ने बताया कि उनकी 15 वर्षीय बेटी शारीरिक व मानसिक रूप से विकलांग है, जिसके चलते तृतीय तल पर आने-जाने से समस्या होगी। इस पर मण्डलायुक्त ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि अभी तक भवन की रजिस्ट्री नहीं हुयी है। लिहाजा तल परिवर्तन करते हुए प्रार्थी को ग्राउंड तल पर भवन आवंटित किया जाए। जनसुनवाई में पहुंची गुड़िया देवी ने बताया कि सीतापुर रोड योजना के सेक्टर.सी में भवन संख्या.डी एस0.516 उनके पति के नाम पर आवंटित है। लेकिन, सलीम नाम के व्यक्ति ने भवन में अवैध रूप से कब्जा कर रखा है। इस पर उपाध्यक्ष प्रथमेश कुमार ने सम्बंधित अधिकारियों को एक सप्ताह के अंदर प्रार्थिनी को भवन का कब्जा दिलाने के निर्देश दिये।

प्राइवेट कंपनी की टाउनशिप के लिए जमीन अधिग्रहण में क्या है सार्वजनिक हित

- मस्तेमऊ व बक्कास गांवों की जमीन अधिग्रहण के लिए सरकार की अधिसूचना पर हाईकोर्ट का सवाल

विधि संवाददाता। लखनऊ

एक प्राइवेट कंपनी की टाउनशिप के लिए जमीन अधिग्रहण की नोटिस जारी करने पर हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने राज्य सरकार व एलडीए से सवाल जवाब किया है। पीठ ने पूछा है कि इसमें सार्वजनिक हित क्या है। यह भी पूछा है कि क्या टाउनशिप में आम लोगों के लिए भी फ्लैट अथवा मकान आवंटित किए जाने हैं अथवा नहीं। मामले की अगली सुनवाई चार मार्च को होगी।

जस्टिस राजन राय एवं जस्टिस ओम प्रकाश शुक्ल की पीठ ने यह आदेश श्रीधर अवस्थी व एक अन्य की ओर से दाखिल याचिका पर दिया है। याचिका में 15 मार्च 2024 को जारी अधिसूचना को चुनौती दी गई है। याचिका में कहा गया है कि भूमि अधिग्रहण संबंधित कानून के तहत प्राइवेट कंपनी की प्रोजेक्ट के लिए सरकार द्वारा जमीन का अधिग्रहण नहीं किया जा सकता है। जबकि सरकार ने अमरावती रेजिडेंसी प्राइवेट लिमिटेड की इंटीग्रेटेड टाउनशिप के लिए अधिग्रहण की अधिसूचना जारी किया है। पीठ ने मामले की सुनवाई करते हुए यह भी पूछा है कि उक्त टाउनशिप के फ्लैटों अथवा मकान के आवंटन में किसी अन्य सरकारी एजेंसी का क्या नियंत्रण रहेगा। यह भी बताने को कहा है कि अमरावती की उक्त प्रस्तावित इंटीग्रेटेड टाइम टाउनशिप क्या सरकार की किसी योजना के तहत है। जिसके अंतर्गत आम लोगों को फ्लैट अथवा आवास आदि दिए जाने हैं। पीठ ने कहा है कि अगली सुनवाई पर हम अमरावती रेजिडेंसी को भी नोटिस भेजने पर विचार करेंगे।

हाईकोर्ट ने रॉयल ग्रीन अपार्टमेंट के ध्वस्तीकरण पर लगाई रोक

विधि संवाददाता। लखनऊ

राजधानी के महानगर इलाके में रॉयल ग्रीन अपार्टमेंट के ध्वस्तीकरण पर हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने अंतरिम रोक लगा दी है। पीठ ने अपार्टमेंट के फ्लैट मालिकों को यह छूट दी है कि वो कंपाउंडिंग के लिए एलडीए के समक्ष प्रार्थना पत्र दाखिल कर सकते हैं। पीठ ने यह टिप्पणी भी की है कि वर्ष 2006 में हुए ध्वस्तीकरण के आदेश को 19 वर्ष तक लागू नहीं करने वाले अधिकारियों कर्मचारियों की जिम्मेदारी भी तय की जानी चाहिए।

जस्टिस राजन राय एवं जस्टिस ओम प्रकाश शुक्ल की पीठ ने यह आदेश रॉयल ग्रीन अपार्टमेंट के निवासियों स्वर्ण राकेश मढोक व चार अन्य की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया है। याचिकाकर्ताओं की ओर से कहा गया कि उन्होंने मार्च 2006 से जुलाई 2006 के दौरान इस अपार्टमेंट में फ्लैटों का बैनामा लिया था।

जबकि ध्वस्तीकरण का आदेश 18 अगस्त 2006 को बिल्डर के विरुद्ध पारित किया गया। लेकिन याचिकाकर्ताओं को कभी भी कोई नोटिस नहीं दी गई। कहा गया कि अब 19 वर्ष बाद उक्त ध्वस्तीकरण के आदेश का अनुपालन किया जा रहा है। यदि अपार्टमेंट में कोई अनियमितता है, तो वह स्वयं इसके पीड़ित हैं। लिहाजा अपार्टमेंट को ध्वस्त करके उन्हें और पीड़ा नहीं पहुंचानी चाहिए। सुनवाई के दौरान एलडीए की ओर से कहा गया कि याचिकाकर्ता तथा अन्य फ्लैटों के मालिक कंपाउंडिंग के लिए आवेदन दे सकते हैं। ताकि मामले को अंतिम तौर पर निपटाया जा सके।

परिषदीय विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को प्रशिक्षित कर दिव्यांग बच्चों का भविष्य संवारेगी योगी सरकार

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश सरकार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में समावेशी शिक्षा को सशक्त बनाने और दिव्यांग बच्चों शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए बड़ा कदम उठाया है। योगी सरकार अब प्रदेशभर के 1.33 लाख परिषदीय विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को नोडल टीचर्स के रूप में प्रशिक्षित करा रही है। इनमें से पहले चरण के प्रशिक्षण कार्यक्रम में 66000 से अधिक प्रधानाध्यापकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है और शेष को प्रशिक्षित किया जा रहा है। नोडल टीचर के रूप में अब सभी प्रधानाध्यापक, परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत दिव्यांग बच्चों की आवश्यकताओं को समझकर उन्हें उचित शैक्षिक वातावरण और सुविधाएं उपलब्ध कराएंगे। प्रधानाध्यापकों की इस नई भूमिका से प्रदेश में शिक्षा का स्तर और अधिक मजबूत होगा, जिससे दिव्यांग बच्चों को समान अवसर मिलने के साथ-साथ उनका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। इससे उत्तर प्रदेश समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में देशभर में एक नई मिसाल कायम करने की ओर अग्रसर होगा। बता दें कि प्रदेश में लगभग 3 लाख विशेष आवश्यकता वाले बच्चे परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत हैं, जिनके उज्ज्वल भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए ब्लॉक संसाधन केंद्रों पर 10 दिवसीय (05-05 दिवसीय दो बैच) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में प्रधानाध्यापकों को दिव्यांग बच्चों की देखभाल, उनकी जरूरतों को समझने, शिक्षण तकनीकों, सरकारी योजनाओं की जानकारी और अभिभावकों से संवाद जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रशिक्षित किया जा रहा है। प्रदेश के बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह ने कहा कि योगी सरकार प्रदेश के हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए प्रतिबद्ध है, चाहे वह किसी भी परिस्थिति में हो।

लोहिया संस्थान खरीदेगा गामा नाईफ मशीन, मिली मंजूरी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

आने वाले दिनों में डॉ. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान गामा नाईफ मशीन खरीदेगा। इसको लेकर गुरुवार को संस्थान में सम्पन्न हुई उच्च स्तरीय क्रय समिति की बैठक में निर्णय लिया गया। मशीन के आने से बिना किसी चीरे के मस्तिष्क की कई प्रकार की बिमारियों का इलाज हो सकेगा। इस मशीन से 3 सेमी से छोटे ट्यूमर, खून की नसों की बीमारी, कई प्रकार के मस्तिष्क कैन्सर, पार्किंसन, टेमर इत्यादि कई बिमारियों का इलाज बिना चीरे के संभव हो सकेगा।

वित्तीय वर्ष 2024-25 में उत्तर प्रदेश शासन के चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा संस्थान को पूंजीगत मद में 250 करोड़ रूपये चिकित्सकीय उपकरण हेतु प्राप्त हुये थे। जिसके क्रय की प्रक्रिया पूर्ण करते हुये आज उच्च स्तरीय क्रय समिति की बैठक चिकित्सा शिक्षा विभाग के सभा कक्ष में सम्पन्न हुयी। उच्च स्तरीय क्रय समिति द्वारा बैठक में 113 करोड़ के उपकरणों को क्रय किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया गया है। कुल अनुमोदित 30 उपकरणों से चिकित्सा के क्षेत्र में डा. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान लखनऊ की कार्य कुशलता व चिकित्सीय गुणवत्ता में विश्वस्तरीय वृद्धि होगी।

उक्त अनुमोदित 30 उपकरणों में मुख्य रूप से न्यूरोसाइंस सेंटर में गामा नाईफ मशीन शामिल है। यहा यह उल्लेखनीय है कि गामा नाईफ मशीन किसी राज्य स्तरीय चिकित्सा संस्थान में उपलब्ध नही है। सम्पूर्ण उत्तर भारत में डा. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान लखनऊ चौथा संस्थान होगा। इसके अतिरिक्त संस्थान को रोबोटिक सर्जरी की भी सौगात प्राप्त होने जा रही है। शासन के इस प्रयास को चिकित्सा के क्षेत्र में एक परिवर्तन के रूप में देखा जा रहा है।

पद्मश्री सम्मान मिलने पर शिक्षक संघ ने कुलपति को किया सम्मानित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारत सरकार की तरफ से किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय की कुलपति को पद्मश्री सम्मान दिये जाने के उपलक्ष्य में गुरुवार को विवि शिक्षक संघ की तरफ से आयोजित एक समारोह में सम्मानित किया गया। समारोह में सभी शिक्षकों ने बढ़-चढ़ कर उत्साहपूर्वक भाग लिया।

सम्मान समारोह में कुलपति सोनिया नित्यानंद के एम.बी.बी.एस. व एम.डी के दौरान उनके शिक्षक रहे प्रो एमके मित्रा, प्रो सीजी अग्रवाल एवं प्रो अशोक चन्द्रा ने उनके साथ यादें साझा कीं। डा केके सिंह ने प्रो सोनिया नित्यानन्द को पद्म श्री सम्मानित होने पर बधाई दी और बताया कि हमारे शिक्षकों को प्रो नित्यानंद से प्रोरणा लेनी चाहिए। एक व्यक्ति द्वारा अपने परिश्रम एवं लगन से इस उचाई तक पहुचा जा सकता है और इतने उत्कृष्ट सम्मान को प्राप्त किया जा सकता है।

कुलपति सोनिया नित्यानंद ने अपने गुरुओं व समकक्ष चिकित्सको को याद किया, जिन्होनें उनके इस कार्यकाल में उनका साथ दिया और प्रेरित किया। उन्होनें अपने पीएचडी गाइड, माता, पिता, भाई एवं पति को धन्यवाद दिया और कहा कि उनके साथ के बिना यहां तक पहुंचना सम्भव नहीं था। सभा को पद्म श्री प्रो कुरील व डा. बीसी राय डा प्रदीप टण्डन ने भी संबोधित किया।

प्रो. संतोष कुमार ने स्वागत भाषण व डा. भाष्कर अग्रवान ने सभा को धन्यवाद किया। सम्मान समारोह में केजीएमयू के शिक्षक एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

वर्ष 2027 के चुनाव को लेकर बूथ स्तर तक के कार्यकर्ताओं की नियुक्ति करें

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

जदयू प्रदेश कार्यालय लखनऊ में प्रदेश अध्यक्ष अनुप सिंह पटेल एवं जदयू के प्रदेश प्रभारी व बिहार के कैबिनेट मंत्री श्रवण कुमार ने प्रदेश भर के सभी मंडलों के मंडल संयोजक और उनके द्वारा मंडलों में नवनियुक्त जिला पदाधिकारियों की गहन समीक्षा की गयी। समीक्षा बैठक में कैबिनेट मंत्री एवं उत्तर प्रदेश प्रभारी ने पार्टी के मंडल संयोजकों व जिला अध्यक्षों से कहा कि आगामी विधान सभा चुनाव 2027 के लिये बुथ स्तर तक के कार्यकर्ता नियुक्त करके उन्हें जिम्मेदारी देना सुनिश्चित करें। इसकी समीक्षा अगले माह में की जायेगी। बैठक में प्रमुख तौर पर प्रदेश प्रवक्ता प्रोफेसर केके त्रिपाठी, प्रदेश उपाध्यक्ष ममता सिंह, पुनम सिंह महिला मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष, शालिनी सिंह पटेल, ओपी वर्मा कार्यालय प्रभारी, हरि शंकर पटेल, एकलाख अहमद, अभिषेक राय, नौशाद खान, प्रशांत सिंह पटेल प्रदेश अध्यक्ष युवा प्रकोष्ठ, दिवाकर सिंह प्रवक्ता, विनीत तिवारी प्रवक्ता, अमर सिंह कटियार कोषाध्यक्ष, सुभाष पाठक, रजनिश पटेल उपस्थित रहे।

दो कैंटीन के संचालन का दिया निर्देश

लखनऊ। लोहिया पार्क का मंडलायुक्त द्वारा औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान मंडलायुक्त द्वारा पार्क में साफ-सफाई का ध्यान रखने का निर्देश दिया गया। वहीं, मंडलायुक्त द्वारा सारे कैंटीन के स्थान पर दो कैंटीन के संचालन का निर्देश दिया। गुरुवार को मंडलायुक्त डॉ रोशन जैकब ने आज लोहिया पार्क का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने उपस्थित संबंधित अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि पार्क की साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखा जाए। निरीक्षण के दौरान निर्माणधीन कैंटीन का जायजा लेते हुए उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि कार्य की गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखते हुए निर्माणकार्य निर्धारित समयावधि में पूर्ण कराया जाना सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि सारे केंटीन को ना बंद कराया जाए एक दो कैंटीन का संचालन कराते रहे।

कल से तीन दिन श्रद्धालुओं की सुगम यात्रा के लिए परिवहन निगम चलाएगा 2250 अतिरिक्त बसें

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश के परिवहन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दयाशंकर सिंह ने बताया कि महाकुंभ-2025 मेला के अंतिम चरण के अंतर्गत 15, 16 व 17 फरवरी (क्रमश: शनिवार, रविवार, सोमवार) के दौरान श्रद्धालुओं की भारी संख्या के दृष्टिगत 2250 अतिरिक्त बसों का संचालन किया जायेगा। उन्होंने बताया कि अमृत स्नान के अतिरिक्त शनिवार एवं रविवार के दिन भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु प्रयागराज महाकुम्भ स्नान के लिए पहुंच रहे हैं। ऐसे में श्रद्धालुओं को बेहतर परिवहन सुविधायें मुहैया कराने के लिए अतिरिक्त बसों की व्यवस्था परिवहन निगम द्वारा की जा रही है। परिवहन मंत्री ने निर्देश दिए हैं कि प्रयागराज के विभिन्न अस्थाई बस स्टेशनों पर अधिकारियों की ड्यूटी निर्धारण किया जाए, जिससे कि बसों का संचालन सुचारू रूप से हो सके। उन्होंने निर्देश दिए कि अवकाश के दिनों में बसों के सफल संचालन की कार्ययोजना बनाये एवं संचालन कराए। नोडल अधिकारियों को निर्देशित किए हैं कि महाकुम्भ जाने वाले श्रद्धालुओं को सुरक्षित एवं सुगम यात्रा के लिए आवश्यक सभी प्रबंध सुनिश्चित करें। किसी भी प्रकार की शिकायत आने पर नोडल अधिकारियों की जवाबदेही तय की जाएगी।

लोहिया संस्थान ने एडवांस्ड डा विंची रोबोटिक सिस्टम हासिल किया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डॉ. राम मनोहर लोहिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (डॉ. आरएमएलआईएमएस) ने गुरुवार को डबल कंसोल, क्लोज़ कंसोल और ट्रेनी रेजिडेंट्स के लिए सिम्युलेटर से लैस एडवांस्ड डा विंची रोबोटिक सिस्टम हासिल करने की घोषणा की है। रोबोटिक सिस्टम हासिल होने के बाद संस्थान प्रदेश का दूसरा सरकारी संस्थान बन गया है। डा विंची रोबोटिक सिस्टम सर्जनों को उन्नत सटीकता, चपलता और नियंत्रण के साथ जटिल प्रक्रियाओं को करने में सक्षम बनाता है। डबल कंसोल सुविधा सहयोगी सर्जरी की अनुमति देती है, जबकि क्लोज़ कंसोल सर्जनों को अधिक आसानी से ऑपरेट करने में सक्षम बनाता है। सिम्युलेटर रेजिडेंट्स के लिए एक व्यापक प्रशिक्षण मंच प्रदान करता है, यह सुनिश्चित करता है कि वे रोबोटिक सर्जरी में महारत हासिल करने के लिए आवश्यक कौशल प्राप्त करें। इस मौके पर निदेशक डॉ. सी.एम. सिंह ने कहा कि हम अपने संस्थान में इस उन्नत प्रौद्योगिकी को पेश करने के लिए सम्मानित हैं। डा विंची रोबोटिक सिस्टम सर्जरी के तरीके को क्रांतिकारी बना देगा, जिससे रोगी के परिणामों में सुधार होगा और हमारे रेजिडेंट्स को अभूतपूर्व प्रशिक्षण अवसर प्रदान किए जाएंगे। डा विंची रोबोटिक सिस्टम का अधिग्रहण डॉ. आरएमएलआईएमएस की चिकित्सा नवाचार के क्षेत्र में रहने और असाधारण रोगी देखभाल प्रदान करने की प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

सार्वजनिक स्थानों पर नगर निगम के कूड़ा फेंकने पर रोक लगाने की मांग को लेकर लिखा पत्र

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजसेवी संगठन ऑलमाइटी शिवा एसोसिएशन ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर सार्वजनिक स्थलों पर नगर निगम द्वारा कूड़ा फेंकने से रोकने एवं इस पर सदैव के लिए रोक लगाए जाने की मांग की है। संस्था के सचिव आदित्य चौधरी ने बताया कि मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव संजय प्रसाद ने संस्था के पत्र को संज्ञान में लेते हुए नगर विकास विभाग के प्रमुख सचिव अमृत अभिजात को तत्काल सार्वजनिक स्थलों पर नगर निगम द्वारा कूड़ा फेंकने से रोकने हेतु प्रभावी कार्यवाही करने के लिए आदेशित किया है। संस्थान द्वारा एल्डिको उद्यान, रवि खण्ड, रश्मि खण्ड आदि कालोनी में विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर नगर निगम तथा निजी सफाई कर्मियों द्वारा कूड़ा फेंके जाने की शिकायत की है। चौधरी ने कहा कि सार्वजनिक स्थलों पर कूड़ा फेंके जाने से कूड़े के ढेर से अखाद्य पदार्थों को खाने से जहां बेजुबान पशुओं की असमय मृत्यु हो रही है वहीं गन्दगी और बदबू के चलते तमाम जानलेवा बीमारियां फैलती हैं जो हमारे समाज के लिए बहुत ही घातक है। लोगों का कालोनी में बदबू के चलते दूभर हो जाता है। वायुमण्डल प्रदूषित होता है और इसके लिए जलप्रदूषण और वायु एवं जल जनित बीमारियां पैदा होती हैं।

मोहनलालगंज पहुंची पद यात्रा किसानों ने किया जोरदार स्वागत

संवाददाता। मोहनलालगंज

सर्किल रेट बढ़ाने और किसानों को कर्जमाफी का लाभ देने समेत बारह सूत्रीय मांगों को लेकर प्रदेश प्रभारी ऋषि मिश्र की अगुवाई में भारतीय किसान यूनियन भानु के सैकड़ों कार्यकर्ताओं का हुजूम 52 किलोमीटर की पैदल यात्रा कर गुरुवार को मोहनलालगंज कस्बे पहुंचा। जहां किसानों और स्थानीय दुकानदारों ने भाकियू की पद यात्रा में शामिल कार्यकर्ताओं का फूल माला पहनाकर जोरदार स्वागत किया। इस दौरान प्रदेश प्रभारी ऋषि मिश्र ने एसडीएम बृजेश कुमार वर्मा और एसीपी रजनीश वर्मा को संयुक्त रूप से अपना मांगपत्र सौंपा। अपने सम्बोधन में प्रदेश प्रभारी ने कहा रेलवे क्रॉसिंग पर प्रस्तावित फ्लाईओवर के नए रूट को लेकर कस्बे के लोग बेहद परेशान हैं। उन्होंने शासन स्तर पर वार्ता कर स्थानीय लोगों की चिंताओं का निदान कराने का भरोसा दिया। उन्होंने कहा सरोजनीनगर क्षेत्र में पद यात्रा पूरी होने के बाद 20 फरवरी को वृन्दावन योजना के मैदान में यात्रा का समापन किया जाएगा।

बेकाबू स्कॉर्पियो की टक्कर से युवक जखमी: भाकियू की पदयात्रा के दौरान रायबरेली हाईवे पर वाहन के इंतजार में खड़े उन्नाव जिले के कालूखेड़ा निवासी सुशील कुमार तिवारी को बेकाबू स्कॉर्पियो ने जोरदार टक्कर मार दी। इस दौरान स्कॉर्पियो सुशील के पैरों पर चढ़ गई जिससे उसके पैर में फ्रैक्चर हो गया। जिसे आनन फानन सीएचसी ले जाकर भर्ती कराया गया। हालत गम्भीर होने पर परिजन सुशील को निजी अस्पताल लेकर चले गए। मामले में उसके साले रविकांत ने पुलिस से शिकायत की है। एसएचओ अमर सिंह ने बताया स्कॉर्पियो को कब्जे में लेकर पीड़ित पक्ष की शिकायत पर केस दर्ज कर जांच की जा रही है।

पायनियर
लखनऊ, शुक्रवार, 14 फरवरी , 2025

एमसीडी ने पेश किया 17,002 करोड़ का बजट

● इस बार के बजट में 318 करोड़ की बढ़ोतरी की गई है

निगम मुख्यालय सीविक सेंटर में बजट पेश करते दिल्ली नगर निगम के आयुक्त अश्विनी कुमार। फोटो: रंजन डिमरी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली नगर निगम में गुरुवार को आयुक्त अश्विनी कुमार ने नए वित्तीय वर्ष 2025-26 का बजट पेश किया। इस बार के बजट में 318 करोड़ रुपए बढ़ोतरी की गई है।

पिछले वर्ष 2024-25 में जहां 16,683.02 करोड़ रुपए का बजट प्रस्तुत किया था, वहीं इस बार 17,002 करोड़ रुपए का बजट पेश किया गया। इस बजट में नागरिक बुनियादी ढांचे के विकास, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और पर्यावरण संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया गया है।

इसके अलावा पार्किंग सुविधाओं का डिजिटलीकरण, मोबाइल टावरों से राजस्व वृद्धि, भूमि संपदा विभाग के माध्यम से राजस्व संग्रह पर जोर दिया गया है। बजट में साफ-सफाई पर खासा जोर दिया गया जिसके तहत स्वच्छता के लिए 4,907.11 करोड़ रुपए निर्धारित किए गए हैं। बजट में एमसीडी ने किसी भी बड़ी इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजना का लेखा-जोखा पेश नहीं किया।। पिछले वर्ष में कुछ मल्टी लेवल कार पार्किंग के बारे में बताया गया था, जिसे इस बार के बजट में फिर से बताया गया है। इस दौरान पंजाबी बाग श्मशान घाट पर 225 कारों, जीके-1 मार्केट में 399 कारों, फतेहपुरी मार्केट में 196 कारों की पार्किंग का निर्माण जारी होने के बारे में बताया गया है। अश्विनी कुमार ने बताया कि नगर निगम की 14 हजार करोड़ रुपए की देनदारी है. उन्होंने कहा कि विभिन्न माध्यमों से आय को बढ़ाने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं. आयुक्त ने बताया कि जनवरी 2025 तक निगम ने संपत्ति कर से ` 1908.06 करोड़ रुपए का राजस्व प्राप्त किया है. पिछले साल की तुलना में इसमें 215.65 करोड़ रुपए की बढ़ोतरी हुई है. उन्होंने बताया कि बीते वित्तीय वर्ष में संपत्ति कर से 1692.41 करोड़ रुपए का राजस्व प्राप्त हुआ था। वर्तमान वित्तीय वर्ष के लिए लाभकारी परियोजना विभाग को 300 करोड़ रुपये का लक्ष्य प्रस्तावित है। पार्किंग को डिजिटल करने की दिशा में 55 पार्किंग स्थलों में फास्टैग पार्किंग की सुविधा से लैस किया गया है। निगम ने अपनी सम्पत्ति पर मोबाईल टॉवर लगाने की पॉलिसी को लागू किया है जिसके तहत अब तक निगम ने 255 मोबाईल टॉवर लगाने की अनुमति दी है। 28 जनवरी, 2025 तक पार्किंग से 145.35 करोड़, वन-टाइम पार्किंग चार्ज से 33.88 करोड़, मोबाईल टावर से 16.14 करोड़, ई-बाईक ई-साईकिल से 62 लाख, ई-चार्जिंग स्टेशन से 49 लाख तथा अमूल मिल्क बूथ से 2.34 करोड़ रुपये प्राप्त कर लिए हैं। वर्ष 2024-25 में जनवरी, 2025 तक कुल 38.60 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त किया गया है। निगम द्वारा लाइसेंस की दुकानों के लिए मासिक लाइसेंस शुल्क भुगतान के लिए ऑनलाइन पोर्टल प्रारंभ किया है। 31 जनवरी, 2025 तक कुल 6952 लाइसेंस दिये गये जिसकी एवज में 14.53 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ। दुकानों और गोदामों को कुल 32418 सामान्य व्यापार/भंडारण लाइसेंस प्रदान किये गये जिससे 31 जनवरी 2025 तक 84.16 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त किया है। निगम पीएम स्वनिधि योजना के तहत रेहड़ी-पटरी वालों को बैंक से सस्ती दरों पर कर्ज लेने की सुविधा उपलब्ध करा रहा है। 10 फरवरी 2025 तक 2,34,308 रेहड़ी पटरी वालों को ऋण का लाभ मिल चुका है। वर्ष 2024-25 में 31 जनवरी, 2025 तक 3,15,461 जन्म और 1,18,183 मृत्यु के आवेदन पंजीकृत किये गए हैं।

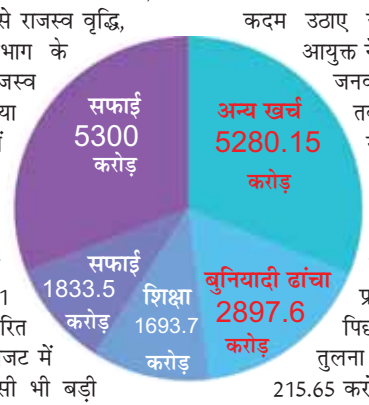

पर्यावरण प्रबंधन सेवाएं

200 मीट्रिक टन गोबर, वनस्पति कचरा प्रतिदिन संसाधित करने के लिए बायो मैथेनाइजेशन संयंत्रों की स्थापना का कार्य चल रहा है जिसे मार्च, 2025 तक पूरा करने की संभावना है। 750 मीट्रिक टन वनस्पति कचरा प्रतिदिन संसाधित करने के लिए तीन बायो सीबीजी, सीएनजी संयंत्र ओखला, घोघा डेयरी एवं गाजीपुर मे लगाने की योजना पर भी कार्य किया जा रहा है।

बरसाती पानी की निकासी

कूड़े के निष्पादन हेतु 36 स्थानों को एफसीटएस निर्माण के लिए चिह्नित किया गया है। 10 स्थानों पर निर्माण कार्य प्रगति पर है। वहीं बरसाती पानी के निकास के लिए तैमूर नगर नाले के सुदृढ़ीकरण कार्य 3.38 करोड़ रुपये की लागत से किया जा रहा है। महरौली बदरपुर रोड के आउटफॉल ड्रेन का निर्माण का कार्य 11.90 करोड़ रुपये की लागत से किया जाएगा।

बिजली कटौती पर सियासत गरम

● पूर्व सीएम आतिशी ने कटौती पर भाजपा पर लगाए गंभीर आरोप, कहा कि आप सरकार जाते ही व्यवस्था चरमरा गई है

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

बिजली कटौती को लेकर राजधानी दिल्ली में सियासत एक बार फिर गर्म हो गई है। आम आदमी पार्टी की नेता आतिशी ने राजधानी में हो रही बिजली कटौती पर बीजेपी पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि आप सरकार जाते ही दिल्ली में बिजली व्यवस्था चरमरा गई है। जिन इलाकों में पहले 24 घंटे बिजली मिलती थी, वहां अब घंटों बिजली गुल रह रही है। उन्होंने संगम विहार का हवाला देते हुए कहा कि वहां 6 घंटे से ज्यादा बिजली गायब रही, जिससे लोगों को काफी परेशानी झेलनी पड़ी।

कार्यवाहक मुख्यमंत्री आतिशी ने गुरुवार को संवाददाता सम्मेलन में भाजपा पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि 8 फरवरी के बाद से दिल्ली के अलग-अलग इलाकों से कई घंटे बिजली कटौती की शिकायत आ रही है। लोग सोशल मीडिया पर पावर कट की शिकायत कर रहे है। 9 फरवरी को मोहन गार्डन के सैनिक एनक्लेव में 4 घंटे के लिए पावर कट लगा। 8 फरवरी को आश्रम स्थित सनलाइट कॉलोनी में रात भर बिजली गुल रही। 10 फरवरी को पूर्वी दिल्ली के राधेपुर में 2 घंटे के लिए पावर कट हुआ। 10 फरवरी को केजी 2 के विकासपुरी इलाके में 4 घंटे पावर कट हुआ। 11 फरवरी को रोहतक रोड स्थित आनंद पर्वत में 2 घंटे से ज्यादा पावर कट हुआ। 11 फरवरी को मलका गंज एरिया में 5 घंटे पावर कट हुआ। 12 फरवरी को तिलक नगर में 1 घंटे का पावर कट हुआ। 12 फरवरी को उत्तम नगर के विकास नगर एक्सटेंशन में रात भर बिजली गायब रही। उन्होंने कहा कि बड़ी दिलचस्त बात है कि भाजपा के एक पदाधिकारी ने भी एक्स पर ट्वीट कर कहा कि संगम विहार इलाके में 6 घंटे से ज्यादा पावर कट हुआ।

आतिशी ने दावा किया कि पिछले तीन दिन में पावर कट के ऐसे सैकड़ों उदाहरण सामने आए हैं। ईस्ट दिल्ली, वेस्ट दिल्ली, नॉर्थ दिल्ली, साउथ दिल्ली समेत अलग-अलग हिस्सों से लोग बीएसईएस और टाटा पावर को अपने कनेक्शन नंबर के साथ ट्वीट कर के बता रहे हैं कि उनके यहां पावर कट हो रहा है। बीएसईएस और टाटा पावर की ऐसे और कई शिकायतें पावर कट की आई हैं। मात्र 3 दिन में पावर सेक्टर, 24 घंटे बिजली आपूर्ति का ध्वस्त होना यह दिखता है कि केजरीवाल के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी की सरकार लगातार रोजाना एक-एक घंटे पर पूरे बिजली इंफ्रास्ट्रक्चर और पावर सेक्टर को मॉनिटर कर रही थी, ताकि जनता को 24 घंटे बिजली मिल सके। जैसे ही आम आदमी पार्टी की सरकार गवर्नेंस से हटी है, पूरा पावर सेक्टर सिर्फ 3 दिन में ही ध्वस्त हो गया है। लोग अब इनवर्टर फिर से खरीदने लगे हैं।

कहीं भी बिजली कटौती नहीं हो रही : सचदेवा

नई दिल्ली। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने दावा किया कि दिल्ली में कहीं भी बिजली कटौती नहीं हो रही है। कार्यवाहक मुख्य मंत्री आतिशी हो या आम आदमी के अन्य नेता सब मिल कर बिजली कटौती का झूठ एवं भ्रम फैलाने में लगे हैं। दिल्ली वाले जानते हैं कि गत कई वर्षों से केजरीवाल सरकार एवं निजी पावर डिस्कॉम की सांठ गांठ से जनता की लूट करती रही है।

भाजपा ने पीपीएसी एवं अन्य हेडस से बिजली उपभोक्ताओं की लूट को उजागर किया है और अब जब भाजपा की सरकार आने वाली है तो कार्यवाहक मुख्य मंत्री साजिश रच रही हैं और इसमें डरा कर डिस्कॉम को भी हाथ मिलाने को बाध्य कर रही हैं। सचदेवा ने कहा है की उनकी जानकारी में दिल्ली में कहीं भी बिजली कटौती नहीं हो रही सिर्फ इतना है की कार्यवाहक मुख्य मंत्री एवं पावर डिस्कॉम की सांठगांठ ऐसी है की यहां वहां हुए ब्रेक डाउन ठीक करने में अत्याधिक समय लगाया जा रहा है।

'नई सरकार में डिप्टी सीएम होने की संभावना नहीं'

● अंतिम फैसला पीएम मोदी के अमेरिका से लौटने के बाद लिया जाएगा : पार्टी नेता

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

नए मुख्यमंत्री को लेकर भाजपा में जारी मंथन के बीच पार्टी के वरिष्ठ नेता अंतिम फैसला लेने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विदेश से लौटने के बाद मिल सकते हैं।

इस बीच संकेत मिल रहे हैं कि पार्टी दिल्ली में कोई उपमुख्यमंत्री नहीं बनाएगी। पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि शीर्ष नेतृत्व अपने विकल्पों पर विचार कर रहा है और अंतिम निर्णय मोदी के लौटने के तुरंत बाद लिया जाएगा।

मोदी इस समय अमेरिका की यात्रा पर हैं। यह पूछे जाने पर कि क्या पार्टी कोई उपमुख्यमंत्री बनाएगी, जैसा कि उसने हाल ही में राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में किया है, उन्होंने कहा कि इसकी संभावना नहीं है।

नया मुख्यमंत्री संभवत: विधायकों में से ही होगा। निवर्तमान आम आदमी पार्टी (आप) सरकार में मनीष सिसोदिया कई वर्षों तक उप मुख्यमंत्री रहे, तथा कथित आबकारी घोटाला मामले में गिरफ्तारी के बाद उन्होंने इस्तीफा दे दिया था।

बांसुरी के खिलाफ मानहानि मामले में फैसला 20 को

नई दिल्ली। अदालत 20 फरवरी को यह तय करेगी कि आप नेता सत्येंद्र जैन द्वारा भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज के खिलाफ दायर आपराधिक मानहानि की शिकायत पर संज्ञान लिया जाए या नहीं। अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट नेहा मित्तल ने बृहस्पतिवार को इस मुद्दे पर दलील सुनने के बाद आदेश सुरक्षित रख लिया। जैन ने आरोप लगाया है अपमानजनक टिप्पणी की, जिसे उन्होंने दावा किया कि लाखों लोगों ने देखा। उन्होंने कहा कि स्वराज ने झूठा दावा किया कि उनके घर से 1.8 किलोग्राम सोना और 133 सोने के सिक्कों के अलावा 3 करोड़ रुपए बरामद हुए।

भाजपा को था ईसी का आशीर्वाद : आदित्य ठाकरे

● बोले, कई जगहों पर बहुत सारे वोट काटकर लोगों से उनके वोट का अधिकार छीना है

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी की पिछले 12 सालों में पहली हार और महाराष्ट्र चुनाव में करारी हार से जख्मी आदित्य ठाकरे और संजय राउत ने बृहस्पतिवार को आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल से मुलाकात की।

मुलाकात के बाद आदित्य ठाकरे ने चुनाव आयोग और भाजपा में मिलीभगत के आरोपों की झड़ी लगाई है। हालांकि आदित्य ठाकरे ने लगाए आरोप पहले नेता प्रतिपक्ष राहुल गाँधी भी लगा चुके है, जिस पर चुनाव आयोग समय समय पर स्पष्टीकरण भी दे चूका है। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के बेटे और शिवसेना (यूबीटी) के वरिष्ठ नेता आदित्य ठाकरे ने गुरुवार को कहा कि दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा को चुनाव आयोग का आशीर्वाद था। भाजपा को चुनाव आयोग का आभारी होना चाहिए। पिछले 10 सालों में केजरीवाल ने बहुत शानदार काम किए हैं और यह बात लोग बखूबी जानते हैं। चुनाव आयोग ने कई जगहों पर बहुत सारे वोट काटकर लोगों से उनके वोट का अधिकार छीना है। आज देश में चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष नहीं हो रहे हैं। इसलिए इंडिया गठबंधन के लिए अपने अगले कदम के बारे में सोचना जरूरी हो गया है। शिवसेना उद्धव बाला साहेब पार्टी के दिल में यह बात साफ है कि सरकार आती-जाती रहती है, लेकिन हमारा रिश्ता ऐसे ही चलता रहेगा। ठाकरे ने बताया कि बुधवार को उनकी कांग्रेस नेता राहुल गांधी से बात हुई और आज आप प्रमुख से बात हुई कि इंडिया गठबंधन और सभी पार्टियों को मिलकर अब अपने अगले कदम के बारे में सोचना चाहिए क्योंकि हमारा चुनाव अब स्वतंत्र और निष्पक्ष नहीं रह गए हैं। हम देश हित में लड़ते रहेंगे और जनता की आवाज उठाते रहेंगे। देश के भले के लिए अगर सड़क पर उतर कर भी लड़ना पड़े तो लड़ते रहेंगे।

अमानतुल्लाह खान की गिरफ्तारी पर 24 तक कोर्ट ने लगाई रोक

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अदालत ने राष्ट्रीय राजधानी के जामिया नगर में 10 फरवरी को पुलिस की एक टीम पर कथित रूप से हमला करने के मामले में आम आदमी पार्टी विधायक अमानतुल्लाह खान को 24 फरवरी तक गिरफ्तारी से संरक्षण प्रदान कर दिया। अदालत के आदेश के बाद खान जामिया नगर पुलिस स्टेशन पहुंचे। जहां उनसे दिल्ली पुलिस में तैनात अधिकारियों ने करीब ढाई घंटे तक पूछताछ की। पुलिस सूत्रों ने बताया कि विधायक जहां अपने उपर लगाए गए आरोपों से इंकार किया वहीं दिल्ली पुलिस का कहना है कि आरोपी को भगाने में विधायक की महत्वपूर्ण भुमिका थी और इसी के मददेनजर उनसे पूछताछ की गई।

न्यायाधीश ने मामले में खान द्वारा दायर अग्रिम जमानत याचिका पर दलीलें सुनते हुए यह निर्देश दिया। अदालत ने पुलिस को सीसीटीवी फुटेज के अलावा घटना से संबंधित सभी दस्तावेज 24 फरवरी को अदालत के समक्ष पेश करने का भी निर्देश दिया।

दिल्ली पुलिस ने सोमवार को जामिया नगर में पुलिस टीम पर हमला करने के आरोप में खान के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की थी। पुलिस ने कहा कि विधायक की अगुवाई में आई भीड़ ने हत्या के प्रयास के एक मामले के आरोपी को हिरासत से भागने में मदद की।

पुलिस ने कहा कि कथित घटना उस समय हुई जब दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने शाबाज खान नामक उक्त आरोपी को गिरफ्तार करने की कोशिश की। इस मामले में पुलिस आयुक्त को भी पत्र लिखा गया था।

ईडी की याचिका पर खान से मांगा जवाब

नई दिल्ली। उच्च न्यायालय ने प्रवर्तन निदेशालय की उस याचिका पर अमानतुल्ला खान से बृहस्पतिवार को जवाब मांगा जिसमें दिल्ली वक्फ बोर्ड में कथित अनियमितताओं से संबंधित धन शोधन मामले में उनके खिलाफ दायर आरोपपत्र पर संज्ञान लेने से अधीनस्थ अदालत के इनकार और रिहाई के आदेश को चुनौती दी गई है। न्यायमूर्ति विकास महाजन ने ओखला से आप के विधायक को नोटिस जारी कर मामले को 21 मार्च को आगे की सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया। न्यायाधीश ने अधीनस्थ अदालत से भी उच्च न्यायालय में अगली सुनवाई की तारीख के बाद तक कार्यवाही स्थगित करने को कहा। ईडी के वकील ने दिल्ली उच्च न्यायालय से कहा कि निचली अदालत ने खान और उनकी पत्नी के खिलाफ अभियोजन पक्ष की शिकायत पर संज्ञान लेने से इनकार कर दिया है, जबकि अन्य आरोपियों के खिलाफ शुक्रवार को मामले की सुनवाई होनी है। ईडी ने 29 अक्टूबर, 2024 को 110 पृष्ठ की पहली अनुपूरक अभियोजन शिकायत (आरोप पत्र के समान) दायर की थी, जिसमें आरोप लगाया गया था कि खान ने दिल्ली वक्फ बोर्ड में भ्रष्टाचार के जरिए धन अर्जित किया।

आयकर में सरलीकरण से व्यापार में होगी आसानी : प्रवीण खंडेलवाल

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

ऐतिहासिक कदम उठाते हुए, मोदी सरकार ने नया आयकर बिल 2025 पेश किया है, जो छह दशक पुराने आयकर बिल, 1961 की जगह लेगा। यह महत्वपूर्ण सुधार कर पालन को सरल बनाने, कर भार कम करने और व्यापारियों व व्यक्तियों के लिए पालन की लागत को घटाएगा।

नए बिल पर सांसद एवं कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीन खंडेलवाल ने इस पहल की सराहना की और इसे टैक्स सरलीकरण की दिशा में मोदी सरकार का एक बड़ा कदम बताया, जिससे टैक्स प्रणाली में आवश्यक स्पष्टता और प्रभावशीलता आएगी। प्रस्तावित कानून टैक्स प्रशासन के प्रति एक संरचित और आधुनिक दृष्टिकोण को दर्शाता है। डिजिटल गवर्नेंस को अपनाने और प्रावधानों को सुव्यवस्थित करने के माध्यम से, यह नया बिल व्यापारियों और व्यक्तिगत करदाताओं दोनों के लिए अधिक पारदर्शिता और पालन में आसानी सुनिश्चित करता है। इसके अलावा, ये बिल व्यवसायों के लिए मूल्यह्रास की गणना को अधिक स्पष्ट बनाने हेतु एक सुस्पष्ट फार्मूला प्रदान करता है, जिससे अस्पष्टता को कम किया जा सके। टैक्स स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए, नए कानून में मौजूदा आयकर स्लैब, कैपिटल गेन टैक्सेशन , और आयकर रिटर्न दाखिल करने की समय सीमा को बरकरार रखा गया है, जिससे करदाताओं को किसी भी अनावश्यक व्यवधान का सामना न करना पड़े।

सड़क दुर्घटना में दोषी को 10 साल कारावास की सजा

नई दिल्ली। निचली अदालत ने वर्ष 2014 में नशे में धुत व्यक्ति द्वारा कार को फुटपाथ पर चढ़ा देने से हुई दो लोगों की मौत और 10 अन्य के घायल होने के मामले में 10 वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई।

अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश वीरेंद्र कुमार खरता ने आरोपी ऋषि के खिलाफ मामले की सुनवाई की और दोषी करार दिया। अदालत ने 12 फरवरी को दिए गए अपने फैसले में अतिरिक्त सरकारी वकील पंकज रंगा की इस दलील पर गौर किया कि दोषी ने 17 अगस्त 2014 को निगम बोध घाट के पास फुटपाथ पर सो रहे बेघरों पर अपनी कार चढ़ा दी थी, जिससे दो लोगों की मौत हो गई थी जबकि 10 घायल हो गए थे। अदालत ने कहा, यह सच है कि फुटपाथ सोने के लिए नहीं होते, बल्कि पैदल चलने के लिए होते हैं, लेकिन यह भी सच है कि फुटपाथ वाहन चलाने के लिए भी नहीं होते। आदेश में कहा कि दोषी को पता था कि नशे में गाड़ी चलाने के कारण निर्दोष लोगों की मौत हो सकती है।

संक्षिप्त समाचार

पीएनबी का एमएसएमई आउटरीच प्रोग्राम

नई दिल्ली। पंजाब नैशनल बैंक, मण्डल कार्यालय गुरुग्राम द्वारा अपने एमएसएमई क्षेत्र के उद्यमियोंको एमएसएमई की विभिन्न ऋण एवं अन्य योजनाओं के साथ साथ बैंक के डिजिटल उत्पादों की जानकारी साझा करने के मकसद से बृहस्पतिवार को 'एमएसएमई आउटरीच प्रोग्राम' का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि विनोद गुप्ता (वाइस चेयरमैन-एमएसएमई चेम्बर ऑफ कॉमर्स,गुरुग्राम), श्रीपाल शर्मा (प्रेसिडेंट कादीपुर इंडस्ट्रीज वेल्फेयर एसोसिएशन, गुरुग्राम), पवन कुमार जिंदल (प्रेसिडेंट दौलताबाद रोड इंडस्ट्रीज एसोसिएशन, गुरुग्राम) ने किया। इस मौके पर महाप्रबन्धक ने बताया कि पंजाब नैशनल बैंक सुलभ एवं आकर्षक ब्याज दरों पर एमएसएमई उद्यमियोंको ऋण सुविधा उपलब्ध करवाता है। इस प्रोग्राम में एमएसएमई ईकाईयों के लगभग 55.00 करोड़ के ऋण आवेदन प्राप्त हुये। कार्यक्रम में बैंक के वरिष्ठ अधिकारी तोफीक आलम (महाप्रबन्धक), एकता पसरीचा (महाप्रबन्धक), वंदना पांडे (उप महाप्रबन्धक), परवेन्द्र कुमार (मण्डल प्रमुख) एवं बैंक के अन्य अधिकारियों ने भाग लिया।

इंडियाज गॉट लेटेंट शो पर लगे बैन : सीटीआई

नई दिल्ली। व्यापारियों के शीर्ष संगठन चैंबर ऑफ ट्रेड एंड इंडस्ट्री ने केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्र लिखकर मांग की है कि इंडियाज गॉट लेटेंट पर सरकार बैन लगाए और कानूनी कार्रवाई करे। सीटीआई के चेयरमैन बृजेश गोयल और अध्यक्ष सुभाष खंडेलवाल ने कहा कि इस तरह के शो भारतीय संस्कृति और संस्कारों के लिए खतरा हैं। जोक्स के नाम पर अश्लीलता फैलाना ठीक नहीं है। छोटे-छोटे बच्चों के हाथों में मोबाइल है। माता-पिता पर भद्दी और फूहड़ टिप्पणी की है। समाज में गलत ट्रेंड स्थापित होता है। समय रैना और रणवीर इलाहाबादिया के खिलाफ कार्रवाई होना चाहिए और इनके सोशल मीडिया अकाउंट ब्लॉक होने चाहिए। संगठन महासचिव विष्णु भार्गव और गुरमीत अरोड़ा ने कहा सस्ती लोकप्रियता, कॉमेडी और पैसा कमाने के चक्कर में फूहड़ता बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

हकीम अजमल खान को किया याद

नई दिल्ली। हकीम अजमल खान की जयंती के अवसर पर 2011 से हर साल 12 फरवरी को 'विश्व यूनानी चिकित्सा विज्ञान दिवस मनाया जाता है। ऑल इंडिया यूनानी तिब्बी कांग्रेस ने कांस्टीट्यूशन क्लब में एक समारोह आयोजित किया गया। प्रोफेसर मुश्ताक अहमद की अध्यक्षता में समारोह आयोजित किया। इस मौके पर महाराष्ट्र के लातूर लोकसभा क्षेत्र से सांसद शिवाजी राव कालगे और मुरादाबाद लोकसभा क्षेत्र से सांसद रुचि वीरा विशेष अतिथि के रूप में शामिल हुए। ऑल इंडिया यूनानी तिब्बी कांग्रेस के महासचिव डॉ. सैयद अहमद खान ने अपने भाषण में विश्व यूनानी चिकित्सा विज्ञान दिवस मनाने के उद्देश्य तथा तिब्बी कांग्रेस की महत्वाकांक्षाओं, लक्ष्यों और उद्देश्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

ई-रिक्शा चालक की हत्या, चार गिरफ्तार

नई दिल्ली। एक नाबालिग को कथित तौर पर धमकाने और उसके साथ मारपीट करने के प्रतिशोध में 22 वर्षीय ई-रिक्शा चालक की हत्या की गई। पुलिस ने बताया कि घटना के सिलसिले में 17 वर्षीय नाबालिग समेत चार लोगों को पकड़ा गया है। तीन फरवरी को मूंगा नगर में एक शव पड़े होने की जानकारी मिली थी।

मृतक की पहचान भोला के रूप में हुई है, जो पेशे से ई-रिक्शा चालक था। अपराध व फोरेंसिक टीमों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और शव को पोस्टमार्टम के लिए जीटीबी अस्पताल भेज दिया। सीसीटीवी फुटेज खंगाल कर खजूरी चौक इलाके से ढूंढ निकाला गया। इसके बाद छापेमारी कर उन्हें पकड़ लिया गया। अधिकारी ने बताया कि पूछताछ के दौरान आरोपियों ने अपना गुनाह कबूल लिया।

सरकारी स्कूलों से ही भविष्य का निर्माण : रेड्डी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

डीयू के हंसराज कॉलेज में दिल्ली सरकार की शिक्षा निदेशक वेदिथा रेड्डी ने कहा कि सरकारी विद्यालय ही भारत के स्वर्णिम भविष्य का निर्माण करेंगे और विद्यालयी शिक्षा में पनपे एक अलग किस्म के श्रेष्ठता और हीनता बोध को भी समाप्त करेंगे।

उन्होंने अभिभावकों से अनुरोध किया कि विद्यालयों में प्रवेश की अंधी दौड़ में शामिल हुए बिना उन्हें अपनी मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है। रेड्डी ने कहा कि आप देश की श्रेष्ठ सेवाओं में शुमार सिविल सेवा के परिणामों का मूल्यांकन करेंगे तो पाएंगे कि अधिकतम सफल अभ्यर्थी सरकारी विद्यालयों से ही शिक्षा प्राप्त की है। इस अवसर पर उन्होंने सिविल सेवा तैयारी की अपनी यात्रा को साझा करते हुए कहा कि हर अभ्यर्थी की तैयारी का अपना तरीका होता है और उस पर ही विश्वास करना चाहिए। उन्होंने अपना उदहारण देते हुए कहा कि आप स्कूल कॉलेज या अपनी कोचिंग में औसत विद्यार्थी भी हैं तब भी आत्मविश्वास रखते हुए इस परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा की प्रामाणिक पुस्तकों को आधार बनाकर उनको पढ़ना, हर दिन स्वाध्याय की योजना बनाना, पुराने प्रश्नों का निरन्तर अभ्यास करना और धैर्य बनाये रखना ही इस परीक्षा में सफलता का मूलमंत्र है। इस अवसर पर उन्होंने निष्ठा के चयनित विद्यार्थियों का मेडल पहनकर उन्होंने अभिनंदन किया। कार्यक्रम में हंस राज कॉलेज प्राचार्य प्रो. रमा, समिति संयोजक डॉ. प्रभांशु ओझा कॉलेज बर्सर डॉ. मंजीत सिंह सग्गी, सोसायटी अध्यक्ष प्रिंस मलिक, चीफ लाइब्रेरियन डॉ. नरेंद्र सिंह रावत, डॉ. पीयूष द्विवेदी, डॉ. विनोद मायला एवं दिल्ली विश्वविद्यालय सोशल सेंटर स्कूल की वाइस प्रिंसिपल डॉ. गरिमा भारती मौजूद रहे।

संगम में आस्था की डुबकी लगाना अलौकिक क्षणः सिंधिया

● केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने संगम में सपरिवार लगाई आस्था की डुबकी

● मंत्री नंद गोपाल नंदी ने कुंभ कलश भेंट कर किया केंद्रीय मंत्री का स्वागत

संवाददाता। महाकुंभ नगर

सनातन परम्परा की दिव्य अभिव्यक्ति एवं विश्व के सबसे बड़े धार्मिक समागम महाकुम्भ में सम्मिलित होने एवं पावन त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगाने के लिए तीर्थराज प्रयागराज आगमन पर उत्तर प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास मंत्री नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी ने केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया को कुम्भ कलश भेंट कर प्रदेश सरकार की ओर से हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन किया।

केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगाई। मंत्री नन्दी ने कहा कि महाकुम्भ एकात्मकता एवं समरसता का जीवंत महोत्सव है। आस्था की ऊंचाई अध्यात्म की गहराई संस्कृति की पहचान और संस्कारों की जीवंतता है। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने दिव्य एवं भव्य महाकुम्भ के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को धन्यवाद ज्ञापित किया। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि युग युग युगान्तर से पीढ़ियों को ऐसे छण का इंतजार रहता है। विश्व में यह अनोखा समय है जहां विश्व के लोग स्वयं आकर त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगा रहे हैं। संगम में आस्था की डुबकी लगा चुके सभी 50 करोड़ श्रद्धालुओं के लिए महाकुम्भ में सम्मिलित होना और संगम दर्शन करना महत्वपूर्ण ही नहीं अलौकिक छण है।

इस दिव्य एवं भव्य आयोजन के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंत्री नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी को धन्यवाद अर्पित किया। कहा सभी श्रद्धालुओं का ख्याल रखा गया। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि प्रयागराज से सिंधिया परिवार का ऐतिहासिक सम्बंध रहा है। जब हमारे पूर्वज श्रीमंत महाराज ने इस क्षेत्र को स्वतंत्र किया था मुगलशासन से और यहां हमारे आध्यात्मिक शक्तियों मंदिरों को पूर्ण करने का कार्य समूचे क्षेत्र में उन्होंने अपने हाथों में लिया था। यह हमारे लिए भावनात्मक क्षण है। खुद को सौभाग्यशाली समझता हूं कि मोक्ष प्राप्ति का क्षण हमें इस संगम में स्नान करके प्राप्त हुआ है।

कुंभ मेले में तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए उठाए कदम

प्रयागराज। देश में निजी क्षेत्र के अग्रणी बैंकों में से एक एक्सिस बैंक ने प्रयागराज में कुंभ मेले के दौरान करोड़ों श्रद्धालुओं को एक सुरक्षित और बेहतर सुगम अनुभव प्रदान करने के लिए अनेक नए कदम उठाए हैं। दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों में से एक की भव्यता और महत्व को ध्यान में रखते हुए बैंक ने ग्राउंड असिस्टेंस वित्तीय पहुंच और डिजिटल जागरूकता कार्यक्रमों का समावेश किया है। जिससे श्रद्धालुओं को भौतिक और डिजिटल दोनों क्षेत्रों में सुविधा मिलेगी। एक्सिस बैंक की प्रेसिडेंट एंड हेड ब्रांच बैंकिंग अर्निका दीक्षित ने कहा कुंभ मेला में भाग लेने वाले लाखों भक्तों की सेवा करना एक्सिस बैंक के लिए एक बड़ा सम्मान है। एक्सिस बैंक में हम मानते हैं कि सच्ची सेवा लेन-देन से परे है। यह अनुभवों को सक्षम करने सुरक्षा को बढ़ावा देने और इस आध्यात्मिक यात्रा पर निकलने वाले प्रत्येक भक्त को सशक्त बनाने के बारे में है। इन पहलों के साथ हम वित्तीय समावेशन डिजिटल सशक्तिकरण और सामुदायिक कल्याण के लिए अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत बना रहे हैं।

राहत सेवा केंद्र के माध्यम से महाकुंभ में हुई सहायता

प्रयागराज। सिप्ला की फास्ट मूविंग वेलनेस गुड्स एफएमजीडब्ल्यूजी शाखा सिप्ला हेल्थ लिमिटेड जिसे भारत में वेलनेस को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष दो हजार पंद्रह में शामिल किया गया था। भक्तों के दुनिया के सबसे बड़े समागमों में से एक महाकुंभ में देखभाल और आरामदायक सुविधाएं प्रदान करने के लिए एक कदम आगे बढ़ाया है। सिप्ला हेल्थ अपने प्रमुख ब्रांडों ओमनी जेल सिप्ला डाइन और प्रोलाइट के माध्यम से समर्पित राहत सेवा केंद्र स्थापित किया है। महाकुंभ के दौरान लंबी दूरी तक पैदल चलने और भीड़ भाड़ वाले इलाकों में जाने से जोड़ों में दर्द मामूली चोट और शरीर में पानी की कमी जैसी असुविधा का सामना करना पड़ सकता है।

महाकुंभ वैश्विक एकता और आध्यात्मिक समरसता का संगमः गुरु आत्मा नांबी

संवाददाता। महाकुंभ नगर

प्रयागराज का कुंभ मेला इस बार एक नई मिसाल पेश कर रहा है। जहां दुनिया भर के 42 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालु गंगा यमुना और सरस्वती के पवित्र संगम पर एक साथ जुटे हैं। यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि मानवता और भाईचारे का अद्भुत प्रतीक बन चुका है।

जहां हिंदू ईसाई और विभिन्न धर्मों के लोग एक साथ मिलजुलकर इस दिव्य उत्सव का हिस्सा बन रहे हैं। कुंभ मेला में एचआरडीएस इंडिया जो एक गैर सरकारी संगठन है ने कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के साथ मिलकर श्रद्धालुओं के लिए अनूठा आयोजन किया है।

लाखों श्रद्धालुओं के लिए मुफ्त भोजन की व्यवस्था की गई है ताकि वह इस विशाल आयोजन के बीच भूखे न रहें। इसके अलावा एच आर डी एस इंडिया ने शिव भक्तों के लिए गंगा स्नान के बाद आराम करने के लिए विशेष टेंट भी लगाए हैं।

जहां वह कुछ देर विश्राम कर अपनी यात्रा की थकान मिटा सकते हैं। जलपान के साथ साथ एच आर डी एस इंडिया आयुर्वेदिक उपचार देकर श्रद्धालुओं की सेहत का भी ख्याल रख रहा है।

वहीं साफ-सफाई के अभियान के तहत संगठन के स्वयंसेवक मेला क्षेत्र को स्वच्छ बनाए रखने में जुटे हुए हैं। इस अद्भुत प्रयास से कुंभ मेला न सिर्फ आध्यात्मिकता का प्रतीक बन रहा है बल्कि पर्यावरण की पवित्रता को भी संरक्षित किया जा रहा है।

इस वर्ष के कुंभ मेला में कई प्रमुख हस्तियों की उपस्थिति रही है। जिनमें भारत के प्रधानमंत्री राष्ट्रपति राज्य मंत्री मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री शामिल हैं।

इसके साथ ही अदानी अंबानी कुमार मंगलम बिड़ला और स्टीव जॉब्स की पत्नी जैसी कॉर्पोरेट दुनिया की प्रमुख हस्तियां भी प्रयागराज पहुंची हैं। गुरु आत्मा नांबी का कहना कि इस भव्य आयोजन में दुनियाभर से आई भारी संख्या में उपस्थिति यह साबित करती है कि कुंभ मेला केवल एक धार्मिक आयोजन ही नहीं है बल्कि वैश्विक एकता और आध्यात्मिक समरसता का एक शानदार उदाहरण है।

वहीं एच आर डी एस इंडिया के संस्थापक सचिव अजी कृष्णन ओएसडी साजी वी करुणाकरण और अमेरिका से आए जगदीश और जय ने भी स्वामी जी के साथ गंगा में पवित्र स्नान किया।

महाकुंभ मेला में हैंडलूम प्रदर्शनी बनी लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र

महाकुंभ नगर। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कुंभ नगरी के सेक्टर एक में त्रिवेणी मार्ग परेड मैदान पर हैंडलूम प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है जो आने वाले श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। प्रदर्शनी में श्रद्धालु हैंडलूम से बने उत्पादों की शानदार प्रदर्शनी का अवलोकन कर रहे हैं। प्रदर्शनी में साड़ी सलवार सूट कुर्ता पायजामा जैकेट आदि जैसे लोकप्रिय उत्पादों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। प्रदर्शनी में घर के पर्दे सोफे के कवर आदि भी शामिल है। प्रदर्शनी का उद्घाटन एमएसएमई खादी ग्रामोद्योग रेशम उत्पादन कपड़ा मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार राकेश सचान ने किया है। यह प्रदर्शनी 26 फरवरी तक चलेगी। इस प्रदर्शनी में लगभग विभिन्न प्रकार के 77 स्टॉल्स लगें हैं। मंत्री श्री सचान ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मुख्यमंत्री हैंडलूम एवं पावर लूम उद्योग विकास योजनाएं संचालित की जा रही हैं। जिसके अंतर्गत पावर लूम बुनकरों के लिए पावर लूम के क्रय मूल्य का साठ प्रतिशत अधिकतम पचहत्तर हजार एक लूम तथा डेढ़ लाख रुपए दो लूम के लिए सब्सिडी दी जा रही है। उन्होंने हथकरघा उद्योग की तरफ लोगों का ध्यान खींचते हुए यह भी कहा कि कठिन दौर से गुजर रहा है और अब यह उस सीमा तक पहुंच गया है।

हाईस्कूल एवं इंटर बोर्ड परीक्षाएं 24 फरवरी से प्रारम्भ

संवाददाता। अंबेडकर नगर

हाईस्कूल एवं इंटर बोर्ड परीक्षाएं 24 फरवरी से शुरू होगी। परीक्षाओं को शांतिपूर्ण माहौल में नकल विहीन और सुचित्रा पूर्ण ढंग से संपन्न करने के लिए जिला प्रशासन के साथ ही साथ शिक्षा विभाग द्वारा अपनी समस्त तैयारी पूर्ण कर ली गई हैं।

यूपी बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी को अंतिम रूप देने के लिए राजकीय एलोपैथिक मेडिकल कॉलेज, सद्दरपुर, के आडिटोरियम हॉल में जिलाधिकारी अविनाश सिंह व पुलिस अधीक्षक केशव कुमार की अध्यक्षता में प्रशिक्षण शिविर एवं बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें बोर्ड परीक्षाओं को लेकर समस्त जोनल, सेक्टर, स्टेटिक मजिस्ट्रेट, केंद्र व्यवस्थापक, सहायक केंद्र व्यवस्थापक, बाह्य केंद्र व्यवस्थापक एवं सचल दल और विभिन्न व्यवस्थाओं के प्रभारियों को उनके दायित्वों की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

इस अवसर पर जिला विद्यालय निरीक्षक ने बताया कि इस वर्ष जनपद में कुल 113 परीक्षा केंद्रों पर हाई स्कूल एवं इंटरमीडिएट की परीक्षा संपन्न होगी। जिसमें हाई स्कूल के कुल 35254 तथा इंटरमीडिएट के कुल 36117 परीक्षार्थी कुल 71371 परीक्षार्थी सम्मिलित होंगे। हाई स्कूल की परीक्षा प्रथम पाली में पूर्वाह्न 8ः30 से 11ः45 बजे तक तथा इंटरमीडिएट की परीक्षाएं द्वितीय पाली में अपराह्न 2ः00 से 5ः15 बजे तक होंगी। उन्होंने बताया कि परीक्षा को सुचितापूर्ण ढंग से संपन्न कराए जाने की दृष्टिगत समस्त परीक्षा केंद्रों को कल 5 जोन व 27 सेक्टर में विभाजित किया गया है। प्रत्येक जोन में एक-एक जोनल मजिस्ट्रेट, प्रत्येक सेक्टर में एक-एक सेक्टर मजिस्ट्रेट के साथ-साथ प्रत्येक परीक्षा केंद्र पर एक-एक स्टैटिक मजिस्ट्रेट एवं एक-एक केंद्र व्यवस्थापक एवं वाह्य केंद्र व्यवस्थापक लगाए गए हैं। इसी के साथ ही 6 सचल दल बनाए गए हैं। उन्होंने बताया कि समस्त परीक्षा केंद्रों एवं परीक्षा कक्षों में सीसीटीवी कैमरे एवं वॉइस रिकॉर्डर की भी व्यवस्था सुनिश्चित कर ली गई है। परीक्षा पर सतत निगरानी हेतु कंट्रोल रूम की स्थापना कर दी गई है।

इस अवसर पर जिलाधिकारी ने प्रत्येक दशा में बोर्ड परीक्षा को नकल विहीन एवं सूचितापूर्ण ढंग से संपन्न कराए जाने हेतु ड्यूटी पर लगे समस्त मजिस्ट्रेट एवं कार्मिकों को निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि सभी मजिस्ट्रेट एवं केंद्र व्यवस्थापक सहित समस्त कर्मचारी अपनी ड्यूटी के प्रति सतर्क रहें, अपने दायित्वो का सम्यक निर्वहन करें और किसी भी प्रकार की लापरवाही ना बरतें। उन्होंने समस्त मजिस्ट्रेटों एवं केंद्र व्यवस्थापकों को आपस में समन्वय स्थापित कर अपने दूरभाष नंबरों का आदान-प्रदान कर लेने तथा अपने-अपने केंद्रों का पुनः भौतिक निरीक्षण कर परीक्षा से संबंधित समस्त मूलभूत सुविधाओं यथा प्रकाश, पेयजल, साफ सफाई, डेस्क, शौचालय आदि की उपलब्धता समय से सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी परीक्षा केंद्रों पर सीसीटीवी एवं वॉइस रिकॉर्डर की क्रियाशीलता को तकनीकी विशेषज्ञों के साथ आवश्यक जांच लें। उन्होंने कहा कि संवेदनशील एवं अति संवेदनशील केंद्रों पर विशेष निगरानी रखी जाए।

इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक ने कहा कि सुचिता पूर्ण परीक्षा कराने हेतु प्रशासन पूरी तरह से कटिबद्ध है। परीक्षा में किसी भी प्रकार की लापरवाही करने वाले पर कठोरतम कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा की परीक्षा से संबंधित किसी भी संदेह की जानकारी तत्काल सक्षम अधिकारी को अवश्य उपलब्ध कराएं। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व एवं जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा परीक्षा को सकुशल संपन्न कराए जाने हेतु माननीय आयोग के विभिन्न दिशा निर्देशों की मजिस्ट्रेट एवं केंद्र व्यवस्थापकों को जानकारी प्रदान की। इसके पूर्व जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक द्वारा मां सरस्वती के छायाचित्र पर माल्यार्पणकर एवं दीप प्रज्वलित कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

चित्रकूट की देवंगना घाटी में मिले प्रागैतिहासिक युगीन दुर्लभ शैलाश्रय

चित्रकूट। जिला मुख्यालय कर्वी से पांच किमी पूर्व देवांगना एयरपोर्ट की घाटी के उत्तरी हिस्से में विन्ध्यपर्वत में गुफाएं मौजूद हैं। इन गुफाओं में हजारों साल पुराने दुर्लभ प्रागैतिहासिक युगीन शैलाश्रय आज भी मौजूद हैं। इन गुफाओं में पहुंचने के लिए कलेक्ट्रेट के पास से एक मार्ग गणेश बाग होते हुए सिद्धपुर गांव को जाता है। गांव से पूर्व दिशा में ही रास्ता जंगल की ओर जाता है। यह मार्ग गांव के निवासी लाल प्रताप सिंह की बगिया होते हुए जंगल में पहुंच जाता है।

यहां जंगल की तलहटी से ऊपर तीन किमी की उंचाई पर तमाम गुफाएं दिखाई पड़ती हैं। यह गुफाएं प्रागैतिहासिक युगीन सभ्यता और संस्कृति का निदर्शन प्रस्तुत करती हैं। इस पहाड़ी में गांव बुकरहन से लेकर बांके सिद्ध तक पगडंडी और दुर्गम जंगली रास्ता है के बीच पांच गुफाएं हैं। इन गुफाओं में आज भी प्रागैतिहासिक कालीन दुर्लभ शैल चित्र मौजूद हैं। इनमें बुकरहन तथा बांके सिद्ध की दोनों गुफाएं पुरातत्व व इतिहास की दृष्टि से बहुत समृद्धशाली हैं। विशेष रुप से बुकरहन की गुफा प्राकृतिक दृष्टि से बहुत सुंदर है। यहां के दुर्लभ शैल चित्र, कल कल बहता हुआ झरना, सैकड़ों की तादाद में पत्थरों पर लगे हुए बड़े बड़े मधुमक्खियों के छत्ते, मधुमक्खियों के आवाज से गुंजायमान भयावह गुफा का वातावरण, प्रागैतिहासिक कालीन चट्टान पर मौजूद दो बड़े चरण चिन्ह, एक चट्टान पर मौजूद शिवलिंग के निशान और झरने का स्वास्थ्य वर्धक सुपाच्य जल मौजूद है। रास्ता जोखिम भरा, घनघोर, निर्जन व झरना मौजूद होने के कारण जंगली जानवरों का भय बना रहता है। निर्जन गुफाओं में जंगली जानवरों के भी आशियाने हैं।

इतिहासकार शिक्षक डॉ संग्राम सिंह ने प्रत्यक्ष अवलोकन के आधार पर बताया है कि बुकरहन की गुफाएं प्रागैतिहासिक कालीन सभ्यता व संस्कृति के गौरवगाथा की साक्षी हैं। यहां आदिम मानव इन्हीं गुफाओं में रहता था। यहां हेमेटाइट प्रकार का एक अयस्क मिलता था। उस समय का मानव पशुओं की चर्बी और प्राकृतिक गोंद से लाल रंग का गाढ़ा लेप तैयार करते थे तथा दातून की कूंची से इन्हीं गुफाओं की शिलाओं पर चित्र बनाते थे। इन चित्रों का वर्ण विषय तत्कालीन मानव के सामाजिक जीवन का निरुपण था।

बुकरहन की मुख्य गुफा में एक बड़ी शिला में एक साथ एक बड़ी शिला पट्टिका में एक सैकड़ा से अधिक चित्र मौजूद हैं। जिसमें बड़े-बड़े मानवों की आकृतियां व शिकार का अंकन दिखाई देता है। यह दुर्लभ शैल चित्र अरण्य तीर्थ चित्रकूट के अंचल में मिल रहे शैलाश्रयों से बहुत विशिष्ट है। चित्रों का इतना बड़ा विशिष्ट चित्रांकन पूरे चित्रकूट में कहीं नहीं दिखाई पड़ता है।

डॉ संग्राम सिंह ने बताया कि पहाड़ की तलहटी में पाषाण कालीन लघुपाषाणोपकरणों के प्रमाण भी मिले हैं। इनमें हैण्डेक्स, क्लीवर, कुल्हाड़ी, चिमटी और लोंढे जैसे तमाम उपकरणों के साक्ष्य मिले हैं। मूलतः चित्रकूट के सिद्धपुर का बुकरहन और बांके सिद्ध प्रागैतिहासिक कालीन सभ्यता और संस्कृति के संवाहक स्थल हैं। इन स्थलों को संरक्षित कराने जाने की महती आवश्यकता है। यहां पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं।

डीएम ने की जिला स्वास्थ्य समिति शासी निकाय की समीक्षा

संवाददाता। सोनभद्र

जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह की अध्यक्षता में जिला स्वास्थ्य समिति शासी निकाय की बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने निर्माण कार्यों का अनुश्रवण और निर्मित कार्यों का वास्तविक उपयोग, विभिन्न स्वास्थ्य इकाईयों में ई0डी0एल0 के मानक के अनुसार दवाईयों की उपलब्धता, एन0एच0एम0 के तहत संविदा चिकित्सकों की तैनाती की स्थिति, आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, नियमित टीकाकरण, मातृ स्वास्थ्य कार्यक्रम, बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम, रोगी कल्याण समिति की बैठकों की स्थिति, एम्बुलेंस सेवाएं, राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन आदि बिन्दुओं की बारी-बारी से गहनता से समीक्षा की।

इस दौरान जिलाधिकारी ने आयुष्मान कार्ड बनाने के कार्यों की समीक्षा की, तो आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रगति काफी धीमी पायी गयी

नोडल अधिकारी बिना सूचना के बैठक में अनुपस्थित मिले, जिस पर नाराजगी व्यक्त करते हुए जिलाधिकारी ने वेतन भुगतान न करने के निर्देश मुख्य चिकित्साधिकारी को दियें। उन्होंने कहा कि जनपद में संचालित चिकित्सालयों का निरीक्षण कर भौतिक सत्यापन कराया जाये, सत्यापन में अगर बिना रजिस्टर्ड अवैध रूप से संचालित चिकित्सालय पाया जाता है, तो सत्यता की जॉच कराते हुए सम्बन्धित के खिलाफ विधिक कार्यवाही सुनिश्चित की जाये।

अगर ऐसे चिकित्सालय जो पूर्व में बिना रजिस्टर्ड अवैध रूप से संचालित होते पकड़े गये हों और निर्देश के बाद भी संचालित हैं, तो उनकी सूची उपलब्ध कराते हुए विधिक कार्यवाही करने के साथ ही जिम्मेदार सम्बन्धित के खिलाफ एफ0आई0आर0 भी दर्ज कराया जाये। बैठक के दौरान यह तथ्य प्रकाश में आया कि कुछ मेडिकल पर मेडिकल स्टोर के आड़ में प्रैक्टिस किया जा रहा है और बिना रजिस्ट्रेशन के पैथालाजी का भी संचालन किया जा रहा था, जो पूर्णतया अवैध है।

ऐसे पैथालाजी व मेडिकल स्टोर का स्थलीय सत्यापन करते हुए विधिक कार्यवाही करने के साथ ही नोटिस जारी किया जाये। नेत्र ईलाज के निर्धारित लक्ष्य 700 के सापेक्ष 3 नेत्र सर्जन द्वारा कुल 516 मरीजों का ही ईलाज हो पाया था, जो लक्ष्य से काफी कम है, जिस पर जिलाधिकारी ने नाराजगी व्यक्त करते हुए सी0एम0एस0 को निर्देशित किया गया कि सम्बन्धित नेत्र सर्जन के खिलाफ स्पष्टीकरण जारी करते हुए निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप प्रगति में तेजी लाया जायें।जिलाधिकारी ने फाईलेरिया मुक्ति अभियान के प्रगति धीमी पाये जाने पर चतरा के डी0सी0पी0एम0 को चेतावनी जारी करने के निर्देश दिये

उन्होंने 1 से 19 वर्ष तक के सभी नागरिकों को चूसकर खाने वाली एल्बेन्डाजॉल दवा का प्रयोग करने कहां जिससे पेट में उत्पन्न होने वाले कीड़े नष्ट हों सकें। उन्होने कहा कि जिला चिकित्सालय समुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र व प्राथमिक स्वास्थ्य केन्दों पर मरीजो को दवा अस्पताल परिसर से उपलब्ध करायी जाये बाहर की दवा मरीजों को न लिखी जायें।।

सेवा के उपलक्ष्य में विशेष सम्मान से नवाजे गए स्वामी सुनील दास

महाकुंभ नगर। महाकुंभ मेले में राजस्थान जोधपुर के जूना अखाड़ा रामानुज श्री श्री 1008 साइनाचार्य स्वामी अचलानंद गिरी महाराज ने स्वामी सुनील दास को विशेष सम्मान प्रदान किया है। यह सम्मान स्नेहम आश्रम द्वारा 50 वर्षों से किए जा रहे अन्नदान भोजन दान की सेवा के उपलक्ष्य में दिया गया। स्वामी सुनील दास ने भजन और प्रवचन का नेतृत्व किया तथा साधुओं के भोजन समारोह में भी भाग लिया। महाकुंभ मेले में यह सम्मान एक दुर्लभ और दिव्य आशीर्वाद था। भगवान की दुर्लभ कृपा स्वामी सुनील दास पर आज के महाकुंभ मेले में बरसी जो अब से 144 वर्षों के बाद ही फिर से आयोजित होगा। इससे पूर्व माघ पूर्णिमा के पावन अवसर पर स्वामी सुनील दास ने प्रयागराज के त्रिवेणी संगम में विश्व शांति के लिए पूजा का आयोजन किया। इस समारोह में पूर्व इतालवी प्रधानमंत्री के पोते और स्नेहम आश्रम के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष दांते ने भी भाग लिया। स्वामी सुनील दास ने जूना अखाड़ा रामानुज के अनुयायियों को भी आशीर्वाद प्रदान किया। स्वामी सुनील दास एक आध्यात्मिक गुरु और केरल भारत में मुथलमाडा स्नेहम चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक हैं।

एनटीपीसी विंध्याचल को चार प्रतिष्ठित पुरस्कारों से किया गया सम्मानित

संवाददाता। सोनभद्र

एनटीपीसी विंध्याचल ने एक बार फिर अपनी उत्कृष्टता को साबित करते हुए आईपीएस सम्मेलन में चार प्रतिष्ठित स्वर्ण शक्ति पुरस्कारों पर कब्जा जमाया। इनमें ओ एंड एम उत्पादकता के लिए स्वर्ण शक्ति पुरस्कार, मानव संसाधन प्रैक्टिसेस के लिए स्वर्ण शक्ति पुरस्कार, स्वर्ण शक्ति पुरस्कार में कुल विजेता और बिजनेस एक्सीलेंस के लिए चैंपियन और ओवरऑल एक्सीलेंस पुरस्कार शामिल हैं। इस तरह की सफलताओं का श्रेय एनटीपीसी विंध्याचल के परियोजना प्रमुख एवं कर्मचारियों की वचनबद्धता एवं उत्कृष्ट कार्य शैली तथा समर्पण को जाता है।

एनटीपीसी विंध्याचल की यह सफलता उसकी ऑपरेशनल एक्सीलेंस की दिशा में लगातार किए गए प्रयासों का परिणाम है। उच्च गुणवत्ता वाले रख रखाव, कार्यकुशलता में सुधार और

पर्यावरणीय स्थिरता पर विशेष ध्यान केंद्रित करते हुए पावर जनरेशन में नई ऊंचाइयां हासिल की हैं और विश्वसनीयता में महत्वपूर्ण वृद्धि की है। इसके अलावा, एनटीपीसी विंध्याचल की सफलता के पीछे एक और महत्वपूर्ण कारण उसका पीपुल्स फ़र्स्ट फिलोसोफी है। यह न केवल कर्मचारियों के लिए निरंतर सीखने और नेतृत्व विकास के अवसर प्रदान करता है, बल्कि इसके मानव संसाधन प्रैक्टिसेस ने एक प्रेरित और समर्पित कार्यबल का निर्माण किया है।

यह प्रतिष्ठित पुरस्कार ई सत्य फणि कुमार कार्यकारी निदेशक और सुजय कर्माकर, को प्राप्त हुआ। एनटीपीसी विंध्याचल की यह अभूतपूर्व जीत उसकी उत्कृष्टता की दिशा में निरंतर प्रयास और कर्मचारियों को सशक्त बनाने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह सफलता एनटीपीसी विंध्याचल को भारतीय पावर क्षेत्र में एक और मजबूत कदम बढ़ाने में मदद करेगी।एनटीपीसी विंध्याचल को विभिन्न क्षेत्रो में उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्राप्त अवार्डों पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कार्यकारी निदेशक ई सत्य फणि कुमार ने सभी परियोजना कर्मियों तथा विभिन्न यूनियन एवं एसोशिएशन के प्रतिनिधियों को बधाई देते हुए इसे आगे भी बनाए रखने पर बल दिया।

महिला आयोग की सदस्य ने किया जिला अस्पताल का निरीक्षण

चित्रकूट। बुंदेलखंड के आकांक्षी जनपद चित्रकूट के दौरे पर आयी उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्य अर्चना पटेल ने जिला अस्पताल का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान आयोग की सदस्य श्रीमती पटेल ने आपरेशन थियेटर,प्रसूता वार्ड,आकस्मिक चिकित्सा वार्ड का निरीक्षण कर भर्ती महिला मरीजों से अस्पताल में मिल रही सुविधाओं के बारे में जानकारी ली। इस दौरान आयोग की सदस्य अर्चना पटेल ने मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉक्टर शैलेन्द्र कुमार को निर्देश दिया कि अस्पताल में इलाज कराने आने वाले मरीजों को शासन की मंशानुरूप निशुल्क दवाओ के साथ बेहतर इलाज की सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

कुंभ से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए जगह जगह-लगाए गये शिविर

सोनभद्र। घोरावल विधानसभा के हिन्दुआरी तिराहे पर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा द्वारा दिए गए निर्देश के क्रम में लगातार तीसरे दिन गुरुवार को महाकुंभ प्रयागराज स्नान करके आने व जाने वाले श्रद्धालुओं को जलपान की व्यवस्था कराते हुए सेवा भाव में समर्पित घोरावल विधायक डॉ अनिल कुमार मौर्य व भाजपा अनुसूचित मोर्चा के क्षेत्रीय अध्यक्ष व सदर ब्लाक प्रमुख अजीत रावत के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं द्वारा उड़ीसा छत्तीसगढ़ मध्य प्रदेश झारखंड आंध्र प्रदेश से महाकुंभ जाने वाले श्रद्धालुओं का निष्ठा भाव से सेवा किया जा रहा है। जिससे श्रद्धालु भी राहत महसूस कर रहे है। घोरावल विधायक अनिल मौर्य ने कहा कि पवित्र संगम में श्रद्धा और आस्था से ओत-प्रोत साधु-संतो, श्रद्धालुओं, कल्पवासियों, स्नानार्थियों और गृहस्थों के स्नान ने नया रिकॉर्ड स्थापित किया है।महाकुम्भ में प्रतिदिन लाखों करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु पुण्य स्नान का फल प्राप्त कर रहे हैं। स्नान पर्व पर यह संख्या करोड़ों में पहुंच रही है। जो अपने आप में अद्वितीय है। इस मौके जिला उपाध्यक्ष उदय नाथ मौर्य राजेश मिश्रा अंकुर सिंह मनीष पटेल रामसेवक मौर्य सुरेंद्र मौर्य रामबली मौर्य दिलीप मौर्य राहुल पटेल राजन तिवारी आदि लोग सेवा भाव में लगे रहे।

यंग लायर्स एसोसिएशन की कार्यकारिणी का हुआ गठन

प्रयागराज। यंग लायर्स एसोसिएशन हाईकोर्ट इलाहाबाद की नई कार्यकारिणी का गठन कर दिया गया। जिसमें अध्यक्ष विशेष राजवंशी वरिष्ठ उपाध्यक्ष दिनेश कुमार मिश्र उपाध्यक्ष के पांच पदों पर अभिजीत प्रताप सिंह भाव्या सहाय हैदर बक्शी विपुल दुबे और कुमार कार्तिकेय महासचिव सुबोध त्रिपाठी संयुक्त सचिव के चार पदों पर श्रीशचंद्र शिवम अग्रवाल विनीत तिवारी और श्रेष्ठ प्रताप सिंह बनाए गए हैं। वहीं कोषाध्यक्ष ऋतुकर गुप्ता और 15 गवर्निंग काउंसिल सदस्यों में आनंद प्रकाश सिंह गौरव पांडेय चंदन भगत धनंजय प्रताप करण दीनानाथ उपाध्याय नवीन कुमार श्रीवास्तव किशन द्विवेदी अग्रेश अग्रवाल शुभम त्रिपाठी अभिषेक शर्मा सौरभ पटेल देवांश मिश्र अरुण पटेल प्रणय मिश्र और सुशील कुमार शुक्ल निर्वाचित घोषित किए गए हैं। नए पदाधिकारियों की घोषणा निवर्तमान पदाधिकारियों की कमेटी द्वारा की गई। जिसमें पूर्व अध्यक्ष संतोष कुमार त्रिपाठी पूर्व महासचिव जे बी सिंह पूर्व वरिष्ठ उपाध्यक्ष आर पी तिवारी उपाध्यक्ष मनोज निगम और उपाध्यक्ष भानु देव पांडेय शामिल थे।

विधायक ने भूमि पूजन कर क्षेत्रवासियों को दी लघु सेतु की सौगात

चित्रकूट। जिले के ग्राम पंचायत मवई कला स्थित कौशिकी नदी के ऊपर लघु सेतु निर्माण के कार्य का शुभारम्भ मानिकपुर विधायक अविनाश चंद्र द्विवेदी ने भूमि पूजन कर किया। जिसके साथ ही निर्माण कार्य भी प्रारंभ किया गया। विधायक ने बताया कि उन्होंने इसके लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री ने अनुरोध किया था। जिसके बाद उत्तर प्रदेश सरकार ने इसके लिए दो करोड़ 40 लाख 57 हजार की धनराशि स्वीकृत की है। जिसे लोक निर्माण विभाग द्वारा बनाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि मऊ-मानिकपुर क्षेत्र की बुनियादी समस्याओं का प्राथमिकता से निराकरण कराया जाएगा। इस मौके पर भाजपा नेता जगदीश गौतम जिला पंचायत सदस्य विनीत द्विवेदी, आदि रहे।

बांग्लादेश में अनिश्चितता

यूनुस सरकार पर दबाव

बांग्लादेश की सेना ने बढ़ती अराजकता एवं संबंधों में गिरावट के समय यह कह कर यूनुस सरकार पर दबाव बढ़ा दिया है कि वह भारत के साथ मजबूत संबंध चाहती है। बांग्लादेश वर्तमान समय में राजनीतिक अनिश्चितता तथा अशांति का शिकार है क्योंकि मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली सरकार तथा देश में शक्तिशाली सैनिक अवस्थापना के बीच भी विरोधाभास पैदा हो गए हैं। हाल ही में ढाका इंटरनेशनल मैराथन, 2025 में सेना प्रमुख जनरल वकारुज्जमा ने सिविलियन सरकार के प्रति सेना के दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन का संकेत दिया। उन्होंने शांति, स्थायित्व तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग, खासकर भारत के साथ सहयोग पर जोर दिया। इससे सेना की कतारों में यूनुस प्रशासन की नीतियों व शासन के दृष्टिकोण के प्रति बढ़ते विरोध का संकेत मिलता है। बांग्लादेश की सेना ने ऐतिहासिक रूप से आंतरिक स्थायित्व बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और अक्सर राजनीतिक संकट काबू के बाहर जाने पर उसने हस्तक्षेप किया है। यूनुस सरकार के नेतृत्व में राजनीतिक तनाव बढ़ने के कारण लगता है कि सेना स्वयं को प्रशासन से दूर रख रही है जो देश के सत्ता समीकरणों में बदलाव का संकेत है। यूनुस सरकार से सेना के असंतोष के अनेक कारण हो सकते हैं। इससे संकेत मिलता है कि सेना को यूनुस सरकार के नेतृत्व में खराब होती आर्थिक स्थितियों तथा बढ़ते सामाजिक तनाव की चिन्ता है। लगातार जारी राजनीतिक अशांति के कारण विदेशी

निवेशों तथा आर्थिक प्रगति को नुकसान पहुंच सकता है, जबकि ये दोनों देश के विकास के लिए आवश्यक हैं।

सेना को संभवत: प्रशासनिक कमियों तथा सुरक्षा सरोकारों, खासकर बढ़ती राजनीतिक हिंसा और विरोध प्रदर्शनों की संख्या बढ़ने से चिन्ता है। युनुस सरकार इन व्यवधानों से नहीं निपट पा रही है जिनको स्थायित्व सुनिश्चित करने की विफलता के रूप में देखा जा सकता है। यह सेना के लिए खास चिन्ता का विषय है। बांग्लादेश का सैनिक नेतृत्व प्रमुख क्षेत्रीय शक्तियों के साथ मजबूत द्विपक्षीय संबंधों को महत्व देता है। भारत के बारे में जनरल वकार की टिप्पणी से ऐसे व्यावहारिक विदेश नीति दृष्टिकोण के प्रति सेना की इच्छा प्रकट होती है जिसमें लोकरंजक लफ्फाजी के आधार पर बने वैचारिक दृष्टिकोणों के बजाय स्थायित्व तथा परस्पर लाभ को प्राथमिकता मिलती हो। सेना प्रमुख जनरल वकारुज्जमा के बयान में जोर दिया गया है कि भारत एक महत्वपूर्ण पड़ोसी तथा क्षेत्रीय सुरक्षा और आर्थिक सहयोग में प्रमुख साझीदार है। इस बयान से बांग्लादेश की विदेश नीति में रणनीतिक समीक्षा की स्थिति रेखांकित होती है। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश 'अनेक मामलों में भारत पर निर्भर है' तथा दोनों देशों को एक दूसरे के रणनीतिक हितों का सम्मान करना चाहिए। जनरल का यह बयान नई दिल्ली के साथ निकट संबंधों की पैरवी करता लगता है। भारत और बांग्लादेश के बीच गहरे आर्थिक संबंध हैं जिनमें व्यापार, ऊर्जा सहयोग तथा ढांचागत परियोजनायें शामिल हैं। भारत के साथ स्थाई संबंधों से निरंतर आर्थिक वृद्धि तथा क्षेत्रीय कनेक्टिविटी सुनिश्चित होती है। आतंकवाद-विरोधी प्रयासों में सहयोग तथा सीमा प्रबंधन शांति और स्थयित्व बनाए रखने के लिए जरूरी है। बांग्लादेश का सैनिक नेतृत्व शायद भारत के साथ मजबूत संबंधों के पक्ष में है क्योंकि इसका अर्थ संतुलित विदेश नीति अपनाना होगा। इससे यह सुनिश्चित होगा कि ढाका किसी क्षेत्रीय शक्ति पर अत्यधिक निर्भर न होने पाए। वर्तमान समय में बांग्लादेश में सिविल सरकार और सेना के बीच बढ़ती विसंगतियों का संकेत मिलता है, जबकि आने वाले महीनों में देश की दिशा निर्धारित करने में सिविलियन नेतृत्व तथा सैनिक अवस्थापना के बीच संतुलन बनाए रखना जरूरी होगा।

'मन की बात' से रेडियो का प्रचार

'विश्व रेडियो दिवस' मनाते समय 'मन की बात' हमें याद दिलाती है कि संप्रेषण के आधार वही बने हुए हैं। इनमें लोगों को जोड़ना, प्रेरित करना तथा उनको एकसाथ लाना शामिल है।

संतोष मैथ्यू
(लेखक, एसोसिएट प्रोफेसर हैं)

रेडियो केवल एक माध्यम न होकर एक ऐसी जीवनरेखा है जो सीमाओं को पार कर लोगों को एकसाथ जोड़ती तथा उनके स्वरों को विस्तार देती है। 'विश्व रेडियो दिवस' मनाते समय दुनिया इस स्थाई मंच की शक्ति का उत्सव मना रही है। भारत इस उल्लेखनीय संचार क्रांति में अग्रणी स्थान पर है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मासिक प्रसारण 'मन की बात' की हाल ही में 118वीं कड़ी प्रसारित हुई। इससे स्पष्ट होता है कि डिजिटल युग में भी रेडियो एक पुनर्जीवन का अनुभव कर रहा है और यह सुशासन, अभिप्रेरणा तथा भावनात्मक राजनय का सर्वाधिक प्रभावी उपकरण सिद्ध हो रहा है।

जब यूनेस्को ने 2011 में 13 फरवरी को विश्व रेडियो दिवस घोषित किया तो इसका उद्देश्य स्पष्ट रूप से जनता में संवाद को बढ़ावा देने, जागरूकता फैलाने तथा सारी दुनिया में समुदायों को एकसाथ लाने में रोडियो का प्रभाव स्वीकार करना था। भारत में 'मन की बात' रेडियो की स्थाई शक्ति का प्रमाण है। 2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस मासिक कार्यक्रम ने दुनिया में एक सबसे बड़े और सर्वाधिक प्रभावी संप्रेषण प्रयोग की शुरुआत की है जो न केवल भारत, बल्कि दुनिया भर के करोड़ों श्रोताओं तक पहुंच रहा है।

कहानी कहने के माध्यम से श्रोताओं से जुड़ने की असाधारण और बेजोड़ क्षमता के कारण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की इस पहल ने दिखा दिया है कि बढ़ते डिजिटल शोर के इस युग में भी रेडियो का महत्व बना हुआ है। ऐसे समय जब बहुत से लोगों ने परंपरागत रेडियो के श्रोताओं में कमी आने की बात कही थी, 'मन की बात' ने रेडियो के महत्व को पुन: परिभाषित कर इसका महत्व बढ़ा दिया है।

प्रधानमंत्री मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम की शक्ति इसकी सरलता और विश्वसनीयता है। इसकी हर कड़ी न केवल नीतिगत चर्चाओं को जन्म देती है, बल्कि यह आम नागरिकों की प्रेरणादायक कहानियों, जमीनी स्तर पर हो रही खोजों, सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय उपलब्धियों की भी चर्चा करती है। इस दृष्टिकोण से 'मन की बात' की 118वीं कड़ी भी कुछ अलग नहीं थी। इसमें उन विमर्शों को शामिल किया गया था जो राष्ट्र-निर्माण की भावना पैदा करते हैं, पर्यावरण के प्रति चेतना का विस्तार करते हैं तथा सामूहिक जिम्मेदारी की भावना पर जोर देते हैं। अपने राष्ट्रीय आकर्षण के साथ ही 'मन की बात' भारत की भावनात्मक राजनय का महत्वपूर्ण उपकरण बन गया है। दुनिया भर में रहने वाले अनिवासी भारतीय बड़ी जिज्ञासा से इस कार्यक्रम को सुनते हैं और इस प्रकार वे अपनी जन्मभूमि से एक प्रकार से जुड़ाव का अनुभव करते हैं। इसका प्रसारण राष्ट्रीय सीमाओं के पार जाता है और अक्सर इसका अनेक भाषाओं में अनुवाद भी होता है।

'मन की बात' का प्रसारण दक्षिण एशिया की अनेक क्षेत्रीय भाषाओं में होता है जिससे पड़ोसी देशों के साथ भारत के राजनयिक व सांस्कृतिक संबंध मजबूत होते हैं। विश्व में प्रमुख शक्ति के रूप में उभर रहे भारत ने अपनी भावनात्मक राजनय का विस्तार करने के लिए रेडियो को एक माध्यम बनाया है। इससे भारत राष्ट्र की ऐसी छवि उभरती और मजबूत होती है जिसमें संवाद, साझा विरासत तथा सहयोग को महत्व दिया जाता है। दक्षिण एशिया दुनिया का एक ऐसा क्षेत्र है जो गहरे ऐतिहासिक सांस्कृतिक व भाषाई संबंधों से बंधा है। इन स्थितियों में विभिन्न भाषाओं में प्रसारित 'मन की बात' एक सेतु का काम करता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस अत्यधिक लोकप्रिय कार्यक्रम के विषयों में आत्मनिर्भरता, समुदाय-संचालित पहलें, पर्यावरण का टिकाऊपन तथा युवाओं का सशक्तीकरण शामिल हैं। ये विषय न केवल भारत के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि ये भारत के पड़ोसी देशों में भी बहुत लोकप्रिय हैं।

ऐसे समय में जब दक्षिण एशिया में अक्सर समन्वय के प्रयासों को अनेक राजनीतिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है, सांस्कृतिक और सामाजिक आदान-प्रदान के माध्यम के रूप में रेडियो का पुनर्जीवन असाधारण संभावनाओं से भरा लगता है। 'मन की बात' के माध्यम से भारत की रेडियो-राजनय में भी असाधारण संभावनायें सामने आती हैं।

यह दक्षिण एशिया की जनता में गहरे जुड़ावों की उत्प्रेरक शक्ति बन सकता है। इससे साझा विकासोन्मुख विमर्श विकसित हो सकते हैं तथा क्षेत्रीय जनसंख्या के बीच साझा महत्वाकांक्षाओं का विकास भी हो सकता है।

'मन की बात' की 118वीं कड़ी ने यह प्रदर्शित किया है कि रेडियो का प्रयोग सहभागी माध्यम के रूप में कैसे किया जा सकता है। नागरिकों के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संवाद में अक्सर श्रोताओं द्वारा लिखे पत्रों तथा उनके संदेशों को महत्वपूर्ण स्थान मिलता है। जन-केन्द्रित प्रशासन पर इस प्रकार जोर दे कर 'मन की बात' जनता के विभिन्न समूहों के बीच संवाद का विशिष्ट 'स्पेस' तैयार करता है। यह उन सोशल मीडिया प्लेटफार्मों से एकदम अलग है जो अक्सर विभाजित तथा शोर व प्रतिध्वनि से भरे होते हैं। इस कार्यक्रम के माध्यम से रेडियो एक ऐसी एकीकरण शक्ति के रूप में सामने आया है जो जनता को अबाध रूप से तथा गहराई से आपस में जोड़ता है।

'मन की बात' में तमिलनाडु के मछुआरों से लेकर पंजाब के किसानों तथा मेघालय के छात्रों से लेकर गुजरात के उद्यमियों की बातें शामिल होती हैं। इस प्रकार यह कार्यक्रम भाषाई, भौगोलिक व सामाजिक-आर्थिक बाधाओं को पार कर हर भारतीय से से बात करता है। अपनी कहानी कहने की शक्ति के माध्यम से यह कार्यक्रम अनाम नायकों, छोटे बिजनेसों तथा संस्कृति के संरक्षकों के स्वर सामने लाता है। रेडियो हमेशा से प्रभावशाली माध्यम रहा है, पर 'मन की बात' ने परंपरागत प्रसारण को आधुनिक डिजिटल समन्वय से जोड़ कर एक कदम आगे बढ़ाया है। इस कार्यक्रम को एकसाथ अनेक प्लेटफार्मों पर जारी किया जाता है जिनमें सामुदायिक रेडियो स्टेशन, आल इंडिया रेडियो-एआईआर, पाडकास्ट और सोशल मीडिया चैनल शामिल हैं।

इस हाइब्रिड माडल ने सुनिश्चित किया है कि संदेश हर प्रकार की जनसंख्या तक पहुंचे जिसमें ट्रांजिस्टर रेडियो का प्रयोग करने वाले ग्रामीण किसान से लेकर स्मार्टफोन एप से जुड़ने वाले पेशेवर शहरी लोग तक शामिल हैं। 'विश्व रेडियो दिवस' पर जब दुनिया भर में रेडियो के पुनर्जीवन और प्रभाव पर चर्चा हो रही है, ऐसे में 'मन की बात' एक उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में सामने आता है कि कैसे इस माध्यम का प्रयोग राष्ट्र-निर्माण व राजनय में किया जा सकता है। दुनिया भर के देश भारत द्वारा एक उपकरण के रूप में रेडियो के प्रयोग से सबक सीख सकते हैं जो रचनात्मक संवाद, नेतृत्व से संवाद तथा वैश्विक संपर्क का माध्यम बन गया है।

ऐसे युग में जब ध्रुवीकरण व्यापक हो गया है, रेडियो की क्षमता सामूहिक चेतना विकसित करने के रूप में सामने आई है। यह विशाल व विविधतापूर्ण भारत के लिए ज्यादा मूल्यवान है। 'मन की बात' में उन स्वरों को एकीकृत किया गया है जो लोगों की महत्वाकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। स्वर की शक्ति, शब्दों के जादू तथा मौखिक कहानी कहने जैसे गहन तत्वों के कारण यह कार्यक्रम एक राजनीतिक पहल से आगे बढ़ कर एक सांस्कृतिक अवधारणा बन गया है। दुनिया इस समय परंपरागत संप्रेषण प्लेटफार्मों को पुनर्जीवित करने के तरीके खोज रही है।

ऐसे में भारत के उदाहरण से स्पष्ट है कि रेडियो न केवल जीवंत बना हुआ है, बल्कि यह डिजिटल युग में भी फल-फूल रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का मासिक 'मन की बात' कार्यक्रम इस पुनर्जीवन का नेतृत्व करते हुए यह सिद्ध कर रहा है कि 'डिजिटल शोर' के युग में भी मानवीय स्वरों में एकजुट करने तथा प्रेरित करने की क्षमता बनी हुई है।

एक आस्था, एक जगत

जीवन और मृत्यु नवीनीकरण के एक शाश्वत चक्र में गुंथे हुए हैं, जो आत्मा को विकास के अवसर प्रदान करते हैं।

ब्रह्मकुमार निकुंज
(लेखक, आध्यात्मिक उपदेशक हैं)

हम सभी ने अपने स्कूल के दिनों में एक बूढ़े किसान की साधारण कहानी के माध्यम से प्रसिद्ध मुहावरा एकजुट होकर खड़े रहें, विभाजित होकर गिरें सुना है, जिसने अपनी मृत्युशैया पर अपने बिखरे बेटों को लकड़ियों के एक बंडल के माध्यम से एकता का महत्व सिखाया। वह कहानी आज भी हमारे समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है और यहां तक ??कि लोकप्रिय भी हुई है क्योंकि आधुनिक दुनिया में कलह, फूट, संघर्ष और युद्ध ने अभूतपूर्व अनुपात ग्रहण कर लिया है। आज, मानवता के सामने सबसे कठिन चुनौतियों में से एक विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच आवश्यक सद्भाव स्थापित करना है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि राजनीतिक और धार्मिक नेताओं ने लोगों को एक साझा मंच पर लाने और प्रत्येक धर्म की बेहतर समझ और स्वीकृति बनाने के तरीके और साधन खोजने का बार-बार प्रयास किया है। लेकिन उनके कठिन प्रयासों के बावजूद, बहुत कुछ नहीं बदला है। इसलिए, वर्तमान में सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या विभिन्न धर्म और आस्थाएं कभी एकजुट हो सकती हैं। यदि हाँ, तो कैसे?

अगर हम इतिहास की गलियों में चलें, तो हम पाएंगे कि धार्मिक सद्भाव की आवश्यकता क्यों उत्पन्न हुई, इसका एक महत्वपूर्ण कारण यह है कि मानव इतिहास में सबसे हिंसक युद्ध और संघर्ष धार्मिक असहिष्णुता और घृणा पर आधारित थे। यह एक चौंकाने वाला बयान हो सकता है।

लेकिन यह कठोर वास्तविकता है कि धर्म, जो लोगों को अधिक शांतिपूर्ण और प्रेमपूर्ण बनाने वाले माने जाते हैं, आज दुनिया में कलह और रक्तपात का सबसे बड़ा कारण बन गए हैं।

दुनिया भर में संगठित समूहों को धर्म के नाम पर आतंक फैलाने और दुनिया से बुराई को दूर करने के नाम पर जातीय सफाया करने की कसम खाते हुए देखना बहुत भयावह है। अगर हम सदियों से प्रत्येक धर्म के विकास की बारीकी से जांच करें, तो यह एक दिलचस्प पैटर्न को उजागर करता है। भले ही सभी धर्मों में कुछ सामान्य मूल्य और सिद्धांत हों, लेकिन बहुत सारी गलत धारणाएँ और परस्पर विरोधी मान्यताएँ हैं, जिन्होंने लगातार लोगों के बीच अविश्वास और शत्रुता को बढ़ावा दिया है। यह जानना बहुत ज़रूरी है कि, अपनी स्थापना के समय, हर धर्म में पवित्रता, सच्चाई और एकता की शक्ति थी। धीरे-धीरे, दरारें, गुटबाजी, उथल-पुथल, भ्रम, छल और आध्यात्मिक महत्व से रहित कर्मकांडीय पालन दिखाई देने लगे। इसलिए, आध्यात्मिक मूल्यों को सशक्त बनाने के बजाय, धर्मों ने हठधर्मिता, अनुशासन और बाधाओं को कायम रखा जो लोगों को कई तरह से अलग-थलग कर देते हैं।

कई लोग उन्हीं बुराइयों का शिकार हो जाते हैं जिनके खिलाफ वे उपदेश देते हैं, जैसे सत्ता, सुख और पैसे की लालसा। प्रत्येक धर्म की बेहतर समझ, सहिष्णुता और स्वीकृति हो सकती है, लेकिन जब तक एक या आम विश्वास न हो, एकता नहीं हो सकती। तो, सभी धर्मों को स्वीकार्य एक आम समाधान तक पहुंचने का सबसे अच्छा तरीका क्या है? सर्वोच्च सर्वशक्तिमान द्वारा दिए गए दिव्य ज्ञान के अनुसार, मानव संसार के शाश्वत चक्र में सब कुछ परिवर्तन से गुजरता है, जिसका अर्थ है कि सब कुछ एक परिपूर्ण अवस्था से अपूर्ण, खंडित अवस्था में बदल जाता है। चाहे वह मानव आत्मा हो, प्रकृति हो, धर्म हो या सभ्यता हो, लगभग सब कुछ सतो (शुद्ध), रजो (मिश्रित) और तमो (अशुद्ध) अवस्थाओं से गुजरता है क्योंकि समय चक्र स्वर्ण युग से लौह युग तक घूमता है।

आज हम मानव अस्तित्व के सभी पहलुओं के तमो-प्रधान (सबसे पतित) चरण को देख रहे हैं, और धर्म भी इस परिवर्तन की प्रक्रिया से अछूते नहीं हैं। इसलिए, हम सभी धर्मों में निहित आध्यात्मिकता के संदर्भ में ही एकीकृत आस्था की कल्पना कर सकते हैं। कहा जाता है कि ईश्वर सत्य है, और सच्चा धर्म उस सत्य का प्रतीक है। इसलिए, जब मनुष्य अपने हृदय में उस सत्य को अपना लेंगे, तो एक एकीकृत दुनिया होगी। इसलिए, आइए हम सभी एक एकीकृत आस्था के साथ एकजुट होकर उस नई दुनिया का स्वागत करें जहां सत्य, शांति और सद्भाव कायम रहेगा।

आप की बात

यह कैसा न्याय?

प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की उनके 2 सिख सुरक्षाकर्मियों द्वारा निर्मम हत्या के उपरान्त देश की राजधानी में सिख विरोधी हिंसा जिसमें 3000 से अधिक निर्दोष केशधारियों की हत्या हुई, अब 41 वर्ष बाद एक कांग्रेसी नेता सज्जन कुमार पर हत्या के आरोप सिद्ध हुए हैं और दण्ड के आदेश की सम्भावना है । यह विडम्बना ही है कि जिस हिंसा को तत्कालीन कांग्रेस नेतृत्व का प्रत्यक्ष समर्थन व आशीर्वाद प्राप्त था और उसी कारण दिल्ली में लगातार 3 दिन हिंसा रोकने के कोई प्रयास नहीं हुए उसके लिए न तो सीधे कांग्रेस पर आरोप निर्धारित हुए न सत्ताधारी परिवार पर । यह कोई रहस्य नहीं कि इन्दिरा जी के पुत्र राजीव हिंसा के समय भारत के प्रधानमंत्री थे और उन्होंने उस हिंसा को स्वाभाविक प्रतिक्रिया भी बताया था, उनके समक्ष कांग्रेसियों द्वारा खून का बदला खून से लेंगे जैसे नारे दूरदर्शन पर देखे गए थे । लगता है कांग्रेस और उसके सर्वोच्च परिवार को बचाना ही कोर्ट और मीडिया का उद्देश्य रहा क्योंकि उस हिंसा के वास्तविक दोषी सज्जन, भगत अथवा टाइटलर नहीं राजीव व उनका परिवार और कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व है। 41 वर्ष बाद यदि सज्जन कुमार को अधिकतम दण्ड दे भी दिया जाए तो उसको न्याय नहीं कहा जा सकता बल्कि भारत की कोर्ट प्रक्रिया पर एक बड़ा प्रश्नचिह्न है।

– **डॉ जय प्रकाश**, अंबाला छावनी

विचारणीय प्रश्न

सुप्रीम कोर्ट द्वारा रेवड़ी व मुफ्तखोरी को लेकर विचारोत्तेजक प्रश्न किया गया है कि क्या ऐसा करके हम लोगों को परजीवी नहीं बना रहे हैं ? बेहद विचारणीय है । जब से राजनीतिक दलों द्वारा वोट व सत्ता के लिए मुफ्त की रेवड़ी बांटने का उपक्रम चला है, तब से ही इन अखबारों के पन्नों पर खैरातों को लेकर काफी कुछ लिखा गया है। लेकिन विडंबना की बात है कि राजनीतिक दलों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा बल्कि नई-नई मुफ्त की योजनाओं की घोषणाएं बढ़ती गई। कहीं लाडली बहन के नाम पर तो कहीं लाड़की बहन, न जाने क्या-क्या? इतनी रेवड़ी की घोषणाएं सुन सुन कर कान पक जाए, मगर ये दल-बल वाले नहीं अघाते है । मुफ्तखोरी का एक कुपरिणाम यह भी है कि जब इंसान को मुफ्त में मिलने लग जाता है तो निश्चित ही माले मुफ्त दिलएबेरहम की कहावत चरितार्थ होने लग जाती है । कोई भी काम करना नहीं चाहता क्योंकि अल्लाह दे खाने को तो क्यों जाएं कमाने को ? साथ ही अपवाद स्वरूप लोगों को छोड़ दे तो शत-प्रतिशत यह पैसा शराब/ नशाखोरी में भी जा रहा है । सुप्रीम कोर्ट की यह सीख जमीनी स्तर पर कितनी आत्मसात कर पाएंगे ये राजनीतिक दल यह देखने वाली बात है ! मगर यह कोई पहली बार टिप्पणी नहीं की जा रही है। समय-समय पर पहले भी टिप्पणी की गई, लेकिन देशभक्त जनसेवकों के कानों में जूं तक नहीं रेंगती है।

– **हेमा हरि उपाध्याय**, खाचरोद, उज्जैन

शीर्ष अदालत की फटकार

यों तो रेवड़ी संस्कृति पर सर्वोच्च न्यायालय ने कहीं बार राजनीतिक दलों को फटकार लगाई है, किन्तु इस बार उसने रेवड़ी बांटने के कुप्रभावों पर भी खुलकर बोला है। मुफ्त की रेवड़ी के चलन का श्रेय यों तो स्वर्गीया जयललिता को जाता है किन्तु इस चलन को परवान चढ़ाया कट्टर ईमानदार अरविन्द केजरीवाल ने। फिर यह संक्रमण धीरे-धीरे सभी राजनीतिक दलों में फ़ैल गया। कुछ दल इस रेवड़ी बांट को जनहित के कार्य कहते हैं तो कुछ इसे जनता का अधिकार। किन्तु यह निस्सन्देह घूस देकर मत खरीदना है। शीर्ष न्यायालय ने बिल्कुल ठीक कहा है कि मुफ्त में चीज बांटने से लोग अकर्मण्य होते जा रहे हैं।यह प्रत्यक्षत: दिख भी रहा है। एक समय लोग मजदूरी के लिए घर - घर जाकर काम के लिए पूछते थे, किन्तु आज मजदूरों के घर के चक्कर लगाने पड़ते हैं। इससे विकास कार्य भी प्रभावित होते हैं। क्योंकि बजट का एक बहुत बड़ा अंश रेवड़ी बांटने में खर्च हो जाता है। केन्द्र सरकार का मुफ्त राशन बांटना भी मुफ्त की रेवड़ी ही है। जिसे खरीदने के लिए गली मौहल्लों में ठेले वालों को आवाज लगाते देखा जा सकता है।यह तुरन्त बन्द होना चाहिए। इतना अवश्य हो सकता है कि गरीब लोगों को कम मूल्य पर राशन उपलब्ध कराया जाए।

– **डॉ नरेंद्र टोंक,** मेरठ

नियंत्रण की जरूरत

संस्कृति और संस्कारो के बगैर हमारी भौतिक प्रगति कुछ भी माने नहीं रखती है। संस्कारो का अभाव देश और समाज को खोखला करता है। बेशक हम नई सोच रखे लेकिन वह सोच संस्कृति और संस्कारो पर आघात न पहुंचाये इसका भी ध्यान रखे। क्योकि संस्कार ही जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं। लेकिन आजकल इंटरनेट मीडीया ओटीटी प्लेटफॉर्म आदि पर जो परोसा जा रहा है उससे सामाजिक संतुलन के अस्तित्व पर संकट खड़ा हो रहा है । एक्स से लेकर इंस्टाग्राम, फेसबुक और यूट्यूब पर ऐसे अश्लील कटेंट की भरमार है, जो नई पीढ़ी को अपनी गिरफ्त में ले रहा है। इनमें से अधिकांश सामग्री पश्चिमी समाज और संस्कृति की नकल है। देश और समाज में अप संस्कृति की हवा बहाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि डिजिटल कंटेंट की निगरानी की जाए। इंटरनेट मीडीया पर अपलोड होने वाली सामग्री का का विनियमन किया जाए ताकि भविष्य में मनोरंजन एवं अभिव्यक्ती की आजादी के नाम पर अश्लीलता फैलाने एवं पावन पारिवारिक रिश्तो को शर्मसार करने वाली अभद्र और अमर्यादित टिप्पणी करने का दुस्साहस न करे।

– **विमलेश पगारिया**, बदनावर, मप्र

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष ने की जनसुनवाई

●जिला अस्पताल आंगनबाड़ी केंद्र, विद्यालयों व वृद्धाश्रम का किया निरीक्षण

संवाददाता। अमेठी

उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष अपर्णा यादव ने आज जनपद अमेठी में वृद्धाश्रम गौरीगंज, प्राथमिक विद्यालय व आंगनबाड़ी केंद्र हरखपुर, जिला अस्पताल गौरीगंज तथा कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय गौरीगंज का स्थलीय निरीक्षण किया एवं संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

सर्वप्रथम उपाध्यक्ष ने वृद्धाश्रम पहुंचकर वृद्ध जनों का हाल-चाल जाना एवं जिन वृद्धि जनों को पेंशन नहीं मिल रही थी उन्हें पेंशन दिलाने के निर्देश जिला समाज कल्याण अधिकारी को दिया तथा कहा कि वृद्धाश्रम में समय-समय पर चिकित्सा शिविर का आयोजन कर वृद्ध जनों का स्वास्थ्य परीक्षण किया जाए साथ ही उनके खाने-पीने, रहने का विशेष ध्यान रखा जाए। इसके उपरांत उन्होंने आंगनबाड़ी केंद्र हरखपुर का निरीक्षण किया यहां पर उन्होंने छोटे बच्चों के शिक्षा, स्वास्थ्य व पोषण के संबंध में जानकारी दी गई।

इस दौरान मा. उपाध्यक्ष द्वारा गर्भवती महिलाओं की गोद भराई के साथ ही 6 माह के बच्चों को प्रथम बार अन्नप्राशन कराया गया। निरीक्षण के दौरान उपाध्यक्ष ने आंगनबाड़ी परिसर में पोषण वाटिका बनवाने के निर्देश जिला कार्यक्रम अधिकारी को दिए। इसके उपरांत उन्होंने प्राथमिक विद्यालय हरखपुर का निरीक्षण कर छात्र-छात्राओं से पढ़ाई की स्थिति के संबंध में जानकारी ली एवं संबंधित शिक्षकों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान उन्होंने जनपद के समस्त विद्यालयों में हेल्पलाइन नंबर और बालिकाओं/महिलाओं से संबंधित योजनाओं यथा बाल सेवा योजना, मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, स्पॉन्सरशिप योजना सहित अन्य योजनाओं की वॉल पेंटिंग करने के निर्देश जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को दिया। इसके उपरांत उन्होंने जिला अस्पताल का निरीक्षण किया यहां पर साफ सफाई की व्यवस्था सही नहीं पाई गई, जिस पर उन्होंने चिकित्सालय परिसर में बेहतर साफ सफाई की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश मुख्य चिकित्सा अधीक्षक को दिए इसके साथ ही उन्होंने एमएनसीयू, महिला वार्ड का गहनता से निरीक्षण किया।

सभी चिकित्सकों को सख्त हिदायत दी कि किसी भी मरीज को बाहर से दवा ना लिखी जाए, अस्पताल के निरीक्षण के दौरान उन्होंने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के अंतर्गत पांच बच्चियों व उनके माताओं को बेबी किट व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

राज्य महिला आयोग सदस्या एकता सिंह ने सुनीं समस्याएं

श्रावस्ती, भिनगा। राज्य महिला आयोग की सदस्या श्रीमती एकता सिंह जी जनपद में महिला उत्पीड़न की रोकथाम एवं पीड़ित महिलाओं को त्वरित न्याय दिलाये जाने तथा महिला जनसुनवाई एवं समीक्षा किये जाने हेतु एक दिवसीय दौरे पर जनपद पहुंची तत्पश्चात् सदस्या ने विकास भवन सभागार पहुंचकर महिला उत्पीड़न से पीड़ित महिलाओं की समस्याओं को सुना। इस दौरान सदस्या को कुल 11 शिकायती प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए जिनमें से कुछ न्यायालय से सम्बन्धित प्रकरण थे शेष अन्य शिकायतों के निराकरण हेतु सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया। इस अवसर पर सदस्या एकता सिंह ने महिलाओं एवं बालिकाओं की समस्याओं व शिकायतों से रूबरू होते हुए कहा कि समस्याओं से पीड़ित महिलाओं एवं बालिकाओं को त्वरित न्याय देने के लिए प्रदेश सरकार प्रतिबद्ध है।

डीएम ने ग्रामीण पेयजल परियोजनाओं की प्रगति को लेकर की बैठक

संवाददाता। अमेठी

जिलाधिकारी निशा अनंत ने आज कलेक्ट्रेट सभागार में जल जीवन मिशन के अंतर्गत ग्रामीण पाइप पेयजल परियोजनाओं की प्रगति को लेकर संबंधित अधिकारियों एवं कार्यदायी संस्थाओं के प्रतिनिधियों के साथ बैठक कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में जिलाधिकारी ने जल जीवन मिशन हेतु नामित तीन एजेंसियों क्रमशः मेसर्स वैलस्पन इंटरप्राइजेज, मेसर्स गायत्री-रैम्की तथा मेसर्स विंध्या टेलिलिंक्स-गाजा इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड के प्रतिनिधियों से जनपद में संचालित सभी परियोजनाओं के बारे में बिंदुवार जानकारी ली एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

बैठक में जिलाधिकारी ने पूर्ण/अपूर्ण परियोजनाओं की जानकारी ली एवं कार्य की प्रगति में तेजी लाने के निर्देश दिए। बैठक में अधिशासी अभियंता जल निगम ए0के0 राव ने बताया कि जनपद अमेठी में कुल 487 परियोजनाएं संचालित की जानी है जिनमें से 90 परियोजनाओं में सभी स्टेप पर कार्य पूर्ण करते हुए ओवरहेड टैंक के माध्यम से पेयजल की आपूर्ति की जा रही है, 115 परियोजनाओं में डायरेक्ट पंप के माध्यम से पेयजल की आपूर्ति की जा रही है, शेष परियोजनाओं पर संबंधित कार्यदायी संस्थाओं द्वारा कार्य किया जा रहा है।

बैठक में जिलाधिकारी ने कार्यदायी संस्थाओं को निर्देश दिए की सभी परियोजनाओं पर मजदूरों की संख्या बढ़ते हुए शीघ्र अति शीघ्र कार्य पूर्ण किया जाए सभी घरों को जल जीवन मिशन के अंतर्गत पाइपलाइन से जोड़ा जाए कोई भी गांव, मजरा अथवा घर कनेक्शन से छूटने न पाए तथा पाइपलाइन बिछाने के दौरान खोदी गई सड़कों को शीघ्र अति शीघ्र रिपेयर किया जाए, इसके अतिरिक्त सभी प्राथमिक विद्यालयों, आंगनबाड़ी केंद्रों तथा हेल्थ वेलनेस सेंटरों को भी पाइपलाइन से जोड़ा जाए। उन्होंने सभी कार्यदायी संस्थाओं को निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देते हुए निर्धारित समय सीमा के अंतर्गत कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए।

पुलिस अधीक्षक ने अफसरों के बैठक कर दिए दिशा-निर्देश

गोंडा। पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल ने अपने कैम्प कार्यालय में जनपद के समस्त राजपत्रित अधिकारियों के साथ बैठक कर लंबित अभियोगों की विवेचना, लंबित जांच प्रार्थना पत्रों व लंबित प्रारंभिक जांच आदि की स्थिति की समीक्षा कर आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए गए। एसपी ने सर्वप्रथम काफी दिनों से लंबित चल रही विवेचनाओं की वर्तमान स्थिति की जानकारी कर लम्बी अवधि तक विवेचनाओं के लंबित रखने का कारण जानते हुए विवेचनाओं की स्थिति में आ रही परेशानियों के बारे जाना तथा गुण दोष के आधार पर जल्द से जल्द विवेचनाओं के निस्तारण करने हेतु निर्देशित किया। एसपी ने लंबित विवेचनाओं में विशेषकर अनावरित अभियोगों के निस्तारण तथा इनामिया, जिलाबदर अभियुक्तों की जानकारी हासिल की गयी तथा गैंगस्टर के प्रकरणों में अभियुक्तों के विरुद्ध धारा 14(1) के तहत कितने प्रकरणों में सम्पत्ति जब्तीकरण की कार्यवाही आदि के बारे में समीक्षा की।

इस मौके पर उन्होंने जानकारी किया कि कितने अपराधियों के विरूद्ध हिस्ट्री शीट खोली गई, कितने अभियुक्तों के विरूद्ध गुण्डा एक्ट के तहत कार्यवाही की गयी व कितने गैंग पंजीकरण करने की कार्यवाही की गयी के बारे में समीक्षा की।

आईजीआरएस व कर करेत्तर समीक्षा के बाद एडीएम ने डिफाल्टरो को दी कड़ी चेतावनी

संवाददाता। संतकबीरनगर

जिलाधिकारी महेंद्र सिंह तंवर के निर्देश के क्रम में अपर जिलाधिकारी जय प्रकाश की अध्यक्षता में आई0जी0आर0एस0 पोर्टल पर मुख्यमंत्री संदर्भ, आयुक्त संदर्भ, जिलाधिकारी संदर्भ, तहसील दिवस संदर्भ सहित अन्य संदर्भों एवं लम्बित शिकायतों/प्रकरणों एवं सीएम डैशबोर्ड के आधार पर योजनाओं के प्रगति की समीक्षा बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुई। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी जयकेश त्रिपाठी उपस्थित रहे। अपर जिलाधिकारी ने कहा कि अधिकारीगण आइ0जी0आर0एस0 पोर्टल पर प्राप्त संदर्भों को निर्धारित समय सीमा के अन्दर अवश्य निस्तारित कर दें, जिससे कोई भी संदर्भ डिफाल्टर की श्रेणी में न जाए। संदर्भों के निस्तारण में गुणवत्ता का विशेष ध्यान दिया जाए। सभी अधिकारीगण नियमित तौर पर पोर्टल पर संदर्भों को प्राप्त होते ही निस्तारित करने की दिशा में कार्यवाही प्रारंभ करना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के जनता दर्शन में प्राप्त जो भी प्रार्थना पत्र आते हैं उसे अधिकारीगण आवश्यकतानुसार संबंधित विभागीय अधिकारी से संपर्क कर तत्काल निस्तारित करना सुनिश्चित करेंगे। समीक्षा के दौरान अपर जिलाधिकारी ने उपस्थित सभी विभागीय अधिकारीगणों को निर्देशित किया कि उनके विभाग से संबंधित योजनाओं एवं निर्माण कार्यों में लक्ष्य के सापेक्ष प्रगति पर विशेष ध्यान दें, जिससे सीएम डैशबोर्ड पर जनपद की रैंकिंग अच्छी बनी रहे।

अपर जिलाधिकारी ने समीक्षा बैठक में कर-करेत्तर की समीक्षा के दौरान आबकारी, व्यापार कर, स्टाम्प शुल्क, विद्युत देयों की वसूली, नगर निकायों में राजस्व संग्रह की स्थिति, खनन, मण्डी समिति, बांट माप, खाद्य एवं सुरक्षा सहित अन्य राजस्व संग्रह से सम्बन्धित विभागों द्वारा लक्ष्य के सापेक्ष राजस्व देयों की वसूली की विस्तृत समीक्षा की गयी। उन्होंने लक्षित राजस्व देयों की वसूली में सुधार लाते हुये समय सीमा के अन्दर शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करने का निर्देश दिया।

आयुक्त ने अधिशासी अभियंता के खिलाफ दिये जांच के आदेश

गोंडा। देवीपाटन मंडल के कमिश्नर शशि भूषण लाल सुशील ने अधिशासी अभियंता, बाढ़ कार्य खंड-गोण्डा के खिलाफ लगे वित्तीय अनियमितताओं और धन उगाही के आरोपों की उच्च स्तरीय जांच के आदेश दिए हैं। दरअसल शिकायतकर्ता गोण्डा निवासी आकाश यादव ने कई बार इस संबंध में पत्र भेजे थे, लेकिन उचित कार्रवाई न होने पर यह मामला अब कमिश्नर देवीपाटन तक पहुंचा है। शिकायतकर्ता ने बीते वर्ष 4 नवंबर और 2 दिसंबर को भी इसी आशय की शिकायतें की थीं, लेकिन अब तक किसी तरह की ठोस कार्रवाई नहीं हुई थी। इस पर संज्ञान लेते हुए कमिश्नर ने विकास संयुक्त आयुक्त देवीपाटन मण्डल को निर्देशित किया है कि वे स्वयं स्थलीय एवं अभिलेखीय जांच कर एक सप्ताह के भीतर तथ्यपरक रिपोर्ट प्रस्तुत करें। शिकायत में आरोप लगाया गया है कि अधिशासी अभियंता द्वारा 3 जून 2024 से अब तक किए गए कार्यों में वित्तीय अनियमितताएं और धन उगाही के मामले सामने आए हैं।

रोजगार सेवक की कथित फर्मों का खुलासा होते ही जिम्मेदारों में मचा हड़कंप

उरई, जालौन। कदौरा विकासखंड के मवई अहीर के रोजगार सेवक की कथित फर्मों में करोड़ों रुपये का भुगतान होने के साथ ही उसके परिजनों को मनरेगा मजदूरी के जॉबकार्ड पर काम के बदले उनके बैंक खातों में मजदूरी का पैसा पहुंचाये जाने का मामला अब बीडीओ के लिये गले की फांस बनता जा रहा है। हालांकि बीडीओ इस मामले को समूचे प्रकरण की जांच कराने का झांसा देकर मामले को दफन करने के प्रयास में जुट गये हैं। इतना ही नहीं जिम्मेदार अधिकारी मीडिया कर्मियों को वाट्सएप कॉल करके अपनी दबंगी दिखाते नजर आये। तो वहीं भ्रष्टाचार निवारण संगठन रोजगार सेवक की कथित फर्मों को काम के बदले गड़बड़ी कर करोड़ों रुपये पहुंचाने जाने को लेकर निर्णायक लड़ाई लड़ने का ऐलान कर दिया है।

उल्लेखनीय हो कि जब से कदौरा विकासखंड की ग्राम पंचायत मवई अहीर के रोजगार सेवक की कथित फर्मों के बैंक खातों में काम के बदले गड़बड़ी कर करोड़ों रुपयों का भुगतान पहुंचाने जाने का मामला अब तूल पकड़ता नजर आ रहा है। इतना ही नहीं बगैर काम के रोजगार सेवक के परिजनों के बने मनरेगा योजना के जॉबकार्डों में बगैर मजदूरी किये हजारों रुपयों का भुगतान उनके बैंक खातों में पहुंचाया गया। उक्त खुलासा होते ही जहां बीडीओ अपने बचाव का रास्ता तलाशते हुये समूचे प्रकरण की जांच कराने का झांसा देकर मामले को दफन करने के प्रयास में जुट गये हैं। लेकिन शायद उन्हें इस बात का अंदाजा नहीं है कि रोजगार सेवक के परिजनों की कथित फर्मों में शुरूआत से लेकर अब तक जो भी कार्य किये हैं यदि उनकी गहराई से जांच हुई तो कितनों की गर्दन फंस जायेगी अभी यह कहना मुश्किल होगा। लेकिन जिस तरह से मामला सुर्खियों में बना हुआ है उसको देखते हुये क्षेत्र पंचायत कार्यालय में यह मामला चर्चा का विषय बना हुआ है तो वहीं मवई अहीर के ग्रामीणों के बीच में भी एक बात को लेकर चर्चाओं का दौर शुरू हो गया है कि एक रोजगार सेवक जिसको बमुश्किल दस हजार रुपये मानदेय मिलता है उसने किस आधार पर अपने परिजनों के नाम कथित फर्मों को बनाकर करोड़ों रुपयों का भुगतान कर सफलता की सीढ़ी चढ़ता गया और उसकी भनक ब्लाक के जिम्मेदार अधिकारियों को नहीं हुई या फिर वह आर्थिक मदद मिलने के लालच में अपने कर्तव्यों को खूंटी पर टांगकर जानकर भी अनजान बनने का ढोंग रचते रहे।

लेकिन अब इस मामले में भ्रष्टाचार निवारण संगठन के मैदान में आ जाने के बाद मामला पेंचीदा हो गया है। उक्त संगठन के पदाधिकारियों का कहना है कि वह जल्द ही प्रदेश के मुख्यमंत्री से भेंटकर रोजगार सेवक के परिजनों की कथित फर्मों के नाम करोड़ों का भुगतान पहुंचाये जाने व उनके परिजनों के जॉबकार्ड बनाकर मनरेगा योजना में फर्जीबाड़ा कर उनके बैंक खातों में मजदूरी का पैसा पहुंचाने जाने की जांच की मांग करेंगे ताकि भ्रष्टाचार के कार्यों में लिप्त अधिकारियों पर कार्यवाही सुनिश्चित हो सके।

राज्यमंत्री दिनेश प्रताप सिंह के नेतृत्व में हुआ श्रद्धालुओं के लिए भोजन कैम्प का आयोजन

संवाददाता। रायबरेली

स्वतंत्र प्रभार राज्य मंत्री दिनेश प्रताप सिंह के नेतृत्व में दूसरे दिन भी महाकुंभ यात्रियों को कराया गया भोजन प्रदेश सरकार के मुखिया मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आह्वान पर रायबरेली जनपद के मामा चौराहे पर महाकुंभ श्रद्धालुओं के लिए विशाल भोजन कैंप का आयोजन किया गया है। भोजन कैंप की देखरेख स्वयं कृषि उद्यान राज्य मंत्री दिनेश प्रताप सिंह और भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष बुद्धीलाल पासी कर रहे हैं।

भाजपा संगठन और सरकार दोनों के द्वारा महाकुंभ श्रद्धालुओं के लिए रायबरेली में सम्मानपूर्वक भोजन वितरण किया जा रहा है। बुधवार को कर्नाटक, महाराष्ट्र ,हरियाणा प्रदेश के नागरिकों ने भी कैंप में भोजन किया और भाजपा सरकार के मंत्री की सराहनाकी। यह सभी श्रद्धालु महाकुंभ स्नान के बाद अयोध्या रामलला के दर्शन करने जा रहे थे। उत्तर प्रदेश सरकार के स्वतंत्र प्रभार कृषि उद्यान राज्य मंत्री दिनेश प्रताप सिंह, जिला अध्यक्ष बुद्धीलाल पासी ने कुंभ श्रद्धालुओं की सेवा कर सराहनीय कार्य किया है।

भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के निर्देशानुसार स्वतंत्र प्रभार राज्य मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने जनपद रायबरेली की सीमा में महाकुंभ श्रद्धालु यात्रियों की सेवा का स्वंय बीडा उठाया है।सभी अस्थाई आश्रय स्थलों में भोजन,पानी बिस्तर,शौचालय और सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं।वहीं प्रदेश सरकार के मंत्री ने सभी रायबरेली के पार्टी कार्यकर्ता,व्यापार मंडल अन्य सामाजिक संगठनों से भी अपील करते हुए कहा कि सभी सतर्क रहें जिस समय भी महाकुंभ यात्रियों को हम रायबरेली वासियों की सेवा की आवश्यकता पडे हम लोग तुरंत सक्रिय हो जाएं। कृषि उद्यान राज्य मंत्री ने बताया कि एक-एक होर्डिंग एरिया में 10.10 हजार लोगों को किसी समय हर सेवा उपलब्ध हो सके ऐसी तैयारी पूरी है।

एनएसपीएस त्रिपुला में मनी सरोजिनी नायडू की जयंती

रायबरेली। न्यू स्टैंडर्ड पब्लिक स्कूल सीनियर सेकेंडरी स्कूल त्रिपुला में भारत को किला सरोजिनी नायडू की जयंती 'राष्ट्रीय महिला दिवस' के रूप में मनायी गयी। प्रधानाचार्य ने शिक्षक शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों के साथ सरोजिनी नायडू के चित्र पर श्रद्धा-सुमन अर्पित कर नमन किया। प्रजापति ने कहा कि आजाद भारत की प्रथम महिला राज्यपाल के पद पर आसीन होने वाली सरोजिनी नायडू ने एक प्रखर वक्ता, वाक्पटु नेता एवं कुशल नेतृत्व कर्ता के रूप में अपने को स्थापित किया, वह प्रसिद्ध कवियत्री, कार्यकर्ता एवं राजनितिक नेता थीं, वह सविनय अवज्ञा तथा भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व करने वाली प्रमुख हस्तियों में से एक थीं। वे सदैव नारी सशक्तिकरण के लिए प्रयासरत रहीं।

बीएसए गोंडा व स्टेनो पर लगे भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप

गोंडा। देवीपाटन मंडल के शिक्षा विभाग गोण्डा में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार की शिकायत सामने आई है। राम सरन सिंह, सेमरा कॉलोनी, गोंडा द्वारा की गई शिकायत में बीएसए, स्टेनो और एक शिक्षक पर गंभीर आरोप लगाए गए हैं।

शिकायत के अनुसार इन अधिकारियों पर मृतक आश्रितों की नियुक्तियों में धन उगाही, वेतन सत्यापन के नाम पर रिश्वत और शिक्षकों का शोषण करने का आरोप है। शिकायत में यह भी उल्लेख किया गया है कि सत्यापन की प्रक्रिया को जानबूझकर लंबित रखा जा रहा है और शिक्षकों से 15-20 हजार रुपये की अवैध वसूली की जा रही है। जिनसे पैसे नहीं लिए गए, उनके वेतन रोके जाने के भी आरोप लगे हैं। देवीपाटन मंडल के आयुक्त शशि भूषण लाल सुशील ने अपर निदेशक बेसिक शिक्षा को पत्र लिखकर स्थलीय एवं अभिलेखीय जांच कर रिपोर्ट एक सप्ताह के अन्दर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए हैं। शिकायतकर्ता के अनुसार, मृतक आश्रितों की नियुक्ति के लिए शिक्षकों से 4-5 लाख रुपये तक की मांग की जा रही है, जबकि चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों से 2 लाख रुपये लिए जाने की बात सामने आई है। इसके अलावा, सत्यापन प्रक्रिया में भी धांधली के आरोप हैं, जिसमें सत्यापन रोककर रिश्वत मांगी जाती है।

शिकायतकर्ता ने यह भी कहा है कि इस मामले में मांगी जाने वाली रिश्वत न देने वाले करीब 60 शिक्षकों का वेतन भी रोक दिया गया है, जिससे वे विविध प्रकार के आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं। इनमें से कई शिक्षक बीते 8 महीनों से वेतन न मिलने के कारण परेशान हैं और बिना वेतन के पढ़ाने को मजबूर हैं।

डीएम ने ली जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक

रायबरेली। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट स्थित बचत भवन सभागार में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में ने सडक सुरक्षा से संबंधित की गई प्रवर्तन कार्यवाही व सडक दुर्घटनाओं के लिए की गई सुधारात्मक कार्यवाही की समीक्षा की तथा संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि राष्ट्रीय राजमार्गो पर अवैध रूप से निर्मित कटो को चिन्हित कर बंद किया जाए, राष्ट्रीय राजमार्गो पर नियमित रूप से प्रभावी पेट्रोलिंग की जाए, राष्ट्रीय राजमार्ग में स्पीड कैमरे लगाए जाए, तथा लोगों को जागरूक करने के लिए पर्याप्त स्पीड लिमिट के साइनेज बोर्ड लगवाए जाए।सुरक्षा के दृष्टिगत विद्युत पोल एवं पेडो पर ट्री प्लेट, थर्मोप्लास्टिक, रिफ्लेक्टर टेप लगाए जाए। बैठक में अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ, सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी मनोज कुमार सिंह, अधिशासी अभियंता लोक निर्माण आदि मौजूद रहे।

विधानसभा क्षेत्र सलोन के काजीपुर तेलियानी एवं बनी गांवों में पीडीए चर्चा

संवाददाता। रायबरेली

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के निर्देशानुसार विधानसभा क्षेत्र सलोन के काजीपुर तेलियानी एवं बनी गांवों में पीडीए चर्चा कार्यक्रमों को सम्बोधित करते हुए जिला अध्यक्ष इं.वीरेन्द्र यादव ने कहा कि बाबा साहब डा. भीमराव अंबेडकर ने देश में संविधान देकर नकारात्मक एवं शोषणात्मक सोच के प्रभुत्ववादी लोगों पर कानून मानने पर बाध्य कर दिया।

इसलिए प्रभुत्ववादी सोच के लोग सदैव बाबा साहब के प्रति तिरस्कार पूर्ण अनर्गल प्रलाप करते रहते हैं। बाबसाहब ने आजीवन पिछडों,दलितों एवं अल्पसंख्यकों की भलाई उनके अधिकारों को दिलाने के लिए आजीवन कार्य किया।जिला अध्यक्ष ने कहा कि जब से बीजेपी सत्ता में आयी है सलोन विधानसभा क्षेत्र का विकास अवरुद्ध है क्षेत्र में गुंडाराज एवं अराजकता बढ़ी है। समाजवादी पार्टी सरकार में सलोन विधानसभा में बिजली, चिकित्सा, सडक, शिक्षा क्षेत्र में विकास कि अनेकों कार्य हुए थे। वरिष्ठ नेता सुरेश निर्मल ने पीडीए चर्चा कार्यक्रमों में बोलते हुए कहा कि पिछडों, दलितों एवं अल्पसंख्यकों की एकजुटता ही सौहार्द विरोधी,विकास विरोधी बीजेपी सत्ता से बाहर होगी।

कार्यक्रमों को वरिष्ठ नेता पुत्तन सिंह यादव, रामकिशोर पुजारी, डा.वसी, राजेश मौर्या, बबलू लोधी, राकेश यादव, जीतू सिंह, कल्लू चौधरी, आशुतोष यादव, लवकुश मौर्या, विनोद यादव, सत्तेश गौतम, रईस खान, अरुण यादव, दीपू शुक्ला, पिंटू दिनेश आदि ने संबोधित कर जातीय जनगणना,संख्या के अनुसार आरक्षण, बेरोजगारी एवं रायबरेली जनपद के बाधित विकास पर चर्चा की गयी।इस अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव सरकार द्वारा सलोन को जनपद रायबरेली से जोडने एवं उनके द्वारा किए जनकल्याणकारी कार्यों को याद किया गया।सभी ने पीडीए की एकजुटता पर बल दिया।इस अवसर पर बडी संख्या में लोग एवं महिलाएँ उपस्थित रही।

परंपरागत रूप से मनाया एनटीपीसी परियोजना का स्थापना दिवस

ऊंचाहार। एनटीपीसी की परियोजना का स्थापना दिवस परंपरागत रूप से भव्यता पूर्वक मनाया गया एनटीपीसी ध्वज फहराने तथा एनटीपीसी गीत की गूंज के साथ महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण) रवि प्रकाश अग्रवाल ने उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुये कहा की ऊंचाहार परियोजना को एनटीपीसी ने जब अधिग्रहित किया था तो या एक नया प्रयोग था । इसी के बाद एनटीपीसी कंपनी का यह विश्वास कायम हुआ की पुराने प्रोजेक्ट को लेकर उसे नवीनीकृत करके बेहतर परिणाम हाशिल किए जा सकते हैं । श्री अग्रवाल ने कहा की ऊंचाहार परियोजना का अधिग्रहण अप्रत्याशित रूप से सफल रहा । शुरू से ही ऊंचाहार परियोजना विद्युत उत्पादन तथा कार्य निष्पादन के उच्च कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं । इस अवसर पर केक काटा गया जिसमें सभी विभागाध्यक्ष , यूनियन एवं एसोसिएसन के अध्यक्ष तथा महासचिव , स्कूलो के प्रधानाचार्य , प्रियदर्शनी लेडीज क्लब की महिलाएं सीआईएसफ ने भी भाग लिया । समारोह में राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को सम्मानित किया गया आज ही के दिन 13 फरवरी 1992 को देश की अग्रणी विद्युत कंपनी एनटीपीसी ने ऊंचाहार परियोजना को प्रदेश सरकार से अधिग्रहित किया था।

हमारा आंगन, हमारे बच्चे कार्यक्रम में 55 बच्चों को किया गया सम्मानित

संवाददाता। जालौन, उरई

ब्लॉक संसाधन केंद्र भिटारा में निपुण भारत मिशन के अंतर्गत हमारा आंगन हमारे बच्चे कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 52 सप्ताह कार्य योजना पर चर्चा की गई और 55 बच्चों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

निपुण भारत मिशन के अंतर्गत हमारा आंगन हमारे बच्चे कार्यक्रम में बीईओ प्रीति राजपूत ने स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। साथ ही बेसिक शिक्षा विभाग और बाल विकास परियोजना विभाग द्वारा सम्मिलित रूप से उपलब्ध कराई गई सामग्री की जानकारी दी। एआरपी केके श्रीवास्तव ने स्कूल रीडीनेस कार्यक्रम के अंतर्गत पहल मॉड्यूल और 52 सप्ताह की कार्य योजना के बारे में जानकारी दी। एआरपी संदीप कुमार ने आंगनबाड़ी केंद्रों में किए जा रहे कायाकल्प की जानकारी दी।

एआरपी प्रदीप अग्रवाल समझाया कि किस प्रकार पांच से छह वर्ष के बच्चों पर विशेष ध्यान देकर उन्हें कक्षा एक के लिए तैयार किया जा सकता है। सीडीपीओ कपिल शर्मा ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम के अंतर्गत कार्य करने के लिए प्रेरित किया। साथ ही उन्होंने नई शिक्षा नीति में प्री प्राइमरी एजुकेशन के महत्व पर चर्चा की। बीईओ व सीडीपीओ ने संयुक्त रूप से प्राथमिक विद्यालयों के 33 बच्चों और आंगनबाड़ी के 22 बच्चों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में जगमोहन, नीरज, आलोक, अंकित, ब्रह्मानंद राजपूत, किरन, प्रवीण, परमानंद, संदीप, रामकुमार, जगदीश, संतोष, चंद्रशेखर आदि ने सहयोग किया।

कलेक्ट्रेट गैलरी में खड़े होकर डीएम ने सुनीं समस्याएं

पीड़ितों की शिकायतों का हर हाल में करें गुणवत्तापूर्ण निस्तारणः जिलाधिकारी

फतेहपुर। पीड़ितों को न्याय दिलाए जाने के लिए डीएम रविन्द्र सिंह प्रतिदिन जनसुनवाई कार्यक्रम अपने कलेक्ट्रेट स्थित कार्यालय में करते हैं। गुरूवार को एक नजारा सामने आया जिसमें डीएम जैसे ही अपने कार्यालय से बाहर निकले तो उन्होने कई पीड़ितों को खड़े देखा। डीएम रूक गए और उन्होने उनके शिकायती पत्र हाथ में लेकर उनकी समस्याएं सुनीं। डीएम ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि पीड़ितों की समस्याओं का निस्तारण हर हाल में गुणवत्तापूर्ण होना चाहिए।

जिलाधिकारी रविन्द्र सिंह ने गुरूवार को कलेक्ट्रेट कार्यालय में जन सुनवाई की। जिसमें दूर दराज क्षेत्र से आए हुए जन सामान्य की समस्याओं को सुना। पीड़ितों की समस्याएं सुनकर व सरकारी कामकाज निपटाकर जब डीएम कार्यालय से बाहर आए तभी कई पीड़ित उन्हें गैलरी में खड़े दिखाई दिए। जिस पर डीएम रूक गए और पीड़ितों के शिकायती पत्र हाथ में लेकर उनसे समस्याओं के बाबत जानकारी ली। पीड़ितों ने अपनी-अपनी समस्या डीएम के समक्ष रखी। डीएम ने उनके शिकायती पत्रों को पढ़ा और संबंधित अधिकारियों व पुलिस कर्मियों को निर्देशित किया कि पीड़ितों की समस्याओं का निस्तारण हर हाल में गुणवत्तापूर्ण किया जाए। शासन की प्राथमिकता है कि किसी भी पीड़ित को बार-बार कार्यालय व पुलिस थाने के चक्कर न लगवाए जाएं। पीड़ित की समस्या का निस्तारण मौके पर जाकर गुणवत्तापूर्ण किया जाए।

जमीनी विवाद में युवक को किया लहुलूहान

फतेहपुर। राधानगर थाना क्षेत्र के ग्राम केवई में जमीनी विवाद को लेकर परिवार के ही आधा दर्जन लोगों ने 45 वर्षीय अधेड़ को लाठी डन्डा व लोहे का राड मारकर घायल कर दिया। जिसे उपचार के लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। जानकारी के अनुसार केवई गांव निवासी फूलचन्द्र का पुत्र मुकेशचन्द्र शर्मा का अपने चचेरे भाई श्रवण कुमार से काफी समय से जमीनी विवाद चला आ रहा है। बताते हैं कि बुधवार की शाम परिवार के अन्य सदस्य शादी समारोह में तांबेश्वर स्थित रिश्तेदारी में आये थे। जबकि मुकेश शाम को साइकिल से घर आ रहा था। तभी पहले से ही घात लगाये बैठे श्रवण कुमार अपने छोटे भाई सुरेश कुमार पुत्रगण रामप्रकाश शिवबाबू पुत्र श्रवण कुमार एवं परिवार की ही तीन महिलाओं ने लाठी डन्डा व राड से पीटकर घायल कर दिया और धमकी देते हुये भाई खडे हुये घटना की जानकारी जैसे ही घायल की पत्नी रानी देवी को हुयी तो वह अपने परिवार सहित मौके पर पहुची और घायल को उपचार के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया। वहीं पीडित परिवार ने थाने में श्रवण कुमार सहित आधा दर्जन लोगो के विरूद्ध तहरीर दी है।

मार्ग दुर्घटनाओं में दो घायल

फतेहपुर। जनपद के अलग-अलग थाना क्षेत्रो के अर्न्तगत हुए सड़क हादसो के दौरान दो लोग घायल हो गये जिन्हे उपचार के लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। जानकारी के अनुसार मलवां थाना क्षेत्र के उमरापुर गांव निवासी शारदा का 18 वर्षीय पुत्र गोविन्द बाइक से किसी काम से जा रहा था। जब वह शहर क्षेत्र के मदरियापुर के पास पहुंचा तभी सामने से आ रही बाइक से भिडन्त हो गयी। जिससे वह बुरी तरह घायल हो गया। शहर के क्षेत्र के पनी मोहल्ला निवासी शीतल प्रसाद का 50 वर्षीय पुत्र मुन्ना लाल कश्यप आज सुबह आलू स्टोर से पैदल घर आ रहा था। तभी देवरी मोड के पास पीछे से आ रहे बाइक सवार ने टक्कर मार दिया। जिससे वह घालय हो गया। एम्बुलेंस ने घायलों को उपचार के लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया।

सदस्य, उप्र राज्य महिला आयोग की अध्यक्षता में जनसुनवाई

जनसुनवाई में प्राप्त शिकायतों के त्वरित निस्तारण हेतु संबंधित को किया निर्देशित

कानपुर देहात। कानपुर देहात में 13.02.2025 को अनीता गुप्ता, सदस्य, उप्र राज्य महिला आयोग लखनऊ सदस्या द्वारा सर्किट हाउस माती के सभागार में जनसुनवाई की गयी। महिला जनसुनवाई में 05 शिकायतें प्राप्त हुई। शिकायती प्रार्थना पत्रो के त्वरित निस्तारण हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। पीड़ितों की समस्याओं का त्वरित निस्तारण हमारी प्राथमिकताएसभी संबंधित अधिकारी शासन के मंशानुरूप शिकायतों का निस्तारण निर्धारित समयावधि में करें। सदस्या द्वारा जिला जेल माती अकबरपुर का निरीक्षण किया गया। महिला बंदियों से रहन सहन, खानपान, चिकित्सा सुविधा, रोजगार परक प्रशिक्षण आदि के बारे में जानकारी ली। जेल अधिकारियों को सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को दुरूस्त रखने के निर्देश दिये। एसडीएम अकबरपुर अवनीश कुमार, क्षेत्राधिकारी अकबरपुर प्रिया सिंह, जिला प्रोबेशन अधिकारी रेनू यादव, जिला कार्यक्रम अधिकारी आरबी सिंह, थानाध्यक्ष, महिला थाना तथा जिला बाल संरक्षण इकाई से संरक्षण अधिकारी, सेन्टर मैनेजर वन स्टाप सेन्टर, जिला मिशन कॉर्डिनेटर व अन्य कार्मिकगण उपस्थित रहे।

सर्राफ़ा और डेयरी व्यवसाई की दुकान में हुई चोरी का पुलिस ने किया 24 घंटे में पर्दाफाश

संडीला (हरदोई)। एक ज्वैलर्स की दुकान तथा डेयरी में प्रवेश कर चोरी किए जाने के मामले का पुलिस ने खुलासा करते हुए एक युवक को गिरफ़्तार करके चोरी किया गया माल बरामद कर लिया है। युवक ने आर्थिक तंगी और परिवार का कर्ज़ चुकाने के लिए यह पहली चोरी की थी लेकिन भाग्य ने साथ नहीं दिया और वह पुलिस के हत्थे चढ़ गया। विगत 11/12 फ़रवरी की रात ललित कुमार पुत्र रमाकांत निवासी ग्राम सांक की ज्वैलर्स की दुकान छत काटकर वहां से 2 किलोग्राम से अधिक चांदी के जेवर तथा अन्य कीमती सामान की चोरी कर ली गयी थी बगल में स्थित पारस डेयरी का पिछला दरवाज़ा तोड़कर वहां रखी नकदी को चुराया गया था। एफआईआर दर्ज होने के बाद सीओ तथा अन्य पुलिस स्टाफ़ इस चोरी का खुलासा करने के लिए जुट गया। सीसी टीवी इत्यादि खंगालने के बाद पुलिस ने नगर के मोहल्ला नबीनगर निवासी नूर आलम पुत्र मो. रईस को गिरफ़्तार किया। उसके पास से चोरी किए गए जेवर तथा अन्य नकदी बरामद हो गयी है। नूर आलम ने बताया कि वह लगभग 1.5 लाख रुपए का कर्ज़दार है। माता पिता बूढ़े है, जिनके देखभाल की जिम्मेदारी उसी पर है तथा उसकी दो अविवाहित बहने हैं, जिसकी उन्हें शादी करनी है। नूर आलम ने बताया कि यह उसकी मजबूरी में की गयी पहली चोरी है। अभियुक्त नूरआलम का कोई आपराधिक इतिहास नहीं है। आसपास के लोगों का भी कहना है कि नूर आलम सीधा सादा युवक है। आखिर कैसे यह घटना अंजाम दे सकता है। इसको लेकर वे लोग हक्के बक्के हैं।

आम के बाग को काटते लकड़कट्टों पर एसडीएम का छापा दो ट्रैक्टर ट्रॉली एवं मशीने सीज़, एफ़आईआर दर्ज

संवाददाता। संडीला (हरदोई)

मौके पर मौजूद एसडीएम, लकड़ी से लदी ट्रैक्टर टॉली

एसडीएम ने 84कोसी परिक्रमा मार्ग का निरीक्षण करने जाते समय आम के पेड़ों पर लकड़ कट्टो द्वारा किए जा रहे एक बड़े कटान को पकड़ लिया। उन्हें आता देखकर ठेकेदार और लकड़ी काटने वाले लोग मौके से फ़रार हो गए। प्राप्त जानकारी के अनुसार एसडीएम डॉ0 अरुणिमा श्रीवास्तव 84 कोसी परिक्रमा क्षेत्र निरीक्षण करने के लिए जा रही थीं। इसी बीच उनको ग्राम उमरारी कोतवाली बेनीगंज में कमलेश के आम के बाग में हो रहे कटान की सूचना मिली।

इस पर एसडीएम फ़ोर्स के साथ मौके पर पहुंची। एसडीएम को आता देख लकड़ी काट रहे मज़दूर तथा ठेकेदार भाग खड़े हुए। एसडीएम को मौके से 2 ट्रैक्टर ट्रॉली जिनपे लकड़ी लदी हुई थी तथा पेड़ की छाल छीलने वाली मशीन एवं पेड़ों को जड़ से उखाड़ने वाली जेसीबी मिली। एसडीएम ने फ़ोन करके इंस्पेक्टर बेनीगंज और वनविभाग के अधिकारियों को मौके पर बुलाया।

एसडीएम को जानकारी दी गयी कि उक्त बाग के 30 आम के पेड़ों को रोगग्रस्त और फलहीन होने की सूचना देकर परमिट बनवाया गया था जबकि लकड़कट्टों ने 70 आम के पेड़ काट डाले। यह पेड़ न तो रोग ग्रस्त थे और न ही गैर फ़लदार। लोगों का कहना है कि इन पेड़ों में बराबर फ़सल आती थी। एसडीएम के आदेश पर पुलिस के ठेकेदार के विरुद्ध मुकदमा दर्ज करके ट्रैक्टर ट्रॉली तथा अन्य मशीने कब्ज़े में ले ली हैं।

अधेड़ चालक की हार्ट अटैक से मौत

फतेहपुर। शहर क्षेत्र के शान्तीनगर स्थित रोडवेज वर्कशाप में अधेड़ चालक की हार्ट अटैक से मौत हो गई। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया। बताया जाता है कि मृतक पहले रोडवेज में संविदा में चालक था। जो विभागीय शिथिलता के चलते बर्खास्त कर दिया गया था। अब वह रोडवेज में ही निजी बस चलाता था। जानकारी के अनुसार शहर के बसंत टाकीज के पास स्थित बसंत कालोनी अरबपुर निवासी स्व0 जहांगीर खान का पुत्र शमीम खान रोडवेज से संबंद्ध निजी बस चलाता था। बुधवार को रोडवेज वर्कशाप में मौजूद था। तभी अचानक उसके सीने में तेज दर्द हुआ, जब तक साथी कुछ समझ पाते उसने मौके पर ही दम तोड़ दिया। इसकी जानकारी जब परिजनों को हुई तो वह उसे लेकर जिला अस्पताल पहुंचे, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। गुरूवार को पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया।

क्विक न्यूज़

छापेमारी की कार्रवाई में 21 पीपे धान की भूसी का तेल बरामद

बिंदकी (फतेहपुर)। मुखबिर की सूचना पर खाद विभाग की टीम तथा पुलिस विभाग द्वारा छापेमारी की कार्रवाई की गई। छापामारी की कार्रवाई में 21 पीपे धान की भूसी का तेल बरामद किया गया, जिसको सीज कर दिया गया। खाद्य विभाग के अधिकारी ने बताया कि तेल का नमूना जांच के लिए भेजा गया है। मोहल्ला पैगंबरपुर में मुखबिर की सूचना पर पुलिस तथा खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने बुधवार व गुरुवार की मध्य रात को छापेमारी की कार्रवाई की। छापेमारी की कार्रवाई में 21 पीपे धान की भूसी का तेल बरामद हुआ। खाद्य सुरक्षा अधिकारी दिनेश चंद्र ने गुरुवार को दिन में करीब 01 बजे लिखा पढ़ी की कार्रवाई कर पुलिस को पुलिस को कागजात सौंप दिया। इस मामले में एक खाद्य सुरक्षा अधिकारी दिनेश चंद्र ने बताया कि पकड़े गए तेल के नमूने को भेजा गया है। जांच कर कार्रवाई की जा रही है। भूसी का तेल बरामद होने के बाद हड़कंप मचा रहा। खाद्य सुरक्षा अधिकारी ने बताया कि सूचना मिलने पर और भी इस तरह का तेल मिला तो कार्यवाही की जाएगी। रिफाइंड राइस ब्रांड आयल खुले रूप से नहीं बेचा जा सकता है।

वांछित चोर को पुलिस ने दबोचा

फतेहपुर। चोरी के मुकदमें में वांछित चल रहे एक अभियुक्त को मलवां पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर गिरफ्तार कर उसके पास से घंटी, कमंडल, थाली, लोटा व लोहे का सीकड़ बरामद किया है। सुसंगत धाराओं में कार्रवाई कर न्यायालय भेज दिया। मलवां थाना पुलिस ने पंजीकृत मुअसं 31/2025 धारा 331(4), 3051/298 बीएनएस से संबंधित अभियुक्त वसीक कुरैशी उर्फगुल्लू पुत्र वहीद कुरैशी निवासी ग्राम चखेडी थाना मलवां को मुखबिर की सूचना पर चोरी के सामान एक घंटी, एक कमंडल, एक थाली, एक लोटा व एक लोहे का सीकड़ के साथ गिरफ्तार कर लिया। अपराध धारा 317(2) बीएनएस की बढोत्तरी करते हुए गिरफ्तार अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया।

पास्को एक्ट का वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

फतेहपुर। विभिन्न आपराधिक गतिविधियों में संलग्न अपराधियों की धर पकड़ में थानाध्यक्ष निकेत भारद्वाज के नेतृत्व में पुलिस लगातार सक्रिय है। पुलिस की सख्ती के चलते अपराधी खासकर प्रतिबंधित पशुओं के वध से संबंधित गतिविधियां चलाने वाले क्षेत्र छोड़ चुके हैं। लगातार वारंटी भी गिरफ्तार किए जा रहे हैं। हथगाम थानाध्यक्ष अनिकेत भारद्वाज की अगवाई में पास्को एक्ट में वांछित एक अभियुक्त को हथगाम पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। मुखबिर की सूचना पर सब इंस्पेक्टर राजेन्द्र कुमार यादव मय हमराह कांस्टेबल अन्तिम यादव द्वारा वांछित अभियुक्त गोरेलाल पुत्र रामशरन उर्फदूबे निवासी ग्राम सराय सांबा उर्फनगरा सम्बन्धित मुअसं 09/2025 धारा 137(2)/87/352/351(2)/65 (1) बीएनएस तथा 3/4 पास्को एक्ट को कसरांव मोड़ पर छिवलहा जाने वाली रोड़ से 50 मीटर की दूरी पर से गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष पेश किया।

वाहन की टक्कर से बाइक सवार की मौत

फतेहपुर। कल्यानपुर थाना क्षेत्र के मुरादीपुर ओवर ब्रिज एनएच-2 में बुधवार की शाम अज्ञात वाहन की चपेट में आ जाने से 36 वर्षीय युवक की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद चालक वाहन सहित भाग जाने में सफल रहा। जानकारी के अनुसार कानपुर नगर के मोहल्ला गैस एनजीआई थाना बर्रा निवासी ओमप्रकाश पाण्डेय का पुत्र अमित पाण्डेय जल निगम में ठेकेदारी का काम करता था। बुधवार की शाम कार्य किसी कार्यवश फतेहपुर शहर आ रहा था। जब वह मुरादीपुर ओवरब्रिज एनएच-2 में पहुंचा तभी पीछे से तेज रफ्तार आ रहे अज्ञात वाहन ने उसे टक्कर मार दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने शव को विच्छेदन गृह भेज दिया।

रोजगार मेले में 59 अभ्यर्थियों का हुआ चयन

कानपुर देहात। जिलाधिकारी आलोक सिंह के निर्देशन में जिला सेवायोजन कार्यालय कानपुर देहात द्वारा स्थान जिला सेवायोजन कार्यालय परिसर माती कानपुर देहात में एक दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन किया गया। मेले में लगभग 93 अभ्यर्थियों ने प्रतिभाग किया जिसमें 59 अभ्यर्थियों का प्राथमिक चयन किया गया। रोजगार मेले को सफल बनाने हेतु शशि तिवारी जिला सेवायोजन अधिकारी कानपुर देहात, जिला सेवायोजन कार्यालय के अनुज यादव, तेज प्रताप, राम किशोर सोनकर, विनोद कुमार के सहयोग से मेले को सफलतापूर्वक सपन्न कराया गया।

विद्यालय में तैनात चौकीदार की मौत

फतेहपुर। शहर के क्षेत्र के पक्का तालाब स्थित आरएस एवसेल विद्यालय में तैनात 42 वर्षीय चौकीदार की अचानक तबियत बिगडने पर अस्पताल ला रहे थे। तभी रास्ते में उसने दम तोड दिया। राधानगर थाना क्षेत्र के सोनही गांव निवासी अमृत लाल पुत्र रजनीश आरएस एवसेल विद्यालय में चौकीदारी करता था। जिसकी अचानक तबियत बिगडने पर परिजन उसे उपचार के लिए जिला चिकित्सालय ला रहे थे, रास्ते में उसकी मौत हो गयी। पुलिस ने शव को विच्छेदन गृह भेज दिया।

पेंटिंग प्रतियोगिता मे जानवी को मिला प्रथम स्थान

कानपुर देहात। डीएम आलोक सिंह के निर्देशन एवं प्रभागीय वनाधिकारी ए.के. द्विवेदी के कुशल मार्गदर्शन में पर्यावरण निदेशालय द्वारा संचालित जिला योजना 2024-25 के अंतर्गत जिला गंगा समिति के जिला परियोजना अधिकारी विवेक कुमार सैनी के नेतृत्व में फुलेश्वर महादेव इंटर कॉलेज मे नदी एवं पर्यावरण संरक्षण विषय पर पेंटिंग/चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सुंदर चित्र बनाने वाले छात्र.छत्राओ को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। जिला गंगा समिति कानपुर देहात के तत्वाधान मे पर्यावरण एवं नदी संरक्षण विषय पर जागरूकता चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्रों के द्वारा अपने चित्रों में नदी में गंदा पानी रोकनेए पेड़ों को बचानेए जलीय जीवो के संरक्षणए वर्षा का जल संरक्षण करने का संदेश दिया द्य सुंदर चित्र बनाने वाले छात्रों में प्रथम स्थान जानवी दुबे, रक्षा को द्वितीय स्थान एव सौम्या सिंह को तृतीय स्थान मिला।

सीएचसी में बढ़ी बुखार, खांसी के मरीजों की संख्या

सीएचसी में मरीजों को देखते डा. नीरज कुमार।

गुरसहायगंज, कन्नौज। बदलते मौसम में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में मरीजों की भीड़ उमड़ पडी। चिकित्सक ने डेढ़ सैकड़ा से अधिक मरीजों का परीक्षण कर उन्हें उचित परामर्श और दवाएं वितरित कीं। मौसमी बीमारियों और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं के कारण केंद्र में मरीजों की संख्या में अचानक वृद्धि देखी गई। गुरूवार को करीब 190 मरीजों को देखनें के उपरान्त चिकित्सा प्रभारी डा. नीरज कुमार ने बताया कि अधिकांश मरीज वायरल बुखार, सर्दी-खांसी, जुखाम, त्वचा संबंधी रोग और उच्च रक्तचाप जैसी समस्याओं से पीड़ित थे। बीमारियों से बचाव के उपाये बताते हुये कहा कि बदलते मौसम के कारण बीमारियों का प्रकोप बढ़ गया है। स्वच्छता का ध्यान रखने, पौष्टिक आहार लेने, मच्छरों से बचाव के उपाय अपनानें सहित उबला हुआ पानी पीनें और घरों के आसपास गंदे जल का भराव ना होने दें। किसी भी बीमारी के लक्षण दिखने पर तुरंत डॉक्टर से संपर्क करने की सलाह दी।

विशाल मानसिक स्वास्थ्य मेले का आयोजन

लखीमपुर.खीरी। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मोहम्मदी में अधीक्षक डॉ मयंक मिश्रा की अध्यक्षता में मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत एक विशाल मानसिक स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया। मानसिक स्वास्थ्य मेले का उद्घाटन नगर पालिका अध्यक्ष कन्हैया मेहरोत्रा द्वारा किया गयाए जिसमें जिला चिकित्सालय मोतीपुर ओयल के मनोचिकित्सक डॉ अखिलेश शुक्ला द्वारा 108 मानसिक रोगियों का उपचार किया गयाए साथ ही अन्य बीमारियों बीपीए शुगरए टीबी एप्रसूताओं आदि के रोगियों की जांचे एवं उपचार निःशुल्क प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉ अखिलेश शुक्लाए डॉ आलोकए डॉ कुलदीपए डॉ धर्मेंद्रए चीफ फार्मासिस्ट डॉ सुशील शुक्लाए फार्मासिस्ट विनीत गुप्ताए एनसीडी नर्सिंग ऑफिसर निशांत शुक्लाए लैब टेक्नीशियन अभिषेक सिंहए काउंसलर राजिद खानए प्रेम वर्मा बीसीपीएमए देवेंद्र पाण्डेय एवं अन्य समस्त स्टाफ ने स्वास्थ्य सेवाएं एवं सहयोग प्रदान किया गया।

चोरी की घटना का जल्द से जल्द खुलासा करे पुलिसः सुशील दुबे

एसपी को शिकायती पत्र देकर चोरी के खुलासे कर मांग करते व्यापारी।

गुरसहायगंज, कन्नौज। विगत दिनों पूर्व महाकुभ में परिजनों के साथ स्नान करनें गये पूर्व सभासद के बंद पडे घर का चोरों ने ताला तोडकर लाखों रुपयों के जेवरात व नगदी चोरी किये जानें के मामले में व्यापारी नेताओं ने जिला मुख्यालय पुहंचकर एसपी से वार्ता कर चोरी के मामले का जल्द से जल्द खुलासा किये जाने की मांग की है। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मण्डल के प्रतिनिधि मंडल ने जनपद मुख्यालय पहुंचकर नगर के मोहल्ला दिशाद नगर में पूर्व सभासद मोहित गुप्ता के घर पर हुई चोरी को लेकर पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार से मुलाकात की और लिखित पत्र सौंपकर चोरी के मामले की जल्द से जल्द खुलासे की। पुलिस अधीक्षक नें व्यापारी नेताओं को चोरी की घटना का जल्द खुलासा करनें का आश्वासन दिया। इस दौरान प्रदेश संयुक्त महामंत्री सुशील दुबे, पूर्व सभासद मोहित गुप्ता, जिला संयुक्त महामंत्री संजीव कुमार गुप्ता, जिला महामंत्री रतन गुप्ता, नवीन प्रकाश गुप्ता, नगर अध्यक्ष अनुराग गुप्ता, नगर उपाध्यक्ष कमलेश राजपूत आदि मौजूद रहे।

आम रास्ते पर अवैध कब्जे की डीएम से शिकायत

अवैध कब्जे को हटाने व कार्रवाई किए जाने की लगाई गुहार

फतेहपुर। गाजीपुर थाना क्षेत्र के ग्राम चकअल्लीपुर के रहने वाले ग्रामीणों ने जिलाधिकारी को शिकायती पत्र सौंपकर आम रास्ते पर किए गए अवैध कब्जे के बाबत शिकायत दर्ज कराई। ग्रामीणों ने अवैध कब्जे को हटवाकर कार्रवाई किए जाने की मांग की है। जिलाधिकारी को दिए गए शिकायती पत्र में ग्रामीणों ने बताया कि मुहल्ले के लिए जितेन्द्र के घर से ज्ञानश्री के घर तक आम रास्ते पर सरकारी खड़ंजा लगा था। जिससे ट्रैक्टर आदि वाहन निकल जाते थे। वर्तमान में खड़ंजा के बगल में आनंद व अतुल पुत्रगण संतोष तिवारी की कुछ जगह पड़ी थी। लोग खड़ंजे को उखाड़ कर उस आम रास्ते पर कब्जा करके अवैध निर्माण कर रहे हैं, जिसको मुहल्लेवासियों ने रोका तो आनंद व अतुल आदि ने अभद्र अश्लील गालियां दी और मारपीट पर अमादा हो गए। इनको कुछ दबंगों का सह प्राप्त है।

बताया कि 1076 व 112 नंबर पर फोन करके शिकायत दर्ज कराई। पुलिस व लेखपाल ने आकर इनको निर्माण कार्य करने से मना किया लेकिन पुलिस व लेखपाल के जाने के बाद पुनः दबंगई से काम शुरू कर दिया। बताया कि ग्राम रास्ते पर खड़ंजा उखाड़ कर ग्राम सभा की सम्पत्ति को क्षति पहुंचाई गई है। आम रास्ता सकरा होने से अब घर तक ट्रैक्टर आदि वाहन नहीं पहुंच पाएंगे। जिससे बहुत परेशानी होगी। ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से आम रास्ते पर किए जा रहे अवैध कब्जे को हटवाने व कब्जा करने वालों के खिलाफ कार्रवाई किए जाने की गुहार लगाई है। इस मौके पर राम आसरे, अमरपाल, भुइयादीन, सुमेर, बच्चनलाल, संदीप कुमार, नरेन्द्र कुमार, अमरपाल, सुमेर, गुलाब, राम आसरे, मुकेश भी मौजूद रहे।

कार की टक्कर से बाइक सवार लेखपाल की दर्दनाक मौत

बिंदकी (फतेहपुर)। ट्रेनिंग से बाइक द्वारा वापस अपने घर जा रहा लेखपाल तेज रफ्तार अनियंत्रित कर की टक्कर से गंभीर घायल हो गया जिसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया जहां पर चिकित्सक ने मृत्यु घोषित कर दिया लेखपाल की मौत के बाद परिजनों में हड़कंप मच गया परिजन रो रो कर बेहाल हो रहे थे घटना की जानकारी मिलने पर विधायक तथा उप जिला अधिकारी एवं तहसीलदार सहित तमाम लोग पहुंचे।

जानकारी के अनुसार कोतवाली क्षेत्र के तेंदुली गांव के समीप पेट्रोल पंप के सामने गुरुवार को दिन में लगभग 2रू00 बजे तेज रफ्तार अनियंत्रित कार की टक्कर से बाइक सवार लेखपाल अमित कुमार उम्र लगभग 30 वर्ष पुत्र सूरज बली निवासी ग्राम नोनारा थाना जहानाबाद जनपद फतेहपुर की दर्दनाक मौत हो गई हालांकि जीवित रहने की आशा पर इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की ले जाया गया जहां पर चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया।

मृतक युवक कि लेखपाल पद पर नियुक्त हो चुकी थी और वह फतेहपुर में ट्रेनिंग कर रहा था। ट्रेडिंग के दौरान उसकी नियुक्ति घोरहा गांव में थी। वह लेखपाल की ट्रेनिंग कर फतेहपुर से अपने घर जा रहा था, तभी रास्ते में दुर्घटना हो गई और उसकी दर्दनाक मौत हो गई। दुर्घटना की जानकारी मिलने पर विधायक राजेंद्र सिंह पटेल उप जिलाधिकारी तथा तहसीलदार सहित तमाम अधिकारी कर्मचारी एवं लेखपाल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे युवक की मौत के बाद परिजन रो-रोकर बेहाल हो रहे थे इस संबंध में कोतवाली प्रभारी निरीक्षक सुनील कुमार सिंह ने बताया कि शव को कब्जे में लेकर पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

छाया एकीकृत ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण दिवस के अवसर पर हुई कार्यशाला

लखीमपुर खीरी। छाया एकीकृत ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण दिवस के अवसर पर सीएमओ ऑफिस कार्यालय सभागार में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें सीएचसी अधीक्षक/ चिकित्सा अधिकारी व बीपीएम, एचईओ, एआरओ एवं बीसीपीएम को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रभारी सीएमओ डॉ अनिल कुमार गुप्ता के नेतृत्व में संपन्न हुआ।

प्रभारी मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ अनिल कुमार गुप्ता ने बताया कि छाया एकीकृत ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण दिवस (सीआईवीएचएसएनडी) प्रशिक्षण टीओटी का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम सीएमओ ऑफिस सभागार कक्ष में समस्त अधीक्षक/ चिकित्सा अधिकारी व बीपीएम, एचईओ, एआरओ एवं बीसीपीएम को भी प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण डिप्टी सीएमओ जिला प्रशिक्षण अधिकारी डॉ प्रमोद वर्माए जिला मातृ स्वास्थ्य परामर्शदाता लक्ष्मा सिंह, जिला वरिष्ठ विशेषज्ञ डॉ रवि गुप्ता, जिला विशेषज्ञ कम्युनिटी हेल्थ अंशुमान पांडेय, डीसीपीएम कुलदीप सिंह के द्वारा प्रदान किया गया। जनपदस्तर से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद प्रशिक्षकों द्वारा यह प्रशिक्षण ब्लॉक स्तर पर समस्त आशा व आशा संगिनी एवं एएनएम को प्रशिक्षित किया जाएगा।

मशीन चोरी मामले में उच्चतम न्यायालय ने आजम खान और उनके बेटे को जमानत दी

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने मशीन चोरी के एक मामले में उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री आजम खान और उनके बेटे अब्दुल्ला आजम खान को जमानत दे दी है। जमानत से इनकार करने के इलाहाबाद उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती देते हुए उन्होंने उच्चतम न्यायालय का रुख किया था। न्यायमूर्ति एम. एम. सुंदरेश और न्यायमूर्ति राजेश बिंदल की पीठ ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के उस आदेश को खारिज कर दिया जिसमें उनकी जमानत याचिका खारिज कर दी गई थी। पीठ ने कहा, मामले के तथ्यों और परिस्थितियों जिसमें अपीलकर्ताओं द्वारा जेल में बिताई गई अवधि भी शामिल है, को ध्यान में रखते हुए हम आदेश को खारिज करने एवं अपीलकर्ताओं को जमानत देने के लिए तैयार हैं क्योंकि इस संबंध में आरोप पत्र पहले ही दाखिल किया जा चुका है।

पीठ ने 10 फरवरी के अपने आदेश में कहा, इसलिए आदेश को रद्द किया जाता है और अपीलकर्ताओं को उन शर्तों व नियमों के अधीन जमानत प्रदान की जाती है, जो अधीनस्थ अदालत की संतुष्टि के अनुरूप हों। शीर्ष अदालत ने अधीनस्थ अदालत से अपीलकर्ताओं पर यह शर्त लगाने को कहा कि वे मुकदमे की कार्यवाही खत्म होने तक सहयोग करेंगे और गवाहों को प्रभावित करने या उन्हें अपने पक्ष में करने का कोई प्रयास नहीं करेंगे। पीठ ने कहा, अपीलकर्ताओं पर लगाई गई किसी भी शर्त के उल्लंघन के मामले में प्रतिवादी को जमानत रद्द करने का अनुरोध करने की स्वतंत्रता भी दी जाती है। खान और उनके बेटे ने उच्च न्यायालय के 21 सितंबर के आदेश के खिलाफ शीर्ष अदालत का रुख किया था। खान, उनके बेटे और पांच अन्य के खिलाफ 2022 में आपराधिक मामला दर्ज किया गया था, जिसमें आरोप लगाया गया था कि उन्होंने सड़क साफ करने वाली मशीन चुरा ली थी, जिसे नगर पालिका परिषद, रामपुर जिले ने खरीदा था। यह भी आरोप लगाया गया था कि यह मशीन बाद में रामपुर स्थित खान के जौहर विश्वविद्यालय से बरामद की गई थी। उत्तर प्रदेश में सरकार बदलने के बाद वकार अली खान नामक व्यक्ति ने 2022 में सात लोगों के खिलाफ कोतवाली, रामपुर में प्राथमिकी दर्ज कराई थी। प्राथमिकी में आरोप लगाया गया था कि खान एवं अन्य ने 2014 में सड़क साफ करने की सरकारी मशीन चुरा ली थी।

वाईएसआरसीपी नेता वल्लभनेनी वामसी को हैदराबाद में गिरफ्तार किया गया

भाषा। अमरावती/हैदराबाद

आंध्र प्रदेश पुलिस ने युवजन श्रमिक रायथू कांग्रेस पार्टी (वाईएसआरसीपी) के पूर्ववर्ती शासन के दौरान तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) के गन्नावरम स्थित कार्यालय पर हुए हमले के मामले में हैदराबाद में वाईएसआरसीपी नेता वल्लभनेनी वामसी को गिरफ्तार कर लिया। गन्नावरम के पूर्व विधायक को अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) रैंक के एक अधिकारी ने गिरफ्तारी का नोटिस दिया।

पुलिस ने बताया कि वामसी को हैदराबाद के रायदुर्गम में एक अपार्टमेंट परिसर से गिरफ्तार किया गया। उसने बताया कि वामसी के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता और अनुसूचित जातिअनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। ऐसा बताया जा रहा है कि वामसी को पड़ोसी राज्य से विजयवाड़ा ले लाया जा रहा है। इस बीच, वाईएसआरसीपी ने आरोप लगाया कि वामसी की गिरफ्तारी अवैध है क्योंकि उन्हें मामले में अग्रिम जमानत मिल गई है।

वाईएसआरसीपी ने इस मामले में शिकायतकर्ता का जिक्र करते हुए सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, वामसी गन्नावरम में तेदेपा के कार्यालय पर हमले के मामले में अग्रिम जमानत पर हैं। हाल में सत्यवर्धन ने भी अपनी याचिका वापस ले ली है। वाईएसआरसीपी ने आरोप लगाया कि शिकायत वापस लिए जाने के बावजूद तेदेपा के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार के नेता गन्नावरम के पूर्व विधायक को झूठे मामलों के जरिए निशाना बना रहे हैं। विपक्षी दल ने मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू से सवाल किया कि इस तरह की बदले की राजनीति कैसे चलेगी?

सीतारमण ने रास्ते से हट जाओ वाली टिप्पणी के लिए चिदंबरम पर निशाना साधा

नई दिल्ली(भाषा)। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बृहस्पतिवार को पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम की रास्ते से हट जाओ वाली टिप्पणी पर पलटवार करते हुए कहा कि भारत के लोगों ने कांग्रेस को सरकार से बाहर निकलने पर मजबूर कर दिया। सीतारमण राज्यसभा में बजट पर हुई चर्चा का जवाब दे रही थीं। इस दौरान उन्होंने चिदंबरम पर उनकी उस टिप्पणी के लिए निशाना साधा, जिसमें पूर्व वित्त मंत्री ने आर्थिक सर्वेक्षण में सरकार को मुख्य आर्थिक सलाहकार की सलाह का हवाला देते हुए सरकार पर हमला किया था।

चिदंबरम ने कहा था कि शुक्र है कि मुख्य आर्थिक सलाहकार ने आर्थिक सर्वेक्षण की प्रस्तावना में स्पष्ट और बेबाक बात कही है और समझदारी भरी सलाह दी कि रास्ते से हट जाइए और विनियमन हटाइए। उन्होंने कहा था कि मुख्य आर्थिक सलाहकार ने सुधार के लिए जमीनी स्तर पर विनियमन हटाने और संरचनात्मक सुधारों की सिफारिश की है, लेकिन वित्त मंत्री ने इसके उलट रास्ता अपनाया। सीतारमण ने पलटवार करते हुए कहा, भारत के लोगों ने उन्हें (कांग्रेस को) सरकार से बाहर कर दिया है। भारत के लोगों ने उन्हें शासन से बाहर कर दिया है। उन्होंने चिदंबरम और उनकी पार्टी पर निशाना साधते हुए कहा कि यहां तक कि 1947 में महात्मा गांधी ने भी कांग्रेस पार्टी को समाप्त करने की सलाह दी थी, इसके बावजूद वे अभी भी भारत के राजनीतिक क्षेत्र में बने हुए हैं।

कामकाज का जिक्र करते हुए सीतारमण ने कहा कि जहां तक मोदी सरकार की बात है, तो प्रधानमंत्री ने बार-बार कहा है कि उनकी सरकार लालफीताशाही के खिलाफ है और उद्योग के लिए रेड कार्पेट बिछाने के पक्ष में है। उन्होंने कहा, "... 1,550 गैरजरूरी कानूनों को समाप्त कर दिया गया है। 40,000 अनावश्यक अनुपालन हटा दिए गए हैं और इनसे सहूलियत बढ़ी है। सीतारमण ने कहा कि मुख्य आर्थिक सलाहकार स्वतंत्र हैं और समूचे राष्ट्र के लिए सुझाव देते हैं। उन्होंने कहा, मैं भी चाहती हूं कि राज्य सरकारें पुराने पड़ चुके कानूनों को हटाने के इस रास्ते का अनुसरण करें, बाहर निकलें... मैं चाहती हूं कि पूर्व वित्त मंत्री कांग्रेस सरकारों को सुझाव दें। आप लोगों को परेशान न करें। वे उद्यमी बनना चाहते हैं। वे बढ़ना चाहते हैं। वित्त मंत्री ने कहा कि यह मोदी सरकार ही थी जो जन विश्वास कानून लाई, एंजेल टैक्स को समाप्त कर दिया, ताकि स्टार्टअप काम कर सकें। सीतारमण ने चिदंबरम के उन सुझावों को भी खारिज कर दिया कि बजट में विदेश मंत्रालय के आवंटन में कटौती की गई है। उन्होंने समाजवादी पार्टी (सपा) सदस्य जया बच्चन के इन आरोपों का भी जवाब दिया कि फिल्म उद्योग को सरकार द्वारा समर्थन नहीं दिया गया है।

क्या अदालतें मध्यस्थता से जुड़े फैसलों को संशोधित कर सकती हैं

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय के पांच न्यायाधीशों की पीठ ने बृहस्पतिवार को एक अहम कानूनी मुद्दे पर सुनवाई शुरू की कि क्या अदालतें मध्यस्थता और सुलह से संबंधित वर्ष 1996 के कानून के प्रावधानों के तहत मध्यस्थता से जुड़े फैसलों को संशोधित कर सकती हैं? प्रधान न्यायाधीश संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति बी आर गवई, न्यायमूर्ति संजय कुमार, न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की एक संविधान पीठ वर्तमान में केंद्र की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता को सुन रही है।

मध्यस्थता और सुलह अधिनियम, 1996 के तहत विवाद के निपटारे का एक वैकल्पिक तरीका मध्यस्थता है और यह न्यायाधिकरणों द्वारा दिए गए फैसलों में अदालतों के हस्तक्षेप करने की भूमिका को कम करता है। अधिनियम की धारा 34 प्रक्रियात्मक अनियमितताओं, सार्वजनिक नीति के उल्लंघन या अधिकार क्षेत्र की कमी जैसे सीमित आधार पर मध्यस्थता से जुड़े फैसलों को रद्द करने का प्रावधान करती है।

धारा 37 मध्यस्थता से संबंधित आदेशों के खिलाफ अपील को नियंत्रित करती है, जिसमें फैसले को रद्द करने से इनकार करने वाले आदेश भी शामिल हैं। प्रधान न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली तीन न्यायाधीशों की पीठ ने 23 जनवरी को इस विवादास्पद मुद्दे को एक बड़ी पीठ को सौंप दिया था। पीठ ने कहा कि यह अदालत सबसे पहले भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) के परियोजना निदेशक बनाम एम हकीम मामले में दिए गए उस कारण पर पुनर्विचार की मांग करने वाले वकील की दलीलें सुनेगी, जिसमें यह निहित है कि अदालत के पास मध्यस्थता और सुलह अधिनियम, 1996 की धारा 34 और 37 के तहत एक फैसले को संशोधित करने की शक्ति है।

ब्रिटिश महिला से शादी के बाद सांसद ने लोकसभा में रक्षा मामलों पर सवाल पूछने शुरू किए: हिमंत

गुवाहाटी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने बृहस्पतिवार को कांग्रेस नेता गौरव गोगोई पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि उन्होंने ब्रिटिश नागरिक से शादी के बाद संसद में संवेदनशील रक्षा मामलों पर सवाल उठाए। हालांकि गोगोई ने इसे झूठा आरोप करार दिया। भाजपा ने गोगोई की पत्नी पर पाकिस्तान और उसकी खुफिया एजेंसी आईएसआई के साथ संबंध रखने का आरोप लगाया था, जिसके बाद शर्मा ने यह टिप्पणी की है। लोकसभा में विपक्ष के उपनेता ने इस आरोप को हास्यास्पद बताते हुए खारिज कर दिया।

शर्मा ने एक्स पर एक पोस्ट में गोगोई का नाम लिए बिना दावा किया, 2015 में, भारत में पाकिस्तानी उच्चायुक्त, श्री अब्दुल बासित ने पहली बार संसद सदस्य और उनके स्टार्टअप, पॉलिसी फॉर यूथ को नई दिल्ली में पाकिस्तान उच्चायोग में भारत-पाकिस्तान संबंधों पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित किया था। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा, खास बात यह है कि, सांसद उस समय विदेश मामलों की संसदीय समिति के सदस्य नहीं थे, लिहाजा इससे उनकी नियुक्ति पर सवाल उठता है।

शर्मा ने दावा किया कि यह यात्रा आंतरिक मामलों में पाकिस्तानी उच्चायोग के हस्तक्षेप, विशेष रूप से हुर्रियत कॉन्फ्रेंस के साथ उसकी संलिप्तता के खिलाफ भारत के आधिकारिक विरोध के बावजूद हुई। उन्होंने सांसद पर इन चिंताओं की अनदेखी करने तथा 50 से 60 युवा भारतीयों को पाकिस्तानी अधिकारियों से मिलने ले जाने का भी आरोप लगाया। शर्मा ने कहा, संसद में उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों की गहन जांच से पता चला कि उनका ध्यान संवेदनशील रक्षा मामलों पर अधिक केंद्रित था, जिसमें तटरक्षक रडार प्रतिष्ठानों, भारत के हथियार कारखानों, वैमानिकी रक्षा, ईरान के साथ व्यापार के लिए पारगमन मार्ग, कश्मीरी छात्रों और गिरजाघरों पर कथित हमलों से संबंधित सवाल शामिल हैं – जो उनके रुचि के क्षेत्रों में एक उल्लेखनीय बदलाव को दर्शाता है।

शर्मा ने आरोप लगाया, दिलचस्प बात यह है कि ए घटनाक्रम एक ब्रिटिश नागरिक से विवाह के तुरंत बाद हुआ, जिसकी पेशेवर पृष्ठभूमि और भी सवाल खड़े करती है। मुख्यमंत्री ने यह दावा भी किया कि शादी से पहले उन्होंने (सांसद से विवाह करने वाली ब्रिटिश महिला ने) एक अमेरिकी सांसद के लिए काम किया था, जो पाकिस्तानी सेना के साथ घनिष्ठ संबंधों के लिए जाने जाते थे। शर्मा ने आरोप लगाया, ...और बाद में (उन्होंने) पाकिस्तान में कुछ समय बिताया, जहां वह एक ऐसे संगठन में कार्यरत रहीं, जिसके बारे में व्यापक रूप से माना जाता है कि वह इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) का मुखौटा है।

मोदी ने विश्व रेडियो दिवस पर देशवासियों को बधाई दी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बृहस्पतिवार को विश्व रेडियो दिवस की शुभकामनाएं दीं और कहा कि संचार का यह माध्यम लोगों को जानकारी देने, प्रेरित करने और जोड़ने की शाश्वत जीवनरेखा रहा है। प्रधानमंत्री ने लोगों से इस महीने के आखिरी रविवार को आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात की ताजा कड़ी के लिए सुझाव भी आमंत्रित किए। हर साल 13 फरवरी को विश्व रेडियो दिवस मनाया जाता है। यह दिन रेडियो के महत्व के बारे में आम जनता और समाचार माध्यमों में जागरूकता बढ़ाने तथा रेडियो के जरिए सूचना उपलब्ध कराने के लिए नीति-निर्माताओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मनाया जाता है। प्रधानमंत्री ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, आपको विश्व रेडियो दिवस की शुभकामनाएं। रेडियो लोगों को जानकारी देने, प्रेरित करने और जोड़ने के लिए शाश्वत जीवनरेखा रहा है। समाचार और संस्कृति से लेकर संगीत और कहानी सुनाने तक, यह एक ऐसा शक्तिशाली माध्यम है।

सावंत का विमान पुणे मोड़ने का निर्णय उचित सत्यापन के बाद लिया: अधिकारी

पुणे (महाराष्ट्र)। महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री तानाजी सावंत के बेटे को बैंकॉक ले जा रहे विमान के पायलटों को जब बीच रास्ते में पुणे लौटने के लिए कहा गया तो उन्होंने सोचा कि यह एक फर्जी संदेश है, लेकिन विमानन अधिकारियों से पुष्टि के बाद उन्होंने ऐसा किया। विमानन कंपनी (एयरलाइन) के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। निजी कंपनी द्वारा संचालित विशेष विमान ऋषिराज सावंत (32) और उनके दो दोस्तों को लेकर सोमवार को रात आठ बजे से साढ़े आठ बजे के बीच पुणे हवाई अड्डे पर लौट आया, जिससे थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक की उनकी यात्रा नहीं हो पाई। ऋषिराज सावंत ने अपनी इस यात्रा के बारे में अपने पिता तानाजी सावंत और परिवार को नहीं बताया था। तानाजी सावंत महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री और फिलहाल सत्तारूढ़ शिवसेना के नेता हैं। एयरलाइन का संचालन करने वाली कंपनी के कार्यकारी अधिकारी ने बुधवार को जोर देकर कहा कि विमान को पुणे की ओर मोड़ने का निर्णय उचित सत्यापन के बाद ही लिया गया था। पुलिस ने नाटकीय घटनाक्रम में, एक अज्ञात व्यक्ति की तरफ से फोन कॉल पर सूचना मिलने और तानाजी सावंत के दखल के बाद अपहरण का मामला दर्ज किया तथा बैंकॉक जा रहे ऋषिराज सावंत व उनके दो दोस्तों को जल्दबाजी में पुणे वापस लाया गया। हालांकि बाद में सावंत ने दावा किया था कि यह उनकी व्यावसायिक यात्रा थी, जिसे उन्होंने गुप्त रखा था। एयरलाइन के अधिकारी ने कहा, जब हमें (परिवार के सदस्यों की ओर से) उड़ान वापस लाने के संबंध में पहला फोन कॉल आया तो हमने इस पर विश्वास नहीं किया। हम इस तरह के फोन पर विश्वास नहीं कर सकते क्योंकि वे फर्जी हो सकते हैं। लेकिन नागरिक उड्डयन मंत्रालय और नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) से उचित सत्यापन और यह जानने के बाद कि मामला पुलिस द्वारा जांच किए जा रहे अपहरण के मामले से संबंधित है, तो उन्होंने उड़ान को वापस पुणे लाने का फैसला लिया गया। उन्होंने कहा कि नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने उड़ान को बीच रास्ते से वापस लाने के फैसले के लिए विमानन कंपनी की सराहना की है। अधिकारी ने कहा कि यह शायद अपनी तरह का पहला मामला है जिसमें किसी यात्री के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज होने का हवाला देकर उड़ान को बीच रास्ते से वापस बुला लिया गया। अधिकारी ने बताया कि जब विमान को पुणे हवाई अड्डे पर लौटाने के लिए कहा गया, तब वह केंद्र शासित प्रदेश अंडमान-निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर (श्री विजयपुरम) के ऊपर से उड़ रहा था और विमान में सवार तीन लोगों को मार्ग परिवर्तन के बारे में सूचित नहीं किया गया था ताकि पायलटों एवं चालक दल के सदस्यों के साथ हंगामे या किसी भी तरह के बहस से बचा जा सके। उन्होंने कहा, यात्रियों के सामने नक्शे और नेविगेशन (यात्रा का मार्ग) दिखाने वाली स्क्रीन पहले से ही बंद थी और उन्हें इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि उनका विमान उनकी जानकारी के बिना ही पुणे लौट रहा है। वे खाना खाने के बाद आराम कर रहे थे। उन्होंने कहा, पुणे अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरने के बाद यात्री (ऋषिराज) और दो अन्य लोग हैरान थे और उन्होंने पायलटों से गुस्से में सवाल पूछे। पायलट-इन-कमांड ने उन्हें बताया कि वे केवल निर्देशों का पालन कर रहे थे। अधिकारी के अनुसार, विमान के पुणे हवाई अड्डे पर पहुंचते ही केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के जवान तुरंत अंदर गए और यात्रियों को विमान से बाहर ले आए। पुणे पुलिस को सोमवार को शाम करीब चार बजे एक गुमनाम व्यक्ति का फोन कॉल आया था, जिसने दावा किया था कि कुछ अज्ञात लोग ऋषिराज सावंत को ले गए हैं। तानाजी सावंत घबराए हुए मदद के लिए पुलिस आयुक्त के दफ्तर पहुंचे, जिसके बाद पुलिस ने तुरंत अपहरण का मामला दर्ज कर लिया। पुलिस के अनुसार, जांच में पता चला है कि ऋषिराज सावंत ने अपने दो दोस्तों के साथ अपने परिवार को बताए बिना बैंकॉक के लिए एक चार्टर्ड विमान बुक किया था। ऋषिरात सावंत ने बाद में पुलिस को बताया कि उन्होंने परिवार के गुस्से से बचने के लिए अपनी व्यावसायिक यात्रा गुप्त रखी थी।

तेजस्वी सूर्या ने एचएएल के स्वदेशी बुनियादी प्रशिक्षण विमान में उड़ान भरी

बेंगलुरु। भाजपा के सांसद तेजस्वी सूर्या ने यहां जारी एयरो इंडिया-2025 के दौरान भारत के स्वदेशी बुनियादी प्रशिक्षण विमान एचटीटी-40 में बृहस्पतिवार को उड़ान भरी। सूर्या ने एचएएल द्वारा डिजाइन और निर्मित विमान में 30 मिनट तक सवारी की। भाजपा सांसद ने मीडिया से बातचीत में एचएएल की सराहना की और इसे बेंगलुरु एवं भारत का गौरव तथा भारत की वैमानिकी प्रगति का प्रतीक बताया। आज मुझे हमारे अपने एचएएल द्वारा निर्मित एचटीटी 40 में उड़ान भरने का अवसर मिला। एचएएल भारत का गौरव है। यह बेंगलुरु का गौरव है। इस विशेष विमान की एक बहुत ही रोचक व महत्वपूर्ण कहानी है, एक विरासत है, राष्ट्र की प्रगति व राष्ट्रीय सुरक्षा में रुचि रखने वाले भारत के लोगों के लिए एक प्रेरणा है। आरोप लगाया कि 2012 में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) सरकार ने एक स्विस कंपनी से प्रशिक्षण विमान खरीदने का ऑर्डर दिया और पिलाटस विमान खरीदे।

रणवीर इलाहाबादिया पुलिस के सामने नहीं हुए पेश, उपस्थित रहने को कहा

मुंबई। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर रणवीर इलाहाबादिया को एक यूट्यूब शो में विवादास्पद टिप्पणी से संबंधित मामले की जांच के सिलसिले में पेश नहीं होने के बाद शुक्रवार को यहां खार थाने में उपस्थित रहने को कहा गया। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। महाराष्ट्र साइबर प्रकोष्ठ और मुंबई पुलिस ने कॉमेडियन समय रैना को भी अगले पांच दिन में पेश होने के लिए कहा है। रैना विवादास्पद रियलिटी शो इंडियाज गॉट लेटेंट से जुड़ा है। एक अधिकारी ने बताया कि इलाहाबादिया को बृहस्पतिवार को खार थाने में पेश होना था लेकिन वह नहीं आया और उसने पुलिस से कहा कि उसे मीडिया का डर है।

अधिकारी ने बताया कि उसे यह स्पष्ट कर दिया गया कि वह पूछताछ से बच नहीं सकता और उसे शुक्रवार को आना होगा। साइबर प्रकोष्ठ और मुंबई पुलिस यूट्यूब शो इंडियाज गॉट लैटेंट में इलाहाबादिया की अभद्र टिप्पणी के संबंध में अलग-अलग जांच कर रही हैं।

अधिकारियों ने बताया कि रैना अमेरिका में हैं और उसने जांच अधिकारियों के सामने पेश होने के लिए और समय मांगा है। एक अधिकारी ने बताया कि मुंबई पुलिस ने रैना को 17 फरवरी से पहले बयान दर्ज करने के लिए कहा है जबकि साइबर प्रकोष्ठ ने उसे 18 फरवरी को तलब किया है। इलाहाबादिया और कुछ अन्य के खिलाफ गुवाहाटी में दर्ज मामले की जांच के सिलसिले में मुंबई में मौजूद असम पुलिस की एक टीम ने बृहस्पतिवार को महाराष्ट्र साइबर प्रकोष्ठ के अधिकारियों से मुलाकात की। अधिकारी ने बताया कि मुंबई पुलिस ने भाजपा के एक पदाधिकारी की शिकायत पर रियलिटी शो पर इलाहाबादिया की टिप्पणियों के संबंध में अब तक सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर अपूर्व मखीजा समेत सात लोगों के बयान दर्ज किए हैं।

केरल के नर्सिंग कॉलेज में छात्र को निर्वस्त्र किया, शरीर में बार-बार कंपास चुभाया

कोट्टायम (केरल)। सरकारी नर्सिंग कॉलेज में कनिष्ठ छात्रों पर वरिष्ठ छात्रों द्वारा की गई क्रूर रैगिंग के विचलित करने वाले दृश्य बृहस्पतिवार को सामने आए। गांधीनगर पुलिस को मिले फुटेज के अनुसार, पीड़ित छात्र को भयानक क्रूरता का सामना करना पड़ा जिसमें उसे निर्वस्त्र किया जाना और उसके शरीर में बार-बार कंपास चुभाना शामिल है। छात्र को जिस तरह की यातना का सामना करना पड़ा उनमें उसे एक खाट से बांधने के बाद उसके निजी अंगों पर डंबल रखा गया, उसके मुंह में फेशियल क्रीम डालना और उसके शरीर में बार-बार कंपास चुभाना शामिल है। टीवी चैनलों की ओर से प्रसारित दृश्य के अनुसार, कनिष्ठ छात्र बिस्तर पर पड़ा था और उसके पूरे शरीर पर लोशन लगा हुआ था तथा उसके हाथ-पैर रस्सी से बंधे हुए थे। वह दर्द से चीखता दिखा, जो हिलने में असमर्थ था। इसके बाद वरिष्ठ छात्रों ने छात्र के शरीर के विभिन्न हिस्सों में कंपास चुभाया और तेज आवाज में एक, दो, तीन गिनते रहे।

फुटेज के मुताबिक, जब पीड़ित दर्द से चिल्ला रहा था, तो आरोपियों ने उसका मजाक उड़ाते हुए सेक्सी बॉडी कहकर ताना मारा और उसे अपमानित किया। पुलिस ने बताया कि तीसरे वर्ष के छात्रों द्वारा रिकॉर्ड किए गए वीडियो में रैगिंग की यह क्रूर घटना दर्ज हुई है। यह दुर्व्यवहार लड़कों के छात्रावास में प्रथम वर्ष के नर्सिंग छात्रों को निशाना बनाकर किया गया। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार किए गए छात्रों में से एक नर्सिंग छात्र संगठन का पदाधिकारी है। पुलिस ने प्रथम वर्ष के छात्रों की रैगिंग करने के आरोप में तीसरे वर्ष के पांच छात्रों को गिरफ्तार कर लिया।

गिरफ्तार किए गए छात्रों की पहचान सैमुअल जॉनसन (20), राहुल राज (22), जीव (18), रिजिल जीत (20) और विवेक (21) के रूप में हुई है। रैगिंग पिछले साल नवंबर में शुरू हुई थी। कोट्टायम जिले के पुलिस प्रमुख शाहुल हमीद ने कहा कि पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि क्या और छात्रों की भी रैगिंग की गई थी। उन्होंने कहा, एक छात्र की शिकायत के आधार पर मामला दर्ज किया गया है, लेकिन हम यह पता लगाने के लिए अन्य छात्रों के बयान दर्ज करेंगे कि क्या और भी पीड़ित हैं। हमीद ने कहा कि जांच में यह भी पता लगाया जाएगा कि क्या कॉलेज प्रशासन की ओर से भी कोई चूक हुई है। सरकारी मेडिकल कॉलेज के अंतर्गत संचालित नर्सिंग संस्थान में पिछले करीब तीन महीने से रैगिंग चल रही थी, जिसकी शिकायत मिलने के बाद रैगिंग निषेध अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है।

पेज 1 का शेष

मणिपुर...

विधानसभा के सातवें सत्र को, जो 10 फरवरी से शुरू होने वाला था, निरस्त घोषित कर दिया है। सिंह का इस्तीफा भाजपा विधायकों के बीच घटते समर्थन के बीच आया है, जिनमें से कई विधायकों ने दिल्ली में पार्टी नेताओं से मुलाकात कर उनके पद पर बने रहने पर अपनी नाखुशी जाहिर की थी और उम्मीद जताई थी कि उनके पद छोड़ने से राज्य के दो मुख्य जातीय समुदायों के बीच शांति स्थापित करने के केंद्र सरकार के प्रयासों को बढ़ावा मिलेगा। इस बीच, स्वदेशी जनजातीय नेता फोरम (आईटीएलएफ) ने कहा कि राष्टपति शासन कुकी-जो समुदाय के लिए आशा की किरण होगी। आईटीएलएफ नेता गिन्ज़ा वुअलज़ोंग ने कहा, कुकी-ज़ो अब मीतेई लोगों पर भरोसा नहीं करते, इसलिए एक नया मीतेई मुख्यमंत्री अभी भी उन्हें राहत देने से दूर है। राष्टपति शासन कुकी-ज़ो को आशा की किरण देगा, और हमारा मानना है कि यह हमारे राजनीतिक समाधान के एक कदम करीब होगा। पूर्वोत्तर राज्य में विधानसभा का अंतिम सत्र 12 अगस्त, 2024 को संपन्न हुआ। मुख्यमंत्री के रूप में सिंह का कार्यकाल कई विवादों से घिरा रहा, जो मुख्य रूप से जातीय हिंसा से निपटने के उनके तरीके, संघर्ष भड़काने के आरोपों और उनके शासन से संबंधित सवालों पर केंद्रित थे।सिंह, जिन्होंने एक फुटबॉलर के रूप में शुरुआत की और फिर राजनीति में आने से पहले एक पत्रकार बन गए, दो कार्यकालों - 2017 और 2022 के लिए मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया। वह इंफाल पूर्व जिले में हीनगांग विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। 2022 में, वह मुख्यमंत्री के रूप में दूसरा कार्यकाल पाने के लिए अपनी पार्टी की स्वीकृति हासिल करने में सफल रहे। तब से अब तक का सफर बिना किसी रुकावट के रहा है। सिंह के कार्यकाल का सबसे महत्वपूर्ण विवाद मई 2023 में भड़की जातीय हिंसा थी, जिसके कारण अंततः उन्हें महत्वपूर्ण पद से हाथ धोना पड़ा। जातीय संघर्ष में इम्फाल घाटी में बहुसंख्यक मीतेई समुदाय और आसपास की पहाड़ियों में कुकी-जो जनजातीय समूहों के बीच क्रूर झड़पें हुईं, जिसके परिणामस्वरूप 250 से अधिक लोग मारे गए और हजारों लोग विस्थापित हुए। इसे रोकने में राज्य की असमर्थता ने सिंह के नेतृत्व के बारे में गंभीर चिंताएं उत्पन्न कर दीं। हालाँकि, हिंसा पर सिंह की प्रतिक्रिया में दिसंबर 2023 में सार्वजनिक रूप से माफ़ी शामिल थी, जहाँ उन्होंने अशांति के कारण हुई मौतों और विस्थापन के लिए खेद व्यक्त किया था। उन्होंने मेल-मिलाप का आह्वान किया तथा विभिन्न समुदायों से अतीत की गलतियों को माफ करने तथा शांतिपूर्ण मणिपुर के पुनर्निर्माण की दिशा में काम करने का आग्रह किया। फरवरी में, एक नया विवाद तब खड़ा हो गया जब सिंह से संबंधित ऑडियो टेप लीक हो गए, जिसमें उन्हें कथित तौर पर यह चर्चा करते हुए सुना गया कि किस प्रकार उनकी मंजूरी से जातीय हिंसा भड़काई गई।

मोदी, गबार्ड..

राष्ट्रीय खुफिया निदेशक के रूप में शपथ ली। अटॉर्नी जनरल पाम बॉन्डी ने गबार्ड को पद की शपथ दिलाई, जिन्हें ट्रम्प ने असाधारण साहस और देशभक्ति वाला अमेरिकी कहा। उन्होंने कहा कि उन्हें आर्मी नेशनल गार्ड में तीन बार तैनात किया गया था और वह एक पूर्व डेमोक्रेटिक कांग्रेस सदस्य हैं, और पूछा, क्या आप इस बात पर विश्वास कर सकते हैं? हवाई से डेमोक्रेटिक कांग्रेस की पूर्व सदस्य 43 वर्षीय गबार्ड को जासूसी एजेंसियों की देखरेख के लिए उनकी उपयुक्तता के बारे में द्विदलीय संदेह का सामना करना पड़ा था। गबार्ड ने उन पर भरोसा जताने के लिए राष्टपति को धन्यवाद दिया तथा शपथ ग्रहण के बाद हमारे खुफिया समुदाय को पुनः केंद्रित करने की शपथ ली। नए खुफिया प्रमुख ने कहा, दुर्भाग्यवश, अमेरिकी लोगों का खुफिया समुदाय पर बहुत कम भरोसा है, क्योंकि उन्होंने एक ऐसी संस्था का शस्त्रीकरण और राजनीतिकरण देखा है, जिसका ध्यान पूरी तरह से हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने पर केंद्रित होना चाहिए था। सीनेट ने 52-48 मतों से उनकी नियुक्ति की पुष्टि की, दो महीने तक इस बात पर विचार-विमर्श चलता रहा कि क्या गबार्ड खुफिया एजेंसियों का नेतृत्व करने और ट्रम्प की दैनिक खुफिया रिपोर्ट तैयार करने के लिए पर्याप्त योग्य हैं। वहीं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) माइकल वाल्ट्ज के साथ सार्थक बैठक हुई और दोनों ने रक्षा, प्रौद्योगिकी और सुरक्षा क्षेत्रों पर चर्चा की, जो भारत-अमेरिका संबंधों के महत्वपूर्ण पहलू हैं। वाल्ट्ज के साथ बैठक के बाद मोदी ने स्पेसएक्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) एलन मस्क से मुलाकात की। मस्क अपने तीन छोटे बच्चों के साथ ब्लेयर हाउस पहुंचे, जो मोदी से मुलाकात के दौरान उनके साथ बैठे हुए थे।

नया आयकर...

साथ ही इसकी भाषा ऐसी होगी कि लोग इसे कर विशेषज्ञों की सहायता के बिना समझ सकेंगे।

हंगामें के..

में चुनौती दी जाएगी। मदनी ने यह बयान उस वक्त दिया जब बृहस्पतिवार को वक्फ (संशोधन) विधेयक पर विचार करने वाली संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) की रिपोर्ट को लोकसभा और राज्यसभा के पटल पर रखा गया। मुस्लिम संगठन की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार, मदनी ने कहा, जो आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं, वे सही साबित हुईं। इन संशोधनों के जरिए केंद्र सरकार वक्फ संपत्तियों की स्थिति और प्रकृति को बदलना चाहती है, ताकि उन पर कब्जा करना आसान हो जाए और उनका मुस्लिम वक्फ का दर्जा खत्म हो जाए। उनका कहना था, पहले के कानून की धारा 3 में वक्फ बोर्ड यह तय करता था कि कोई वक्फ वैध है या नहीं, अब मौजूदा संशोधन में यह अधिकार कलेक्टर को दे दिया गया है, लेकिन अब मौजूदा 14 संशोधनों में जो आज संसद में पेश किए गए हैं, एक नए संशोधन ने कलेक्टर से लेकर उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी को जांच का अधिकार दिया है जो यह तय करेगा कि यह संपत्ति सरकारी है या वक्फ की जमीन है। मौलाना मदनी ने कहा कि मुस्लिम समुदाय के विरोध के बाद वक्फ नियम में बदलाव किया गया। उन्होंने कहा, हम इस तानाशाही कानून को स्वीकार नहीं कर सकते। मदनी ने कहा कि धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक दलों के पास अभी भी मौका है कि वे इस कानून को संसद में पारित होने से रोकें और इसका खुलकर विरोध करें। उन्होंने इस बात पर जोर दिया, यदि यह कानून पारित हो जाता है तो जमीयत उलेमा-ए-हिंद इसके खिलाफ उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटाएगी और साथ ही जमीयत उलेमा-ए-हिंद वक्फ संपत्तियों को बचाने के लिए मुसलमान और अन्य अल्पसंख्यकों और न्यायप्रिय लोगों के साथ मिलकर सभी लोकतांत्रिक और संवैधानिक अधिकारों का भी उपयोग करेगी।

पीएमएलए...

अपने हाथ में लेने के खिलाफ चेताया था। नवंबर 2024 में पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय ने एजेंसी की जांच को लापरवाही भरा और गैर-पेशेवर करार देते हुए ईडी निदेशक से खामियों के बारे में स्पष्टीकरण मांगा था।

तेंदुआ...

लाइव फुटेज से पुष्टि हुई कि जानवर छत पर एक कोने में बैठा था। जैसे ही वन विभाग की टीम सावधानीपूर्वक तेंदुए के पास जाने के लिए सीढ़ियां चढ़ी, खतरा भांपकर तेंदुए ने अचानक नीचे छलांग लगा दी। पुलिस कांस्टेबल मुकुल यादव ने कहा, 'यह सब कुछ सेकण्ड में हुआ। एक क्षण तेंदुआ छत पर था और अगले ही क्षण वह हमारी ओर दौड़ पड़ा। वह दहाड़ा और हमारे अधिकारी पर झपट पड़ा। अंततः तेंदुआ पहली मंजिल पर एक कमरे में छिपा हुआ पाया गया, शायद वह सोच रहा था कि किसी ने उसे बिरयानी क्यों नहीं दी। जैसे ही वन अधिकारी मुकद्दर अली उस बिल्ली के पास पहुंचे, उसने अपने पंजे से उन पर वार करके अपनी आपत्ति जाहिर कर दी। अगले ही पल अली का बायां हाथ खून से लथपथ हो गया। अली ने बाद में अपने बंधे हुए हाथ को पकड़ते हुए कहा, 'उस तेंदुए के पास शादी का कोई निमंत्रण तो नहीं था, लेकिन उसके पंजे तीखे जरूर थे।' अंततः, लगभग 3.30 बजे, तेंदुए को सुरक्षित रूप से पकड़ लिया गया, जिससे सभी को कई घंटों के बाद पहली बार राहत मिली। इस अफरातफरी में फंसे दो कैमरामैनों को भी मामूली चोटें आईं। सुबह तक, जब सारा नाटक समाप्त हो चुका था और तेंदुआ सुरक्षित रूप से तस्वीर से बाहर आ चुका था, तब शादी की रस्में फिर से शुरू हो गईं - हालांकि मेहमानों की एक नजर मंडप पर और दूसरी निकास द्वार पर थी।

सरकारी विभागों का आधुनिकीकरण आवश्यक : राष्ट्रपति मुर्मू

भाषा। नई दिल्ली

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बृहस्पतिवार को कहा कि सेवा वितरण में दक्षता के लिए जनता की बढ़ती अपेक्षाओं को पूरा करने के मकसद से सरकारी विभागों के लिए उभरती प्रौद्योगिकियों का सर्वोत्तम उपयोग करके अपने तंत्र का आधुनिकीकरण करना आवश्यक है। विभिन्न सरकारी सेवाओं के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के एक समूह को संबोधित करते हुए, उन्होंने उन्नत प्रौद्योगिकियों, कौशल से अवगत रहने और अधिक नागरिक-केंद्रित, कुशल तथा पारदर्शी शासन प्रणाली बनाने का प्रयास करने को कहा। भारतीय सिविल लेखा सेवा, भारतीय डाक और दूरसंचार (वित्त और लेखा) सेवा, भारतीय रेलवे प्रबंधन सेवा (लेखा) और भारतीय डाक सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति से मुलाकात की। राष्ट्रपति ने कहा कि सेवा वितरण में अधिक गति और दक्षता के साथ-साथ पारदर्शिता और जवाबदेही में वृद्धि को लेकर जनता की अपेक्षाएं लगातार बढ़ रही हैं। मुर्मू ने कहा, इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, सरकारी विभागों के लिए उभरती प्रौद्योगिकियों का सर्वोत्तम उपयोग करके अपनी प्रणाली का आधुनिकीकरण और डिजिटलीकरण करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि ऐसी प्रौद्योगिकियों में मशीन लर्निंग, डेटा एनालिटिक्स, ब्लॉकचेन तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) शामिल हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि एक मजबूत सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली सुशासन की नींव है। उन्होंने कहा, तेजी से बदलती प्रौद्योगिकी के साथ तालमेल बिठाना चुनौती का एक और क्षेत्र है। आपको लेखांकन और भुगतान प्रणालियों को सुचारू और प्रभावी बनाने के लिए उपाय करने होंगे। उन्होंने कहा कि नवनियुक्त अधिकारियों की भूमिका वित्तीय संसाधनों के उपयोग को सर्वाधिक अनुकूल बनाने से कहीं आगे जाती है और इसमें नीतियों के प्रभाव का विश्लेषण करना और वित्तीय प्रबंधन प्रणालियों सहित शासन प्रणालियों को बेहतर बनाने के लिए इनपुट सुझाना शामिल है। भारतीय डाक सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों से बातचीत में राष्ट्रपति ने वित्तीय समावेश, विशेष रूप से ग्रामीण और वंचित आबादी के लिए इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक के प्रयासों की सराहना की। मुर्मू ने कहा, आपके पास डाक विभाग और सेवाओं को अधिक ग्राहक-केंद्रित, नवोन्मेषी, डिजिटल, समावेशी और टिकाऊ बनाने का अनूठा अवसर है। आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि डाक नेटवर्क हमारे जैसे विशाल और विविधतापूर्ण राष्ट्र में एकजुट करने वाले एक बड़े कारक के रूप में काम करता रहे। उन्होंने कहा, आपको याद रखना चाहिए कि आप बेहतर कनेक्टिविटी और वित्तीय समावेश के माध्यम से नागरिकों, विशेष रूप से वंचित लोगों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा पाएंगे। उन्होंने उम्मीद जताई कि अधिकारी न केवल अपने व्यक्तिगत कॅरियर में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए सभी प्रयास करेंगे बल्कि सरकारी सेवाओं के प्रभावी वितरण में योगदान भी देंगे।

बिरला ने कांग्रेस सांसदों से कहा: आपने इतने साल शासन किया....सदस्यों का अधिकार छीनना चाहते हैं

भाषा। नई दिल्ली

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने बृहस्पतिवार को सदन में नारेबाजी कर रहे कांग्रेस सदस्यों से कहा कि उनकी पार्टी ने देश में लंबे समय शासन किया और अब वे नियोजित तरीके से हंगामा करके सदस्यों का अधिकार छीनना चाहते हैं। कांग्रेस और कुछ अन्य विपक्षी दलों के सदस्य अदाणी समूह से संबंधित एक खबर को लेकर सदन में हंगामा कर रहे थे। सदन में प्रश्नकाल आरंभ होते ही कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों के सदस्य नारेबाजी करने लगे। बिरला ने उनसे नारेबाजी बंद करने और सदन चलने देने की अपील की। उन्होंने कांग्रेस का नाम लिए बगैर कहा, आप प्रश्नकाल के दौरान नियोजित तरीके से गतिरोध करते हैं, यह अच्छी परंपरा नहीं है। आप (कांग्रेस) ने इतने साल शासन किया है....आप सदन में व्यवधान पैदा करना करते हैं। बिरला का कहना था, मैंने कहा है कि दोपहर 12 बजे विषय को रखने देंगे, लेकिन आप चर्चा नहीं चाहते। आप महत्वपूर्ण विषयों को सदन में नहीं लाना चाहते हैं। उन्होंने कहा, प्रश्नकाल में सरकार की जवाबदेही तय होती है। यह सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। आप सदस्यों का अधिकार छीनना चाहते हैं। हंगामा नहीं थमने पर बिरला ने सदन की कार्यवाही पूर्वाह्न करीब 11 बजकर पांच मिनट पर अपराह्न दो बजे तक के लिए स्थगित कर दी। विपक्षी सदस्यों ने जिस खबर को लेकर हंगामा किया, उसमें दावा किया गया है कि सरकार ने गुजरात में अदाणी समूह के नवीकरणीय ऊर्जा पार्क के लिए मार्ग प्रशस्त करने के मकसद से पाकिस्तान सीमा पर राष्ट्रीय सुरक्षा प्रोटोकॉल में ढील दी है। कांग्रेस का आरोप है कि सरकार ने इस कारोबारी समूह को फायदा पहुंचाने के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डाला है।अदाणी समूह की ओर से इस आरोप पर फिलहाल प्रतिक्रिया नहीं आई है।

केरल सरकार यूजीसी विनियमों के मसौदे के खिलाफ कानूनी विकल्प तलाशेगी: मंत्री

तिरुवनंतपुरम। केरल की उच्च शिक्षा मंत्री आर बिंदु ने बृहस्पतिवार को कहा कि राज्य सरकार केंद्र द्वारा प्रस्तावित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के विनियमों के मसौदे के खिलाफ उपलब्ध सभी कानूनी विकल्पों पर विचार करेगी। विधानसभा मे प्रश्नकाल के दौरान यूजीसी विनियम-2025 के मसौदे के बारे मे माकपा नेता एमवी गोविंदन द्वारा उठाए गए सवाल का जवाब देते हुए बिंदु ने कहा कि यूजीसी उच्च शिक्षा क्षेत्र के लिए बहुत कम धनराशि आवंटित करता है। उन्होने कहा कि राज्य सरकार संवैधानिक प्रावधानो का उल्लंघन करने के लिए मसौदा विनियमो के खिलाफ कानूनी लड़ाई की संभावना तलाशेगी। उन्होने कहा, मसौदे के विरोध के तहत उच्च शिक्षा विभाग 20 फरवरी को तिरुवनंतपुरम मे एक राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन आयोजित करेगा।

हरियाणा के सरकारी स्कूलों में सुरक्षित पेयजल की सुविधा

गुरूग्राम। सेफ वॉटर नेटवर्क, जो एक पंजीकृत गैर-लाभकारी ट्रस्ट है, ने पेंटेयर के सहयोग से हरियाणा के जैकबपुरा, गुरुग्राम स्थित गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल में सुरक्षित पेयजल सुविधा शुरू की है। पेंटेयर एक अग्रणी ग्लोबल कंपनी है और दुनिया को स्थायी रूप से जल संसाधनों को संरक्षित, सुधारने और इनका उपयोग करने में मदद करती है।इस उद्घाटन समारोह में पेंटेयर इंडिया की सीनियर लीडरशिप मौजूद थी। इनमें शामिल थे अजीत तुलो (वाइस प्रेसिडेंट, ग्लोबल इंजीनियरिंग सेंटर),प्रशांत त्रिपाठी (डायरेक्टर एवं हेड ङ्क ह्वश्ज्ज टेक्नोलॉजी),मयंक भटनागर (इंजीनियरिंग मैनेजर ङ्क लीडिंग एक्वाटिक्स मैकेनिकल),सुश्री आंचल वर्मा (मैकेनिकल इंजीनियर),सोनल,मयंक शर्मा (डिलीवरी मैनेजर,)सुश्री सोनाली गुप्ता सेफ वॉटर नेटवर्क की ओर से उपस्थित थे।क्लीन वाटर एंड एनर्जी ट्रस्ट की ओर से संदीप शर्मा और श्री पंकज कुमार मोदी ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया ताकि जल शोधन संयंत्र की दीर्घकालिक संचालन और रखरखाव सुनिश्चित किया जा सके।जैकबपुरा स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में कुल 2300 छात्राएं पढ़ती हैं, और इसी इमारत में प्राथमिक और वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाएं संचालित होती हैं। स्कूल में पहले से ही बोरवेल और पाइप के माध्यम से जल आपूर्ति थी, लेकिन शुद्ध पेयजल की सुविधा उपलब्ध नहीं थी।पेंटेयर के अनुदान से सेफ वॉटर नेटवर्क इंडिया ने स्कूल में 500 लीटर प्रति घंटे की क्षमता वाला, छह-स्तरीय जल शुद्धिकरण संयंत्र स्थापित किया।

वक्फ विधेयक पारित हुआ तो देशव्यापी आंदोलन: बोर्ड

नई दिल्ली। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने बृहस्पतिवार को वक्फ (संशोधन) विधेयक से संबंधित संसदीय रिपोर्ट को धार्मिक भेदभाव पर आधारित तथा संविधान के मूल्यों के खिलाफ करार दिया और कहा कि सरकार को सबका साथ, सबका विकास के अपने नारे पर अमल करते हुए इस विधेयक को वापस लेना चाहिए।बोर्ड के अध्यक्ष खालिद सैफुल्लाह रहमानी ने कहा कि यदि विधेयक को पारित किया गया तो राष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन शुरू किया जाएगा तथा अदालती लड़ाई भी लड़ी जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि यदि सत्तापक्ष के दो प्रमुख घटक दलों जनता दल (यूनाइटेड) और तेलुगू देसम पार्टी (तेदेपा) ने इस विधेयक को पारित होने दिया तो उन्हें सियासी नुकसान उठाना पड़ेगा।मुस्लिम पर्सनल बोर्ड ने यह बयान उस वक्त दिया जब वक्फ (संशोधन) विधेयक पर विचार करने वाली संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) की रिपोर्ट बृहस्पतिवार को लोकसभा और राज्यसभा के पटल पर रखी गई।रहमानी ने कहा, हम समझते है कि सरकार के पास अभी मौका है कि वह इस विधेयक को वापस लेकर सबका साथ, सबका विकास के अपने नारे पर अमल करे।

कलाकारों ने मनाया वैलेंटाइन्स डे

मुंबई। हर साल 14 फरवरी को मनाया जाने वाला वैलेंटाइन्स डे मोहब्बत, अपनापन और दिल के रिश्तों का जश्न मनाने का खास मौका है। यह वो दिन है, जब प्यार भरे दिल अपनी गहराइयों से जुड़े जज्बातों को बेझिझक बयां करते हैं और मोहब्बत की नर्म छांव में खूबसूरत लम्हे संजोते हैं। इस मौके पर 'जाने अनजाने हम मिले' की आयुषी खुराना, 'जागृति-एक नई सुबह' की रचना मिस्त्री, 'बस इतना सा ख्वाब' के योगेंद्र विक्रम सिंह, 'कैसे मुझे तुम मिल गए' की आकांक्षा दामोला और 'वसुधा' की प्रिया ठाकुर जैसे जी टीवी के सितारे अपने दिल की बातें साझा कर रहे हैं और बता रहे हैं कि इस बार वो प्यार का यह दिन कैसे मनाने वाले हैं। जी टीवी के 'जाने अनजाने हम मिले' में रीत का किरदार निभा रहीं आयुषी खुराना कहती हैं, "वैलेंटाइन्स डे मेरे और मेरे पति के लिए बेहद मायने रखता है, क्योंकि यह हमें उन पलों की याद दिलाता है, जब हमारी मोहब्बत ने पहली बार करवट ली थी।" 'जागृति-एक नई सुबह' में जागृति का किरदार निभा रहीं रचना मिस्त्री कहती हैं, "वैलेंटाइन्स डे मेरे लिए बेहद खास है, क्योंकि यह उस इंसान के लिए मेरा प्यार जताने का दिन है, जो मेरी दुनिया है-मेरा मंगेतर अमित। इस साल हम शादी की तैयारी कर रहे हैं, लेकिन मुझे आज भी हमारा पहला वैलेंटाइन्स डे याद है - सादगी से भरा, लेकिन ढेर सारी हंसी, चोरी-चोरी नजरों का मिलना और साथ में संजोए सपनों से भरा हुआ। 'बस इतना सा ख्वाब' में शेखर का किरदार निभा रहे योगेंद्र विक्रम सिंह कहते हैं, "मेरे लिए वैलेंटाइन्स डे हमेशा से हर तरह के प्यार को संजोने का दिन रहा है-चाहे वो परिवार का हो, दोस्तों का हो या फिर किसी खास के लिए।

जिओ पर दिखेगा रियल लाइफ दुल्हनों की कहानियां

नोएडा। नायका ओटीटी पर अपना स्ट्रीमिंग डेब्यू कर रहा है। नायका वाली शादी में लोगों को ऐसी रियल लाइफ दुल्हनों की कहानियां देखने का मौका मिलेगा, जो प्रतीक है उम्मीद और हिम्मत का। नायका वाली शादी एक दिल छू लेने वाली सीरीज़ है, जहाँ खूबसूरती और प्यार का संगम देखने को मिलेगा। इस शो में चार दुल्हनों की कहानी को दिखाया गया है, जो अपने सपनों के ब्राइडल लुक में नज़र आएँगी, नायका के एक्सपर्ट ब्यूटी टच के साथ। इसे आप जिओ सिनेमा पर पर देख सकते हैं। पहली कहानी जागृति राजुलु की है, जो ब्रेस्ट कैंसर से जूझने के बाद उम्मीद, खूबसूरती और हिम्मत की मिसाल प्रस्तुत करती है। दूसरी कहानी है सेना की सम्मानित अधिकारी सीमा प्रियंका गौड़र की, जिन्होंने वर्षों की सेवा के बाद अब अपने इस खास पल को जीने का फ़ैसला किया। तीसरी कहानी में आप देखेंगे मैती शाहानी कपूर की एक क्रॉस-कल्चरल प्रेम कहानी, जिसमें नेपाली-सिंधी और पारसी-पंजाबी परंपराओं का खूबसूरत मेल है। वहीं अवंतिका छाबरिया के सालों से बुने गए प्यार के सफ़र की कहानी, जो साबित करती है कि सोलमेट्स सच में मिल सकते हैं। खूबसूरती, भावनाओं और ब्राइडल सपनों का उत्सव नायका वाली शादी हर उस इंसान के लिए एक परफेक्ट शो है, जो शादियों के जादू पर विश्वास करता है।

तृणमूल अकेले ही विस चुनाव लड़ेगी : अभिषेक

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने बृहस्पतिवार को फिर दोहराया कि उनकी पार्टी राज्य मे एकला चलो की नीति को बरकरार रखते हुए वर्ष 2026 मे पश्चिम बंगाल विधानसभा का चुनाव अकेले लड़ेगी। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी विपक्षी गुट इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस (इंडिया) का भी हिस्सा बनी रहेगी। अपने निर्वाचन क्षेत्र डायमंड हार्बर के सतगछिया मे एक निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर सेबाश्रय में बोलते हुए बनर्जी ने कहा कि तृणमूल ने अतीत में स्वतंत्र रूप से सफलतापूर्वक चुनाव लड़ा है और आगे भी ऐसा ही करती रहेगी। उन्होंने कहा, दीदी (ममता बनर्जी) पहले ही स्पष्ट कर चुकी है कि हम बंगाल में अकेले लड़ेंगे। यह कोई नई बात नही है। हमने 2014, 2016, 2019 और 2024 मे अकेले चुनाव लड़ा था। हमने तब अच्छा प्रदर्शन किया और हम फिर से ऐसा करेंगे। बनर्जी ने उन दावों को खारिज कर दिया कि कांग्रेस के साथ गठबंधन करने से बंगाल मे लोकसभा चुनावो मे भाजपा को 12 सीट जीतने से रोका जा सकता था। उन्होने कहा, आखिरकार, यह लोगों का समर्थन है जो मायने रखता है। चाहे हम अकेले लड़ें या गठबंधन में, इससे ज्यादा फर्क नही पड़ता। सबसे अच्छी स्थिति मे, दो से चार सीटो का अंतर हो सकता था, इससे ज्यादा कुछ नही।

एक बदनाम आश्रम सीजन 3 फिर स्ट्रीम

मुंबई। भारत की सबसे ज्यादा देखी जाने वाली ओ.टी.टी. सीरीज में से एक, एक बदनाम आश्रम, एक बार फिर से पर्दे पर छाने के लिए तैयार है। इसके बेहद इंतजार किए जा रहे सीजन 3 का दूसरा भाग जल्द ही केवल ऐमजॉन एम.एक्स. प्लेयर पर प्रीमियर किया जायेगा, जो कि ऐमजॉन की निःशुल्क वीडियो स्ट्रीमिंग सर्विस है। आज इस स्ट्रीमिंग सर्विस ने आने वाले सीजन का एक धमाकेदार टीज़र जारी किया, जिसने पूरे भारत के दर्शकों के बीच जोश और दीवानगी को एक बार फिर जगा दिया है। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता प्रकाश झा द्वारा निर्देशित और निर्मित, यह रोमांचक अपराध-आधारित ड्रामा कई जाने-माने सितारों को साथ लेकर तैयार किया गया है, जिसमें बॉबी देओल, आदिति पोहनकर, चंदन रॉय सान्याल, त्रिधा चौधरी, दर्शन कुमार, विक्रम कोचर, अनुप्रिया गोयनका, राजीव सिद्धार्थ और ईशा गुप्ता अहम किरदारों में हैं। इस आने वाले सीजन के बारे में बताते हुए, अमोघ दुसाद, हेड ऑफ ऐमजॉन एम.एक्स. प्लेयर, ने कहा कि एक बदनाम आश्रम ने सचमुच में डिजिटल क्षेत्र में कहानी प्रस्तुत करने के मायने ही बदलकर रख दिए हैं। भारत के सबसे कामयाब शोज में से एक होने के नाते, यह अपने जोरदार विषय और दिलकश अदाकारों के साथ दर्शकों की पसंद को समझने में सफल रहा है।

गोरखपुर के 10 छात्रों ने जेईई मेन्स में हासिल किये 97 पर्सेंटाइल से अधिक अंक

गोरखपुर। परीक्षण तैयारी सेवाओं में राष्ट्रीय नेता, आकाश एजुकेशनल सर्विसेज लिमिटेड (एईएसएल) ने गर्व से जॉइंट एंट्रेंस एग्ज़ामिनेशन (जेईई) मेन्स 2025 (सत्र 1) में एक असाधारण उपलब्धि की घोषणा की है। गोरखपुर के 10 से अधिक छात्रों ने जेईई मेन्स 2025 के पहले सत्र में 97 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किए हैं। छात्रों को बधाई देते हुए, आकाश एजुकेशनल सर्विसेज लिमिटेड के क्षेत्रीय निदेशक, डी के मिश्रा ने छात्रों को उनके प्रभावशाली परिणामों के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा, 卐हमें जेईई मेन 2025 में अपने छात्रों की उपलब्धियों पर गर्व है। सही कोचिंग के साथ मिलकर उनकी कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प ने इन उत्कृष्ट परिणामों को जन्म दिया है। आकाश में, हम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो छात्रों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुंचने में मदद करता है।

विदेशी मुद्रा व्यापार मामले में बैंक में जमा 170 करोड़ पर रोक लगाई

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बृहस्पतिवार को कहा कि उसने कथित धोखाधड़ी वाली विदेशी मुद्रा व्यापार और जमा योजना के प्रवर्तकों के खिलाफ हाल ही में की गई छापेमारी के बाद बैंक में जमा 170 करोड़ रुपए पर रोक लगा दी है। संघीय एजेंसी ने एक बयान में कहा कि 11 फरवरी को दिल्ली, उत्तर प्रदेश के नोएडा व शामली और हरियाणा के रोहतक में विभिन्न परिसरों में छापेमारी की गई। छापेमारी क्यूएफएक्स ट्रेड लिमिटेड और इसके निदेशकों राजेंद्र सूद, विनीत कुमार और संतोष कुमार के अलावा एक 'मास्टरमाइंडै नवाब अली उर्फ लविश चौधरी के खिलाफ जांच के तहत की गई।

जिंदल क्षेत्र में अपनी मौजूदगी को बनायेगी सशक्त

नोएडा। प्रतिष्ठित बी.सी. जिंदल ग्रुप के भाग तथा भारत में डाउनस्ट्रीम स्टील उत्पादों के अग्रणी निर्माताओं में से एक जिंदल (इंडिया) लिमिटेड ने कानपुर, उत्तर प्रदेश में कंपनी के रीटेलर्स मीट 'मिलाप' का सफल आयोजन किया। मीट का आयोजन कंपनी के ऑथोराइज्ड डीलर कान्हा स्टील के सहयोग से किया गया था, जिसमें कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों तथा आस-पास के क्षेत्रों से 60 रीटेलरों ने हिस्सा लिया। देश भर में अपनी स्थिति को सशक्त बनाने की योजनाओं के तहत जिंदल (इंडिया) लिमिटेड ने कार्यक्रम के दौरान अपने आधुनिक कोटेड स्टील प्रोडक्ट्स की व्यापक रेंज का प्रदर्शन किया। इनमें से हर प्रोडक्ट को विभिन्न उद्योगों की जरूरतों को ध्

एयरटेल पेमेंट्स बैंक के राजस्व में वृद्धि

मुंबई। एयरटेल पेमेंट्स बैंक ने 31 दिसंबर, 2024 को समाप्त हुई तिमाही के लिए अपने समेकित परिणामों की घोषणा की। कंपनी ने 49 प्रतिशत की साल दर साल वृद्धि के साथ 700 करोड़ रुपये से अधिक का त्रैमासिक राजस्व दर्ज किया है। बैंक का शुद्ध लाभ 70 प्रतिशत की साल दर साल वृद्धि के साथ 18.5 करोड़ रुपये रहा। एबिटडा में में 66 प्रतिशत की साल दर साल वृद्धि हुई और यह वित्तवर्ष 2025 की तीसरी तिमाही में 87 करोड़ रुपये दर्ज किया गया। इस तिमाही के दौरान बैंक के मासिक विनिमय करने वाले यूजर्स 62 प्रतिशत की साल दर साल वृद्धि के साथ 100 मिलियन से ज्यादा थे। वार्षिक सकल मर्चेंडाईज वैल्यू 4,000 करोड़ रुपये के करीब पहुँच गई, जिससे प्रदर्शित होता है कि लोगों द्वारा बैंक के डिजिटल बचत खाते, मर्चेंट प्रस्तावों और अन्य उत्पादों को अपनाए जाने में वृद्धि हो रही है। ग्राहकों के बैलेंस में भी मजबूत वृद्धि दर्ज की गई और यह 42 प्रतिशत की साल दर साल वृद्धि के साथ 3,332 करोड़ रुपये को पार कर गया।। एयरटेल पेमेंट्स बैंक के एमडी एवं सीईओ, अनुब्रत बिस्वास ने कहा के हमें एयरटेल पेमेंट्स बैंक के लिए एक और तिमाही में मजबूत वृद्धि दर्ज करने की खुशी है, जिससे हमारे बैंकिंग मॉडल की शक्ति प्रदर्शित होती है।

11 छात्रों ने 99 पर्सेंटाइल से अधिक अंक प्राप्त किए

लखनऊ। एजुकेशन कंपनी फिजिकसवाला (पीडब्लू) ने जेईई मेन 2025 सेशन 1 परीक्षा में अपने नतीजे घोषित किये हैं , जिनमें से एक ने गुजरात से 100 पर्सेंटाइल हासिल किया है 7 साथ ही 612 से अधिक छात्रों ने 99.5 पर्सेंटाइल से ऊपर स्कोर किया है, 1359 से अधिक छात्रों ने 99 पर्सेंटाइल से ऊपर स्कोर किया है, 3548 छात्रों ने 98 पर्सेंटाइल से ऊपर स्कोर किया है, और परिणामों की गिनती अभी भी जारी है।लखनऊ में फिजिक्सवाला के 11 छात्रों ने जेईई मेन सेशन 1 2025 के परिणामों में 99 पर्सेंटाइल से अधिक अंक प्राप्त किए हैं।

भारत की तेजी से बढ़ती ऊर्जा मांग को पूरा करने के लिए सरकार कोयला उत्पादन बढ़ाने में है जुटी: रेड्डी

नागपुर। केंद्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी ने बृहस्पतिवार को कहा कि चूंकि भारत की ऊर्जा मांग तेजी से बढ़ रही है, इसलिए सरकार विकसित भारत के सपने को साकार करने के लिए कोयला उत्पादन बढ़ाने पर काम कर रही है। कोयला एवं खान मंत्री ने यह भी कहा कि सरकार ने इस वर्ष एक अरब टन कोयला उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि लोगों को विशेषकर गर्मियों के मौसम में बिजली की कमी का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि लिथियम और तांबे जैसे महत्वपूर्ण खनिजों की भारी मांग है, ऐसे में भारत अर्जेंटीना में महत्वपूर्ण खनिज ब्लॉक का अधिग्रहण कर रहा है। रेड्डी ने यहां भारतीय मजदूर संघ से संबद्ध अखिल भारतीय खदान मजदूर संघ के राष्ट्रीय सम्मेलन में कोयला उद्योग के श्रमिकों को संबोधित किया और बाद में पत्रकारों से भी बातचीत की। उन्होंने कहा, भारत में ऊर्जा की मांग तेजी से बढ़ रही है और कोयला हमारी ऊर्जा सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। सरकार इस वित्त वर्ष के लिए एक अरब टन कोयला उत्पादन का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रही है। विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए अगले 50 वर्षों के लिए कोयला उत्पादन बहुत महत्वपूर्ण है। कोल इंडिया लिमिटेड की सभी सहायक कंपनियां ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

एयरोस्पेस फर्म ने लखनऊ में रखरखाव, नवीकरण सुविधा केंद्र के लिए एचएएल के साथ समझौता किया

भाषा। नई दिल्ली

एयरोस्पेस और रक्षा क्षेत्र की एक प्रमुख कंपनी ने लखनऊ में एचएएल के सहायक उपकरण परिसर में रखरखाव, मरम्मत और नवीकरण (एमआरओ) सुविधा केंद्र स्थापित करने के लिए हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) के साथ एक समझौता किया है। एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गई। यह सुविधा केंद्र भारतीय वायुसेना (आईएएफ) के सभी एलसीए (हल्के लड़ाकू विमानों) एमके-। के लिए काम करेगा। एलसीए भारत का स्वदेश विकसित लड़ाकू विमान है जिसका निर्माण बेंगलुरु स्थित एचएएल द्वारा किया जा रहा है। यह समझौता आरटीएक्स व्यवसाय कोलिन्स एयरोस्पेस और एचएएल के बीच हुआ है। आरटीएक्स वैश्विक स्तर पर सबसे बड़ी एयरोस्पेस और रक्षा कंपनियों में से एक है।

अदाणी समूह श्रीलंका की बिजली परियोजना से पीछे हटा

नई दिल्ली। अदाणी समूह की नवीकरणीय ऊर्जा इकाई अदाणी ग्रीन एनर्जी ने श्रीलंका में प्रस्तावित दो पवन ऊर्जा परियोजनाओं से अपने हाथ पीछे खींच लिए हैं। श्रीलंका की नई सरकार के बिजली दरों पर नए सिरे से बातचीत करने के फैसले के बाद कंपनी ने परियोजनाओं से हटने की घोषणा की। अदाणी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड ने एक बयान में कहा, श्रीलंका में नवीकरणीय ऊर्जा (आरई) पवन ऊर्जा परियोजना और दो पारेषण परियोजनाओं में आगे भी भागीदारी से सम्मानपूर्वक हटने के अपने निदेशक मंडल के फैसले से अवगत करा दिया गया है। कंपनी ने दो परियोजनाओं में 484 मेगावाट पवन ऊर्जा से बिजली बनाने और इसे उपयोगकर्ताओं तक ले जाने के लिए पारेषण लाइन बिछाने पर कुल एक अरब अमेरिकी डॉलर का निवेश करना था। श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसनायके की अगुवाई वाली नई सरकार ने इस परियोजना की समीक्षा के आदेश दिए थे।

विपक्षी पार्टी के सरपंच वाले गांव को एक भी रुपया नहीं मिलेगा : नितेश राणे

भाषा। मुंबई

महाराष्ट्र के मंत्री और भाजपा नेता नितेश राणे ने यह कहकर विवाद खड़ा कर दिया है कि शिवसेना (उबाठा) और अन्य विपक्षी दलों के समर्थकों को उनके क्षेत्रों के लिए कोई विकास निधि नहीं मिलेगी। बुधवार को सिंधुदुर्ग जिले के ओरोस में भाजपा कार्यकर्ताओं की एक बैठक को संबोधित करते हुए मत्स्य पालन एवं बंदरगाह विकास मंत्री ने कहा कि अगर विपक्षी महाविकास आघाड़ी (एमवीए) के कार्यकर्ता अपने निर्वाचन क्षेत्रों का विकास चाहते हैं तो उन्हें भारतीय जनता पार्टी में शामिल होना चाहिए। इस टिप्पणी पर विपक्षी नेताओं ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की और पूछा कि क्या मंत्री अपने पद की शपथ भूल गए हैं। राणे ने कहा, एमवीए के कई कार्यकर्ता पहले ही भाजपा में शामिल हो चुके हैं और मैं उन लोगों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करता हूं जो बचे हैं। केवल (सत्तारूढ़) महायुति कार्यकर्ताओं को ही कोष मिलेगा। अगर किसी गांव में एमवीए से जुड़े दल का सरपंच या कोई अन्य पदाधिकारी है, तो उन्हें एक भी रुपया नहीं मिलेगा। मंत्री ने कहा कि वह चीजों को स्पष्ट और सीधे तरीके से रखना पसंद करते हैं। एमवीए में कांग्रेस, शिवसेना (उबाठा) और राकांपा (शरदचंद्र पवार) शामिल हैं। राणे ने भाजपा कार्यकर्ताओं से भी कहा कि वे वफादार रहें और विपक्षी दलों की मदद न करें। भाजपा नेता ने कहा, किसी भी परिस्थिति में विपक्षी उम्मीदवारों की मदद न करें। राज्य में पार्टी के विस्तार अभियान का जिक्र करते हुए राणे ने कहा, एक करोड़ से ज्यादा सदस्य पहले ही शामिल हो चुके हैं। आने वाले स्थानीय निकाय चुनावों में भाजपा को पहले नंबर की पार्टी बनना चाहिए। हर गांव में संगठन को मजबूत करें और पार्टी को बढ़ाने के लिए काम करें।

भारत में 60 प्रतिशत लोगों को भविष्य की फाइनेंशियल सिक्योरिटी की चिंता

मुंबई। भारत में सैंडविच जेनरेशन के लोग अपने माता-पिता और बच्चों की जिंदगी को हर संभव तरीके से सबसे बेहतर बनाने पर ध्यान देते हैं, फिर भी उन्हें ऐसा लगता है कि वे अपने भविष्य के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं हैं। एडलवाइज लाइफ़ इंश्योरेंस की एक स्टडी के अनुसार, 60 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि, चाहे मैं कितनी भी सेविंग या इन्वेस्ट कर लूँ, पर ऐसा लगता है कि ये भविष्य के लिए काफी नहीं है। इस मौके पर एडलवाइज लाइफ़ इंश्योरेंस के एमडी एवं सीईओ, सुमित राय ने कहा, पिछले कुछ सालों में अपने ग्राहकों के साथ बातचीत के आधार पर हमने इस बात को करीब से जाना है कि, सैंडविच जेनरेशन के लोग किस तरह अपने माँ-बाप और बच्चों की देखभाल के बीच फंसे हुए हैं। वे स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा जैसी ज़रूरी सुविधाएँ उपलब्ध कराना चाहते हैं, साथ ही वे अरमानों भरी जिदगी भी देना चाहते हैं, जिसमें 'ज़रूरतों' को पूरा करने के लिए ख्वाहिशों की कुर्बानी नहीं देनी पड़े। यही सबसे बड़ी वजह है, जो उन्हें वित्तीय फैसले लेने के लिए प्रेरित करती है।सामान्य तौर पर 35 से 54 साल की उम्र के लोगों को सैंडविच जेनरेशन कहा जाता है, जिनके कंधों पर दो पीढ़ियों ङ्क यानी अपने बुजुर्ग माता-पिता और बढ़ते बच्चों की आर्थिक ज़रूरतों को पूरा करने की जिमेदारी होती है। जीवन बीमा कंपनी ने वाई ओ यू जी ओ वी के साथ मिलकर देश के 12 शहरों में इस जेनरेशन के 4,005 लोगों का एक सर्वे किया, ताकि उनके न?रिये, उनकी धारणा और वित्तीय तैयारी के स्तर को समझा जा सके।

परीक्षा पे चर्चा के दौरान छात्रों को दिए मंत्र, एआई का बुद्धिमानी से उपयोग करें, स्वयं निर्णय लें

नई दिल्ली। प्रौद्योगिकी का गुलाम नहीं बल्कि मालिक बनना सीखना, कृत्रिम मेधा (एआई) का बुद्धिमानी से उपयोग करना और स्वयं निर्णय लेना समेत कई मंत्र प्रधानमंत्री के परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम के तहत बृहस्पतिवार को प्रसारित प्रौद्योगिकी की मास्टरक्लास के दौरान छात्रों को दिए गए। परीक्षा पे चर्चा के विशेष सत्र में टेक्निकल गुरुजी के नाम से लोकप्रिय यूट्यूबर गौरव चौधरी और एडलवाइस म्यूचुअल फंड की प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी राधिका गुप्ता ने छात्रों के साथ ये मंत्र साझा किए। परीक्षा पे चर्चा एक वार्षिक कार्यक्रम है, जिसके तहत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बोर्ड परीक्षाएं देने वाले छात्रों के साथ बातचीत करते हैं। इस बार पारंपरिक टाउन हॉल प्रारूप से हटकर प्रधानमंत्री ने छात्रों को दिल्ली के प्रसिद्ध सुंदर नर्सरी में आमंत्रित किया और बोर्ड परीक्षा से पहले उनसे अनौपचारिक माहौल में बातचीत की। चौधरी ने छात्रों से कहा, प्रौद्योगिकी के गुलाम नहीं, बल्कि मालिक बनना सीखें। प्रौद्योगिकी को आपको संबल बनाने की भूमिका निभानी चाहिए, लेकिन प्राथमिकता आपकी अपनी बुद्धिमत्ता, कुशाग्रता और रचनात्मकता को मिलनी चाहिए। गुप्ता ने फ्लॉपी डिस्क के युग से लेकर अब तक हुए प्रौद्योगिकी के विकास के बारे में किस्से साझा करते हुए कहा कि आज एआई एक अच्छे अध्ययन सहयोगी की भूमिका निभा सकता है। उन्होंने कहा, लेकिन इसका उपयोग बुद्धिमानी से किया जाना चाहिए। एआई आपको ज्ञान, बुद्धिमत्ता एवं विस्तृत विश्लेषण मुहैया करा सकती है लेकिन बुनियादी अवधारणाएं आपकी होनी चाहिए। यदि आप इनके बारे में पूरी तरह से जानते हैं तो आप एआई का बुद्धिमानी से उपयोग कर पाएंगे। दोनों अतिथियों ने छात्रों के साथ लोकप्रिय खेल डंब शराड (मौन रहकर अभिनय करते हुए अपनी बात समझाने वाला खेल) पर आधारित खेल एआई शराड भी खेला और छात्रों को एआई का उपयोग करके कुछ प्रसिद्ध हस्तियों के नाम लिए बिना उनके चित्र बनाने के लिए कहा गया। गुप्ता ने छात्रों को निर्देश दिया कि वे एआई की मदद भले ही लें लेकिन अपने निर्णय स्वयं लें। उन्होंने कहा, उदाहरण के लिए, यदि आप यह तय करना चाहते हैं कि आपको उच्च शिक्षा के दौरान पढ़ाई के लिए कौन से विषय चुनने हैं- मानविकी एवं विज्ञान, तो एआई आपको विस्तृत विश्लेषण मुहैया करा सकता है जिससे आपको निर्णय लेने में मदद मिल सकती है लेकिन निर्णय आपका होना चाहिए।

भाजपा बिहार विधानसभा चुनाव नहीं जीत सकती: लालू का दावा

भाषा। पटना

राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के अध्यक्ष लालू प्रसाद ने बृहस्पतिवार को दावा किया कि दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जीत के बावजूद, इस साल के अंत में होने वाले बिहार विधानसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की हार होगी। पत्रकारों द्वारा इंडिया (इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस) गठबंधन की सहयोगी आम आदमी पार्टी (आप) के दिल्ली में सत्ता से बाहर होने के असर के बारे में सवाल किए जाने पर बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू ने कहा, यहां कोई असर नहीं होगा। भाजपा (सत्ता से) बाहर हो जाएगी। लालू की पार्टी के पास 243 सदस्ईय विधानसभा में सबसे अधिक सीट हैं।जब राजद सुप्रीमो से कहा गया कि बिहार में राजग के नेता सत्ता में वापसी को लेकर आश्वस्त हैं, तो प्रसाद ने उनकी जीत की संभावना को खारिज कर दिया। प्रसाद ने कहा, जब तक हम बिहार में हैं, वे यहां सरकार नहीं बना सकते। लोग भाजपा को जान गए हैं। भाजपा के वरिष्ठ नेता और उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने इस बयान पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, लालू जी हों या नहीं हों, राजग की सत्ता में वापसी तय है। उन्होंने कहा, लोगों को लालू जी की जरूरत नहीं है। उनके शासनकाल में बड़े पैमाने पर जातिवाद और कुशासन था, जिससे राज्य का नाम खराब हुआ और बिहारी शब्द एक तरह का कलंक बन गया। राजग में शामिल जनता दल (यूनाइटेड) के प्रवक्ता नीरज कुमार ने भी लालू प्रसाद के बयान पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, लालू जी को याद रखना चाहिए कि राजग ने बिहार में उनके रहते हुए ही सत्ता हासिल की थी और उनके रहते हुए ही वह फिर से ऐसा करती रहेगी। उन्होंने कहा, राजग ने 225 सीट का लक्ष्य रखा है, जो 2010 में उसे मिली सीट से अधिक है। तब राजद बुरी तरह हारी थी। लालू जी को अपनी चिंता करनी चाहिए। उनकी सार्वजनिक जीवन से संन्यास लेने की उम्र हो चुकी है। उनके बेटे और उत्तराधिकारी तेजस्वी यादव उनकी बात नहीं सुनते।

अपहरण के बाद मुख्यमंत्री आवास में होता था सेटलमेंट : लालू प्रसाद पर उनके साले सुभाष यादव का आरोप

पटना। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के प्रमुख लालू प्रसाद के साले सुभाष यादव ने बृहस्पतिवार को आरोप लगाया कि जब उनके जीजा एवं बहन राबड़ी देवी बिहार के मुख्यमंत्री थे, तब मुख्यमंत्री आवास से अपहरण के बाद सेटलमेंट (सौदेबाजी) होता था। सुभाष ने एक टीवी चैनल से बातचीत के दौरान आरोप लगाया के राजद शासन काल के दौरान किसी का अपहरण होने पर फिरौती को लेकर डील (सौदेबाजी) सीधे मुख्यमंत्री आवास से होता था। उन्होंने दावा किया कि अपहरण और फिरौती के मामलों में सीधे मुख्यमंत्री आवास से बातचीत होती थी और पूरा सौदा लालू प्रसाद ही तय करते थे। हालांकि, राजद ने सुभाष यादव के इन आरोपों को पूरी तरह से खारिज करते हुए इसे राजनीतिक साजिश करार दिया है। लालू के दूसरे साल साधु यादव ने सुभाष के आरोपों को निराधार और बेबुनियाद बताया है।

शांति वार्ताओं में यूक्रेन व यूरोप को शामिल करें: नाटो

भाषा। ब्रसेल्स

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से जल्द बातचीत किए जाने का संकेत मिलने के बाद, उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के कई सदस्य देशों ने बृहस्पतिवार को कहा कि किसी भी शांति वार्ता से यूक्रेन और यूरोप को दूर नहीं रखा जाना चाहिए। नाटो में शामिल देश ब्रिटेन के रक्षा मंत्री जॉन हिली ने कहा, यह मत भूलिए कि रूस, यूक्रेन के अलावा और देशों के लिए भी खतरा बना हुआ है। अमेरिका ने यह कह कर नाटो को परेशानी में डाल दिया है कि यूक्रेन को कभी भी इस गठबंधन में शामिल नहीं होना चाहिए तथा यूरोपीय सहयोगियों को आने वाले समय में यूक्रेन की सुरक्षा की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। हिली ने नाटो मुख्यालय में पत्रकारों से बात करते हुए कहा, कीव के बिना यूक्रेन के बारे में कोई बातचीत नहीं हो सकती। और किसी भी वार्ता में यूक्रेन को शामिल किया जाना चाहिए। स्वीडन के रक्षा मंत्री पेल जॉनसन ने कहा कि यूरोपीय देशों ने पिछले साल यूक्रेन को लगभग 60 प्रतिशत सैन्य सहायता प्रदान की थी, लिहाजा उन्हें भी वार्ता में शामिल किया जाना चाहिए। खासतौर पर अमेरिका की इस मांग को ध्यान में रखते हुए कि दीर्घ अवधि में यूरोप को यूक्रेन की सुरक्षा की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। जॉनसन ने कहा, यह बहुत स्वाभाविक है कि हमें वार्ता में शामिल किया जाना चाहिए। एस्टोनिया के रक्षा मंत्री हेनो पेवकर ने कहा कि यूरोपीय देशों ने रूस पर प्रतिबंध लगाए हैं, यूक्रेन के रक्षा क्षेत्र में भारी निवेश किया है और उनसे युद्ध से तबाह देश के पुनर्निर्माण का खर्च उठाने को कहा जाएगा। पेवकर ने कहा, हमें भी वार्ता में शामिल किया जाना चाहिए। अन्यथा यह शांति दीर्घकालिक नहीं होगी। इस बीच, यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की ने कहा कि वह यूक्रेन के बारे में ऐसे किसी भी समझौते को स्वीकार नहीं करेंगे जिसमें उनके देश को बातचीत में शामिल नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा, एक स्वतंत्र देश के रूप में हम बिना हमारे किए गए किसी भी समझौते को स्वीकार नहीं कर सकते। मैं अपने साझेदारों को यह बात बहुत स्पष्ट रूप से बताता हूं – यूक्रेन के बारे में कोई भी द्विपक्षीय वार्ता और यूक्रेन के बारे में कोई भी द्विपक्षीय वार्ता हमारे बिना – हम स्वीकार नहीं करेंगे। अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने बुधवार को यूक्रेन के समर्थक पश्चिमी देशों से कहा था कि कीव के लिए नाटो की सदस्यता अवास्तविक है। यूक्रेन को रूस से अपने सभी क्षेत्र वापस पाने की उम्मीदें छोड़ देनी चाहिए और शांति समझौते की तैयारी करनी चाहिए।

हमास ने बंधकों को रिहा करने की घोषणा की

काहिरा। हमास ने बृहस्पतिवार को कहा कि वह योजना के अनुसार इजराइली बंधकों को रिहा करेगा। चरमपंथी संगठन की इस घोषणा को उस मुद्दे को हल करने के प्रयास के तौर पर देखा जा रहा है, जिसकी वजह से गाजा मे संघर्ष विराम पर खतरा मंडरा रहा है। हमास ने एक बयान मे कहा कि मिस्र और कतर के मध्यस्थों ने पुष्टि की है कि वे सभी बाधाओं को दूर करने के लिए काम करेंगे, और संघर्ष विराम समझौता लागू होगा। बयान मे संकेत दिया गया है कि शनिवार को तीन और इजराइली बंधकों को रिहा किया जाएगा। हमास की घोषणा के बाद इजराइल की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नही आई। हमास ने और इजराइली बंधकों की रिहाई में देरी करने की धमकी दी थी, और इजराइल पर तंबुओ व शिविरो मे रहने की अनुमति देने के दायित्वों को पूरा करने में विफल रहने का आरोप लगाया था। इसके अलावा, हमास ने इजराइल पर संघर्ष विराम की अन्य शर्तों के उल्लंघनो का भी आरोप लगाया था। इजरायल ने बंधकों को रिहा न किए जाने की स्थिति मे अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के समर्थन से अपने हमले फिर से शुरू करने की धमकी दी थी।

म्यांमा के ऑनलाइन घोटाला केंद्रों से बचाए गए 260 विदेशियों में भारतीय भी शामिल, वापस भेजा जाएगा

बैंकॉक। म्यांमा में कथित रूप से तस्करी कर लाए गए और ऑनलाइन घोटाला केंद्रों में काम करने के लिए मजबूर कुछ भारतीयों सहित लगभग 260 लोगों को बचाया गया है तथा उन्हें अब वापस उनके देश भेजा जाएगा। थाईलैंड की सेना ने बृहस्पतिवार को यह घोषणा की। थाईलैंड की सेना ने दक्षिण पूर्व एशिया से संचालित घोटाला केंद्रों पर ताजा कार्वाई करते हुए बृहस्पतिवार को लगभग 260 लोगों को वापस भेजने के प्रयास का समन्वय करने की घोषणा की। ऐसा माना जा रहा है कि वे (विदेशी नागरिक) मानव तस्करी का शिकार थे, जिन्हें म्यांमा से बचाकर थाईलैंड भेजा गया। थाईलैंड के साथ सीमा साझा करने वाले म्यांमा, कंबोडिया और लाओस आपराधिक गिरोह के लिए आश्रय के रूप में जाने जाते हैं। इन आपराधिक गिरोहों के बारे में अनुमान है कि उन्होंने दक्षिण पूर्व एशिया और अन्य जगहों पर हजारों की संख्या में लोगों को झूठे प्यार, फर्जी तरीके से निवेश करने और जुआ योजनाओं सहित ऑनलाइन घोटाले केंद्रों के संचालन में मदद करने के लिए मजबूर किया है।संयुक्तराष्ट्र के विशेषज्ञों के अनुसार, इस तरह के घोटालों ने दुनिया भर के लोगों से अरबों डॉलर ठगे हैं जबकि इन फर्जी चीजों को अंजाम देने के लिए भर्ती किए गए लोगों को अक्सर झूठे बहाने से नौकरी दिलाने के नाम पर धोखा दिया जाता है और इन धंधों में फंसाया जाता है।सेना ने बताया कि सबसे हालिया अभियान में बचाए गए लोग 20 देशों के थे, जिनमें से काफी संख्या में इथियोपिया, केन्या, फिलीपीन, मलेशिया, पाकिस्तान और चीन के थे। इनके अलावा बचाए गए लोगों में इंडोनेशिया, नेपाल, ताइवान, युगांडा, लाओस, ब्राजील, बुरुंडी, तंजानिया, बांग्लादेश, कंबोडिया, श्रीलंका, नाइजीरिया, घाना और भारत के नागरिक भी शामिल हैं।सेना ने बताया कि उन्हें (बचाए गए लोगों को) बुधवार को म्यांमा के म्यावाडी जिले से सीमा पार करा कर थाईलैंड के टाक प्रांत भेजा गया था।

तुर्किए के राष्ट्रपति ने की पाक के प्रधानमंत्री से मुलाकात

इस्लामाबाद। तुर्किए के राष्ट्रपति रजब तैयब एर्दोआन ने बृहस्पतिवार को पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ से इस्लामाबाद में उनके कार्यालय में मुलाकात की और गाजा के हालात समेत कई द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा की। अधिकारियों ने बताया कि ये दोनों देशों के बीच व्यापार और आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए कई समझौतों पर हस्ताक्षर करेंगे। एर्दोआन कड़ी सुरक्षा के बीच अपने होटल से निकले और तुर्किए एवं पाकिस्तान के पारंपरिक परिधान पहने लोगों ने उनका स्वागत किया। लोग उनके स्वागत के लिए शहर की एक प्रमुख सड़क पर खड़े थे जिसे तुर्किए और पाकिस्तान के झंडों से सजाया गया था। राष्ट्रपति के काफिले के सड़क पर आगे बढ़ने के बीच लोग ढोल की थाप पर नाचते दिखे। शरीफ ने एर्दोआन और उनकी पत्नी एमीन एर्दोआन का अपने कार्यालय में स्वागत किया। समारोह से पहले एक बैंड ने दोनों देशों के राष्ट्रगान बजाए जिसके बाद नेताओं ने सलामी गारद का निरीक्षण किया।

प्लेटिनम लव बैंड से करेंगे दुनिया में प्रेम का इजहार

ग्लोबल। इस महीने सच्ची और नायाब मोहब्बत का इजहार प्लेटिनम के साथ करें, जो सील इट विथ प्लेटिनम के साथ इस पर अपनी मुहर लगा देगा। यह दुनिया का एकमात्र मैटल है, जो इस सार को समाहित करता है। 95 प्रतिशत शुद्ध और दुर्लभ प्लेटिनम दुनिया की कुछ चुनिंदा जगहों पर पाया जाता है और सोने के मुकाबले 30 गुना अधिक दुर्लभ है। प्लेटिनम लव बैंड्स केवल जेवरात नहीं, बल्कि मोहब्बत का प्रतीक हैं, वह मोहब्बत जो अपने आप में खास है!अपनी विशेष बनावट, फ्लुड लाईनों और सुंदर मोटिफ्स के साथ प्लेटिनम लव बैंड्स को खूबसूरती से प्यार की कहानियों को आत्मसात करने के लिए डिजाईन किया गया है। मिनिमलिस्ट और चिक स्टाईल हो या फिर कालातीत सौंदर्य, प्लेटिनम लव बैंड्स का विस्तृत कलेक्शन उन सभी युगलों के लिए है, जो अपने प्यार के लिए समर्पित हैं। प्लेटिनम लव बैंड्स प्यार का स्थायी प्रतीक हैं, जो आप हर दिन पहनकर इसका एहसास ले सकते हैं। यह आप दोनों के साझा भविष्य में सदैव खूबसूरत बने रहने के लिए तैयार किया गया है।इस वैलेंटाईन डे के अवसर पर जब प्यार का एहसास जागे, तो इस पर सील इट विथ प्लेटिनम के साथ अपनी मुहर लगाएं। इस विशेष अवसर के लिए सुंदर प्लेटिनम लव बैंड्स खरीदें। पीजीआई इंडिया के प्लेटिनम लव बैंड देश के मुख्य ज्वेलरी स्टोर्स पर उपलब्ध हैं।

सऊदी अरब के शिक्षक को मिला ग्लोबल टीचर प्राइज 10 लाख अमेरिकी डॉलर है इनामी राशि

दुबई। सऊदी अरब के एक शिक्षक को बृहस्पतिवार को ग्लोबल टीचर प्राइज दिया गया है, जिसकी इनामी राशि 10 लाख अमेरिकी डॉलर है। मंसूर अल-मंसूर को जरूरतमंद लोगो की मदद करने के लिए यह पुरस्कार दिया गया है। दुबई में आयोजित विश्व भर की सरकारों के शिखर सम्मेलन मे सऊदी शिक्षक को यह पुरस्कार प्रदान किया गया। अल-मंसूर एक लेखक भी हैं। उन्होंने सऊदी अरब में भीषण गर्मी के महीनो के दौरान लोगो को एयर कंडीशनिंग (एसी) के रखरखाव की सुविधा उपलब्ध कराने में भी मदद की थी। वर्की फाउंडेशन यह पुरस्कार प्रदान करता है और इसके संस्थापक सनी वर्की हैं। उन्होंने जीईएमएस एजुकेशन कंपनी की स्थापना की थी। इस कंपनी के तहत मिस्र, कतर एवं संयुक्त अरब अमीरात में दर्जनों स्कूलों का संचालन किया जाता है। वर्की फाउंडेशन ने अल-मंसूर सहित अब तक नौ शिक्षकों को यह पुरस्कार प्रदान किया है। फाउंडेशन ने इस पुरस्कार की शुरूआत 2015 मे की थी।

ताइवान में फूड कोर्ट में विस्फोट होने से चार की मौत, 26 अन्य घायल

भाषा। ताइपे

ताइवान में बृहस्पतिवार को एक डिपार्टमेंटल स्टोर (बड़ी दुकान) में गैस सिलेंडर में विस्फोट होने से चार लोगों की मौत हो गई और 26 अन्य लोग घायल हो गए। दमकल अधिकारियों ने यह जानकारी दी। ताइचुंग फायर ब्यूरो ने बताया कि विस्फोट ताइचुंग शहर के शिन कोंग मित्सुकोशी डिपार्टमेंटल स्टोर की 12वीं मंजिल पर स्थित फूड कोर्ट में हुआ। मकाऊ के पर्यटन कार्यालय ने बृहस्पतिवार को पुष्टि की कि मृतकों में मकाऊ से आए दो लोग शामिल हैं, जबकि तीसरा गंभीर रूप से घायल है। स्थानीय मीडिया ने बताया कि वे सात लोगों के एक परिवार का हिस्सा थे जो मकाऊ घूमने आए थे। घटना में घायल अन्य पांच लोगों का ताइचुंग के स्थानीय अस्पताल में इलाज हो रहा है। पूर्वाह्न करीब साढ़े 11 बजे घटनास्थल पर कई अग्निशमन कर्मियों को तैनात किया गया। विस्फोट में इमारत के बाहरी हिस्से क्षतिग्रस्त हो गए और मलबा सड़कों पर बिखरा पाया गया।

अमेरिका ने मेक्सिको की खाड़ी का नाम बदला

वाशिंगटन। फ्लोरिडा से टेक्सास होते हुए मेक्सिको तक फैले जल निकाय का नाम अमेरिका ने मेक्सिको की खाड़ी से बदलकर अमेरिका की खाड़ी रखने का फैसला किया है और वह अन्य देशों पर भी ऐसा ही करने का दबाव बना रहा है। अमेरिका के राष्ट्रपति के आधिकारिक आवास एवं कार्यालय व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने बुधवार को कहा, यह सच है कि लुइसियाना के तट के पास के जल निकाय को अमेरिका की खाड़ी कहा जाएगा। यह इस प्रशासन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है कि हम इसे न केवल यहां के लोगों के लिए, बल्कि दुनिया के बाकी हिस्सों के लिए भी बदलें। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 20 जनवरी को अपने शपथ ग्रहण समारोह से पहले मेक्सिको की खाड़ी का नाम बदलकर अमेरिका की खाड़ी रखने की योजना की घोषणा की थी और पदभार संभालते ही उन्होंने ऐसा करने के लिए एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर भी किए थे।मेक्सिको की राष्ट्रपति क्लाउडिया शिनबाम ने ट्रंप के इस कदम को खारिज करते हुए कहा कि राष्ट्रपति खाड़ी के अमेरिकी हिस्से के लिए अपनी पसंद के नाम का इस्तेमाल कर सकते हैं।

अमेरिका: कर्मचारियों को वित्तीय प्रोत्साहन देकर इस्तीफा दिलाने की ट्रंप की योजना को मंजूरी मिली

वाशिंगटन। अमेरिका की संघीय अदालत के एक न्यायाधीश ने देश के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की संघीय कार्यबल में कटौती की उस योजना का रास्ता बुधवार को साफ कर दिया जिसके जरिए कर्मचारियों को इस्तीफा देने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से उन्हें धन की पेशकश की जा रही है। बोस्टन में अमेरिकी जिला न्यायाधीश जॉर्ज ओ टूल जूनियर ने पाया कि श्रमिक संघों के एक समूह के पास इस कार्यक्रम को चुनौती देने के लिए कानूनी आधार नहीं है। इस कार्यक्रम को आमतौर पर बायआउट (खरीदने की गतिविधि) के रूप में वर्णित किया जाता है। ट्रंप की सरकारी कर्मचारियों को नौकरी छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करने के मकसद से उन्हें वित्तीय प्रोत्साहन देने की योजना है। अमेरिका के राष्ट्रपति के आधिकारिक आवास एवं कार्यालय व्हाइट हाउस के अनुसार, हजारों कर्मचारियों ने सरकार के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है।

राष्ट्रपति ट्रंप ने पॉल कपूर को दक्षिण एशियाई मामलों के प्रमुख अमेरिकी राजनयिक के रूप में नामित किया

वाशिंगटन। दक्षिण एशियाई सुरक्षा मामलों के विशेषज्ञ पॉल कपूर को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दक्षिण एशियाई मामलों के लिए सहायक विदेश मंत्री के रूप में नामित किया है। अगर कपूर को सीनेट से मंजूरी मिल जाती है तो वह डोनाल्ड लू की जगह लेंगे। अमेरिकी विदेश विभाग ने जनवरी में पुष्टि की थी कि दक्षिण और मध्य एशियाई मामलों के सहायक विदेश मंत्री डोनाल्ड लू का कार्यकाल 17 जनवरी, 2025 को समाप्त हो गया है। दक्षिण और मध्य एशियाई मामलों का ब्यूरो अमेरिका की विदेश नीति और अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, कजाकिस्तान, किर्गिज़स्तान, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उज्बेकिस्तान के साथ अमेरिकी संबंधों से जुड़े मामलों को देखता है।

एलन मस्क का आह्वान: अमेरिका की संघीय सरकार से संपूर्ण एजेंसियों को हटाया जाए

भाषा। दुबई

अमेरिकी उद्योगपति एलन मस्क ने बृहस्पतिवार को राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में खर्चों में भारी कटौती और प्राथमिकताओं को फिर से तय किए जाने के अपने अभियान के तहत अमेरिका की संघीय सरकार से संपूर्ण एजेंसियों को हटाने का आह्वान किया। मस्क ने दुबई, संयुक्त अरब अमीरात में विभिन्न देशों की सरकारों के शिखर सम्मेलन में वीडियो कॉल के माध्यम से एक व्यापक सर्वेक्षण की पेशकश की, जिसमें उन्होंने ट्रंप प्रशासन की प्राथमिकताओं के बारे में बताया, जिनमें थर्मोन्यूक्लियर युद्ध और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संभावित खतरों के कई संदर्भ शामिल थे। मस्क ने कहा, हमारे यहां वास्तव में नौकरशाही का शासन है, न कि लोगों का शासन – लोकतंत्र। मस्क काली टी-शर्ट पहनकर सम्मेलन में शामिल हुए जिस पर लिखा था: टेक सपोर्ट। उन्होंने मजाकिया अंदाज में यह भी कहा कि वह व्हाइट हाउस के टेक सपोर्ट हैं। मस्क ने कहा, मुझे लगता है कि हमें बहुत सी एजेंसियों को पीछे छोड़ने के बजाय समस्त एजेंसियों को हटाने की जरूरत है। उन्होंने कहा,

दक्षिण अमेरिका की सबसे तेज यात्रा का विश्व रिकॉर्ड बनाने की कोशिश कर रहे भारतीय साइकिलिस्ट की मौत

सैंटियागो(चिली)। दक्षिण अमेरिका की सबसे तेज 10,000 किलोमीटर की यात्रा करने का विश्व रिकॉर्ड तोड़ने के प्रयास में चिली में एक वाहन की चपेट में आने से 36 वर्षीय भारतीय साइकिलिस्ट की मौत हो गई। मीडिया मे आई खबरो मे यह जानकारी दी गई है।स्थानीय रेडियो नेटवर्क रेडियो पॉलिना ने अधिकारियों के हवाले से बताया कि मोहित कोहली को बुधवार सुबह साढ़े आठ बजे (स्थानीय समयानुसार) पोजो अलमोंटे कम्यून में रूट संख्या पांच पर एक मिनी बस ने कुचल दिया। पोजो अलमोंटे अग्निशमन विभाग के अधीक्षक एफ्रेन लिलो के अनुसार, कोहली की मौके पर ही मौत हो गई।खबर के मुताबिक, प्रारंभिक जांच और दुर्घटना के कारणों को स्पष्ट करने के लिए राष्ट्रीय कानून प्रवर्तन एजेंसी के कर्मचारी घटनास्थल पर पहुंचे हैं। इक्विक पुलिस के यातायात दुर्घटना जांच अनुभाग (एसआईएटी) के लेफ्टिनेंट एलेक्सिस गुटिरेज कोरबालन ने बताया, गंभीर रूप से घायल होने की वजह से उनकी (कोहली की) मौत हो गई। कोहली अपने सोशल मीडिया खाते पर अपनी यात्रा का विवरण दे रहे थे, जिसके अनुसार, उनका लक्ष्य कोलंबिया के कार्टाजेना से अर्जेंटीना के उशुआइया तक सबसे तेज साइकिलिंग रिकॉर्ड बनाना था।एक स्थानीय समाचार पोर्टल के अनुसार, साइकिल चालक ने 22 जनवरी को कार्टाजेना से अपनी यात्रा शुरू की और 10,000 किलोमीटर की यात्रा दौरान वह कोलंबिया, पेरू, इक्वाडोर को पार कर चिली से गुजर रहे थे।

पाक सेना प्रमुख ने जेल में बंद इमरान खान से कोई पत्र मिलने से किया इनकार

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर ने जेल मे बंद पूर्व प्रधानमंत्री और पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के संस्थापक इमरान खान से कोई खत मिलने से बृहस्पतिवार को इनकार किया। जियो न्यूज की खबर के मुताबिक, मीडिया से अनौपचारिक बातचीत मे खान के खुले पत्रो का जिक्र करते हुए सेना प्रमुख ने कहा कि अगर यह खत उन्हे मिल भी जाए तो भी वह इसे नही पढ़ेंगे।जनरल मुनीर ने कहा कि अगर उन्हे ऐसा कोई पत्र प्राप्त होगा तो वह उसे प्रधानमंत्री तक पहुंचा देंगे। जनरल मुनीर ने कहा कि देश संतोषजनक ढंग से तरक्की कर रहा है और पाकिस्तान विकास के रास्ते पर है। सेना प्रमुख ने कहा,"पाकिस्तान आगे बढ़ रहा है और पाकिस्तान को आगे बढ़ना है। पूर्व प्रधानमंत्री के वकील ने बताया कि खान ने एक दिन पहले जनरल मुनीर को तीसरा खुला पत्र लिखा है। वह साल 2023 से विभिन्न आरोपो में जेल मे बंद है। तीसरे पत्र मे, जेल मे बंद पीटीआई संस्थापक ने चुनाव मे धांधली के आरोपो को दोहराया और कहा कि धन शोधन करने वालो को चुनावो मे हेरफेर कर सत्ता मे लाया गया है।

दुनिया में छा रही जी5 की एमआरएस

मुंबई। इंडिया और भारत के सबसे बड़े स्वदेशी वीडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म और बहुभाषी कहानीकार, जी5, ने फिल्म एमआरएस की अभूतपूर्व सफलता का जश्न मनाया। यह फिल्म 150 मिलियन से अधिक स्ट्रीमिंग मिनट्स के साथ जी5 के इतिहास में अब तक का सबसे बड़ी ओपनिंग वीकेंड साबित हुई है। बहुमुखी प्रतिभा की धनी अभिनेत्री सान्या मल्होत्रा के शानदार अभिनय से सजी यह फिल्म अपनी दमदार कहानी के चलते पूरे भारत में दर्शकों के दिलों को छू रही है। यही कारण है कि यह फिल्म न केवल जी5 पर रिकॉर्ड व्यूअरशिप हासिल कर रही है, बल्कि गूगल पर सबसे अधिक खोजी जाने वाली फिल्म बन गई है, जिसे गूगल पर उपयोगकर्ताओं ने 4.6/5 की शानदार रेटिंग दी है। इसके अलावा,आईएमबीडी पर भी इस फिल्म को 7.3 की प्रभावशाली रेटिंग मिली है, जो दर्शकों की जबरदस्त प्रतिक्रिया को दर्शाता है।जी5 के एसवीओडी इंडिया और ग्लोबल मार्केटिंग के वाइस प्रेसिडेंट, श्रेष्ठ गुप्ता ने कहा, फ्फिल्म स्र्ह्य. को मिली अभूतपूर्व प्रतिक्रिया इस बात को फिर से साबित करती है कि जी5 उन कहानियों को प्रस्तुत करने के लिए प्रतिबद्ध है, जो सार्थक बदलाव लाने की क्षमता रखती हैं।उन्होंने आगे कहा, हमारे कैंपेन के तहत, यह फिल्म पारंपरिक रूढियों को चुनौती देती है और एक नया, सशक्त दृष्टिकोण पेश करती है। इसकी शानदार व्यूअरशिप दर्शाती है कि दर्शकों के बीच बदलाव लाने वाली कहानियों की मांग तेजी से बढ़ रही है। हम भविष्य में भी ऐसी प्रभावशाली कहानियों को लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

जश्न मनाने के लिए दुबई उम्दा स्थान

दुबई। इस वैलेंटाइन डे सीजन में दुबई कुछ सबसे खूबसूरत और रोमांटिक जगहों की पेशकश कर रहा है। चाहे आप समुद्र किनारे रोमांटिक डिनर की योजना बना रहे हों, एक शानदार स्पा रिट्रीट चाहते हों, या फिर रोमांचक स्टेकेशन की तलाश में हों—ये खास अनुभव आपको और आपके प्रियजन को यादगार पल देंगे। ऐसे में यहां दुबई के बेहतरीन रोमांटिक जगहों की जानकारी दी गई है। शांग्री-ला दुबई में बेहतरीन लक्ज़री का आनंद लें, जहां वैलेंटाइन सेलिब्रेशन नए आयाम छूता है। बुर्ज खलीफा और डाउनटाउन दुबई के शानदार नज़ारों के बीच लेवल 42 में स्थित,प्राइवेट डाइनिंग अबव द क्लाउड्स कपल्स के लिए खास डाइनिंग अनुभव प्रदान करता है। चाहे सूर्योदय के समय का नाश्ता हो या रोमांटिक डिनर, यहां हर पल को यादगार बनाने के लिए बेहतरीन इंतज़ाम किए गए हैं।जद्दाफ वॉटरफ्रंट के खूबसूरत इलाके में स्थित पालाज़ो वर्साचे दुबई अपने आकर्षण और रोमांटिक माहौल के लिए जाना जाता है। गिआर्डिनो रेस्तरां में वैलेंटाइन डिनर के लिए एक खास माहौल तैयार किया गया है, जहां मधुर संगीत और खूबसूरत सजावट आपके अनुभव को और खास बनाएंगे। इसके अलावा, मोसाइको में कपल्स स्पेशल हाई टी का आनंद ले सकते हैं, जहां प्यार से सजे केक ट्रॉली और रोमांटिक सूर्यास्त के नज़ारे दुबई क्रीक की खूबसूरती को और बढ़ाते हैं। सादियात आइलैंड के सफेद रेतीले समुद्र तटों के पास स्थित, रिक्सोस प्रीमियम सादियात आइलैंड कपल्स के लिए एक खास और एक्सक्लूसिव ऑल-इनक्लूसिव रिट्रीट प्रदान करता है। यहां लक्ज़री विला, प्राइवेट पूल और अंजना स्पा में आरामदायक स्पा ट्रीटमेंट्स रोमांटिक माहौल को और आकर्षक बनाते हैं। मेहमान ओरिएंट रेस्तरां में प्रामाणिक तुर्की व्यंजनों का आनंद ले सकते हैं, या फिर वह समुद्र किनारे कैंडललाइट डिनर के साथ लाइव म्यूजिक और खूबसूरत समुद्री नज़ारों का लुत्फ उठा सकते हैं। बिजनेस बे इलाके में स्थित, जेडब्ल्यू मैरियट मार्क्विस होटल दुबई एक प्रतिष्ठित रोमांटिक स्थल है। वैलेंटाइन डे का सेलिब्रेशन यहां तीन खास रेस्तरां में मनाया जा सकता है, जहां अलग-अलग स्वादिष्ट व्यंजन परोसे जाते हैं। होटल की ऊंचाई से पूरे डाउनटाउन दुबई के शानदार नज़ारे दिखते हैं, जो एक यादगार शाम के लिए बेहतरीन जगह हैं। प्राइम 68 में प्रीमियम स्टेक, टोंग थाई में थाई जायके और रंग महल में भारतीय मसालों का अनोखा स्वाद कपल्स के लिए खास अनुभव बनाते हैं। दुबई क्रीक रिज़ॉर्ट में पूरे फरवरी महीने भर प्यार का उत्सव मनाएं।

अमेजन व विदेश व्यापार महानिदेशालय में साझेदारी

नई दिल्ली। अमेजन और विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने आज भारत से ई-कॉमर्स निर्यात में तेजी लाने के लिए अपने सहयोग के विस्तार की घोषणा की। यह प्रारंभिक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर आधारित है जिस पर नवंबर 2023 में हस्ताक्षर किया गया था। इसका उद्देश्य था, एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम) निर्यात को बढ़ावा देने के लिए सरकार की जिलों को निर्यात केंद्र पहल के रूप में लाभ उठाना था। यह नवीनीकृत गठजोड़ देश भर में एमएसएमई को ई-कॉमर्स निर्यात में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल और संसाधनों से लैस करने पर ध्यान केंद्रित करेगा। संतोष सारंगी (डीजीएफटी के अतिरिक्त सचिव और महानिदेशक), चेतन कृष्णस्वामी (उपाध्यक्ष, सार्वजनिक नीति - अमेज़न) और भूपेन वाकणकर (वैश्विक व्यापार निदेशक - अमेज़न इंडिया) की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन का नवीनीकरण किया गया।इस विस्तारित गठजोड़ के तहत भारत के ई-कॉमर्स निर्यात परितंत्र को और मजबूत करने के लिए कई नई पहलों की शुरुआत होगी। इनमें 47 जिलों में विशेष प्रशिक्षण सत्र, डीजीएफटी के ट्रेड कनेक्ट पोर्टल के भीतर अमेज़न के एक्सपोर्ट नेविगेटर टूल का एकीकरण और एमएसएमई के लिए स्थानीय ऑफलाइन नेटवर्क के रूप में निर्यात समुदायों की स्थापना शामिल है।अमेज़न इंडिया में वैश्विक व्यापार निदेशक, भूपेन वाकणकर ने कहा, हम एमएसएमई और देश भर के उद्यमियों को मजबूत वैश्विक कारोबार खड़ा करने और भारत के समग्र निर्यात में योगदान देने के लिए डीजीएफटी के साथ अपने सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए उत्साहित हैं। भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव और महानिदेशक, डीजीएफटी संतोष सारंगी ने कहा, अमेज़ॅन के साथ हमारा निरंतर सहयोग प्रत्येक जिले को निर्यात केंद्र बनाने के दृष्टिकोण को साकार करने में एक महत्वपूर्ण कदम है। अपनी प्रारंभिक सफलता के आधार पर, हम वैश्विक बाजारों तक पहुँचने के लिए अधिक एमएसएमई का समर्थन करने के लिए अपना ध्यान 47 जिलों तक बढ़ा रहे हैं।

इनडीड ने 2025 के लिए भारत में सबसे अधिक मांग में रहने वाली नौकरियों का खुलासा किया

बैंगलोर। भारत में सालों से नौकरी के बाजार में टेक.सॉफ्टवेयर इंजीनियस, डेटा साईंटिस्ट्स, और एआई स्पेशलिस्ट्स का वर्चस्व रहा है। लेकिन 2025 में आर्किटेक्ट्स ने उन सभी को पीछे छोड़ दिया है। ग्लोबल मैचिंग और हायरिंग प्लेटफॉर्म इनडीड ने आज 2025 में भारत की सर्वोच्च नौकरियों की सूची जारी की। इसके मुताबिक देश में आर्किटेक्ट्स इस समय सबसे ज्यादा मांग में हैं। उनकी नौकरी में साल.दर.साल 81 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है तथा उनका औसत वार्षिक वेतन 14,95,353 रुपये है। नौकरियों की पोस्टिंग, वेतन, और विकास की क्षमता के आधार पर तैयार की गई यह रैंकिंग प्रदर्शित करती है कि भारत में तेजी से होता शहरीकरणए इन्फ्रास्ट्रक्चर में तेजी और सस्टेनेबल निर्माण की मांग नियुक्तियों को किस प्रकार प्रभावित कर रही है। मेट्रो शहरों के विस्तार, स्मार्ट सिटीज़ के उदय और कंपनियों द्वारा एनर्जी.एफिशियंट ऑफिस स्पेसेज़ में निवेश के साथ आर्किटेक्ट्स इस परिवर्तन में केंद्रीय भूमिका निभा रहे हैं। इनडीड इंडिया में हेड ऑफसेल्स शशि कुमार ने कहा कि नॉन टेक पद कई सालों में पहली बार सूची में सबसे ऊपर आए हैं। भारत के विकसित होते हुए शहरोंए नए कमर्शियल केंद्रो और तेजी से बढ़ती रियल ईस्टेट के कारण भविष्य का डिज़ाईन करने वाले आर्किटेक्ट्स की मांग बढ़ रही है। जहाँ एआई कार्यशैली के भविष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैए वहीं बुनियादी टेक्नोलॉजी के पद भी महत्वपूर्ण हैंए जो टेक्नोलॉजी के परिवेश को मजबूतए सुरक्षित और विस्तारयोग्य बनाए हुए हैं। बड़े डेटासेट को नियंत्रित और डिकोड करने वाले डेटा इंजीनियर्स और डेटा एनालिस्ट्स से लेकर सिस्टम की स्टेबिलिटी बनाए रखने वाले साईट रिलायबिलिटी इंजीनियर्स और टेक्निकल कंसल्टैंट्स तकए ये सभी पद व्यवसाय को चुस्तए प्रभावशाली और भविष्यरोधी बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। जहाँ संगठन ऑपरेशनल एफिशियंसी और दृढ़ता को प्राथमिकता दे रहे हैंए वहीं इन टेक पदों पर काम करने वाले प्रोफेशनल्स न केवल भारत के टेक उद्योग का भविष्य तय करते हैंए बल्कि दीर्घकालिक डिजिटल परिवर्तन को भी सुगम बनाते हैं।

विशाल दूरबीन ने बाहरी अंतरिक्ष में अधिक ऊर्जा वाले कण का पता लगाया

भाषा। सिडनी

सिसिली के समुद्र तट से लगभग 80 किलोमीटर दूर, भूमध्य सागर में साढ़े तीन किलोमीटर गहराई में केएम3एनईटी नामक एक बहुत ही असामान्य दूरबीन का आधा हिस्सा पड़ा है।यह विशाल उपकरण अभी निर्माणाधीन है, लेकिन आज दूरबीन की वैज्ञानिक टीम ने घोषणा की कि उन्होंने बाहरी अंतरिक्ष से एक कण का पता लगा लिया है जिसमें बहुत अधिक ऊर्जा है। टीम ने पत्रिका नेचर में जानकारी दी है कि उन्हें अब तक का सबसे ऊर्जावान न्यूट्रिनो पाया है और यह सुदूर ब्रह्मांड के अज्ञात जल की खोज में एक बड़ी छलांग को दर्शाता है। यह समझाने के लिए कि यह इतनी उल्लेखनीय खोज क्यों है, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि केएम3एनईटी क्या है, यह क्या खोज रही है, और इसने क्या देखा ?केएम3एनईटी क्या है ?केएम3एनईटी एक विशाल गहरे समुद्र की दूरबीन है जिसे 21 देशों के 300 से अधिक वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के अंतरराष्ट्रीय सहयोग से बनाया जा रहा है।सिसिली के पास और फ्रांस में प्रोवेंस के तट पर स्थित एक अन्य स्थान पर केएम3एनईटी 6,000 से अधिक प्रकाश डिटेक्टरों से बना होगा, जो गहरे समुद्र में लटके होंगे। दूरबीन समुद्र के लगभग एक घन किलोमीटर क्षेत्र को घेरेगी।गहरे समुद्र में केएम3एनईटी को सूर्य जैसे प्रकाश के सामान्य स्रोतों से बचाया जाता है। इसे इलेक्ट्रॉन और प्रोटॉन जैसे अन्य कणों से भी सुरक्षित किया जाता है, जो डिटेक्टरों तक पहुंचने से बहुत पहले ही पानी द्वारा अवशोषित कर लिए जाते हैं। तो यह क्या देखता है ?केएम3एनईटी क्या खोज रही है ?भौतिकशास्त्रियों ने जितने भी कणों की खोज की है, उनमें से केवल दिखाई न देने वाला न्यूट्रिनो ही केएम3एनईटी तक पहुंच सकता है। न्यूट्रिनो एक प्राथमिक कण है जिसमें कोई विद्युत आवेश नहीं होता और इसका द्रव्यमान बहुत छोटा होता है। यह पदार्थ के साथ इतनी कमजोरी से संपर्क करता है कि यह डिटेक्टर तक पहुंचने के लिए समुद्र में कई किलोमीटर और यहा तक कि पृथ्वी के हजारों किलोमीटर को भी पार कर सकता है। यही कारण है कि केएम3एनईटी न्यूट्रिनो को देखने के लिए, और केवल न्यूट्रिनो को देखने के लिए समुद्र के तल में है। लेकिन, क्या न्यूट्रिनो डिटेक्टर से भी नहीं गुजरेंगे ? हां, लगभग सभी ऐसा नहीं करेंगे।लेकिन बहुत कम ही, कोई न्यूट्रिनो सीधे पानी के अणु से टकराता है। जब ऐसा होता है, तो यह बहुत बड़ा झटका दे सकता है। न्यूट्रिनो की ऊर्जा कई और कण बना सकती है। जैसे ही ए कण पानी से गुजरते हैं, वे एक नीली चमक पैदा करते हैं। यही केएम3एनईटी के डिटेक्टर देखते हैं। इस नीली रोशनी का विश्लेषण करके, और प्रत्एक चमक का समय निर्धारित करके, वैज्ञानिक न्यूट्रिनो की मूल ऊर्जा और जिस दिशा से यह आया था, उसका पुनर्निर्माण कर सकते हैं।

दुनिया की पहली रोबोटिक कार्डियक टेलीसर्जरी को 286 किलोमीटर की दूरी से दिया गया अंजाम

पहली स्वदेशी सर्जिकल रोबोटिक टेक्नोलॉजी के डेवलपर और भारत में निर्मित एसएसआई मंत्रा सर्जिकल रोबोटिक सिस्टम बनाने वाली कंपनी एसएस इनोवेशन्स ने मात्र दो दिनों में दुनिया की दो पहली रोबोटिक कार्डियक टेलीसर्जरियों को सफलतापूर्वक अंजाम देकर विश्वस्तरीय चिकित्सा जगत में इतिहास रच दिया है, कंपनी ने ऐसी उपलब्धि हासिल की है, जो अब तक हासिल नहीं की गई थी। एसएसआई मंत्रा 3 सर्जिकल रोबोटिक सिस्टम की मदद से यह संभव हो पाया, जिसमें 286 किलोमीटर की दूरी पर स्थित गुरूग्राम में एसएस इनोवेशन्स का मुख्यालय और जयपुर में मणिपाल हॉस्पिटल्स कनेक्टेड बने रहे। इस ऐतिहासिक उपलब्धि ने ऐसे भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया है, जहां आधुनिक सर्जिकल टेक्नोलॉजी सुलभ एवं प्रभावी ग्लोबल हेल्थकेयर का अभिन्न हिस्सा बन जाएगी। रिमोट के द्वारा टेलीरोबोटिक-असिस्टेड इंटरनल मैमेरी आर्टरी हार्वेस्टिंग की प्रक्रिया को 58 मिनट में सफलतापूर्वक पूरा किया गया। गुरूग्राम में एसएसआई मुख्यालय से एसएस इनोवेशन्स इंटरनेशनल, इंक के संस्थापक, चेयरमैन एवं सीईओ डॉ सुधीर श्रीवास्तव के नेतृत्व में और मणिपाल हॉस्पिटल, जयपुर में चीफ ऑफ कार्डियक सर्जरी डॉ ललित मलिक ने जयपुर की रिमोट लोकेशन में विशेषज्ञों की टीम के साथ इस सर्जरी को अंजाम दिया। इस सर्जरी मात्र 35-40 मिलिसैकण्ड की लो लेटेंसी के साथ बेहतरीन सटीकता का प्रदर्शन किया है। इस ऐतिहासिक प्रक्रिया के बाद एक और- दुनिया की पहली रोबोटिक बीटिंग हार्ट टोटली एंडोस्कोपिक कोरोनरी आर्टरी बायपास प्रक्रिया को अंजाम दिया गया, इसे दुनिया की सबसे जटिल कार्डियक सर्जिकल प्रक्रियाओं में से एक माना जाता है; उसी साझेदारी में मात्र 40 मिलिसैकण्ड की लो लेटेंसी पर यह टेलीसर्जरी की गई। दोनों सर्जरियों में गुरूग्राम और जयपुर के बीच कनेक्टिविटी बनी रही, यह उपलब्धि लम्बी दूरी पर टीम के तालमेल के द्वारा रिमोर्ट सर्जरी के नए मानक स्थापित करती है। इस उपलब्धि ने आने वाले समय में टेलीसर्जरी की बदलावकारी क्षमता की पुष्टि कर दी है, जो भोगौलिक सीमाओं के दायरे से परे, किसी भी दूरी पर स्थित मरीज उच्च गुणवत्ता की सटीम मेडिकल देखभाल का लाभ उठा सकेंगे। इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर खुशी जाहिर करते हुए एसएस इनोवेशन्स के संस्थापक, चेयरमैन और सीईओ डॉ सुधीर श्रीवास्तव ने कहा कि हमें गर्व है कि हमने मानवता को लाभ पहुंचाने के लिए सर्जरी की क्षमता को आधुनिक बनाया है।

एर्दोआन ने भारत और पाकिस्तान से बातचीत के जरिए कश्मीर मुद्दे को सुलझाने का आग्रह किया

इस्लामाबाद। तुर्किए के राष्ट्रपति रजब तैयब एर्दोआन ने बृहस्पतिवार को कहा कि कश्मीर मुद्दे को भारत और पाकिस्तान के बीच बातचीत के जरिए सुलझाया जाना चाहिए जिसमें कश्मीरी लोगों की आकांक्षाओ पर उचित विचार किया जाना चाहिए। दो दिवसीय यात्रा पर पाकिस्तान पहुंचे राष्ट्रपति एर्दोआन ने प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के साथ आमने-सामने की वार्ता और प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता के बाद यह टिप्पणी की। दोनों पक्षों के बीच 24 समझौतों समेत एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ। इसके बाद एर्दोआन ने मीडिया को दिए बयान मे कश्मीर मुद्दे पर बात की। उन्होंने कहा, हमारा राज्य और हमारा राष्ट्र, अतीत की तरह आज भी हमारे कश्मीरी भाइयों के साथ एकजुटता के साथ खड़ा है। भारत ने बार-बार इस बात पर जोर दिया है कि केंद्रशासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर और लद्दाख देश का अभिन्न अंग थे, है और हमेशा रहेंगे। भारत द्वारा 5 अगस्त, 2019 को संविधान के अनुच्छेद 370 को निरस्त करने, जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा खत्म करने और राज्य को दो केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित करने के बाद दोनों देशों के बीच संबंधों में खटास आ गई है।

आरसीबी ने रजत पाटीदार को कप्तान बनाया

आईपीएल 2025 के लिए दी जिम्मेदारी

भाषा। बेंगलुरू

इंडियन प्रीमियर लीग फ्रेंचाइजी रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू (आरसीबी) ने 21 मार्च से शुरू होने वाले आईपीएल के आगामी सत्र के लिए बृहस्पतिवार को रजत पाटीदार को अपना कप्तान नियुक्त किया। पाटीदार दक्षिण अफ्रीका के फाफ डु प्लेसी की जगह लेंगे जिन्हें पिछले साल टीम ने अपने साथ बरकरार नहीं रखा था।पाटीदार पिछले साल नवंबर 2024 में आईपीएल की बड़ी नीलामी से पहले आरसीबी द्वारा रिटेन (अपने साथ बरकरार रखना) किए गए खिलाड़ियों में शामिल थे और उन्हें सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी (टी20) तथा विजय हजारे ट्रॉफी (एकदिवसीय) में मध्य प्रदेश की अगुआई करने का अनुभव है। इस 31 वर्षीय बल्लेबाज ने 2022 में फ्रेंचाइजी के साथ करार किया था। पाटीदार की अगुआई में मध्य प्रदेश ने सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के फाइनल में जगह बनाई थी जहां वे पिछले साल मुंबई से पांच विकेट से हार गए थे। आरसीबी के मुख्य कोच एंडी फ्लावर ने पाटीदार को कप्तान बनाने के लिए आयोजित कार्यक्रम में कहा, रजत में सादगी है, वह अपने आस-पास के लोगों की परवाह करता है, हमने करीब से देखा है कि उसने मध्य प्रदेश का नेतृत्व कैसे किया है, हमें यह बहुत पसंद आया। दाएं हाथ के बल्लेबाज पाटीदार सैयद मुश्ताक अली टी20 टूर्नामेंट में अजिंक्य रहाणे के बाद दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी थे। उन्होंने 10 मैच में 61 की औसत और 186.08 के स्ट्राइक रेट से 428 रन बनाए थे। पाटीदार डु प्लेसी की जगह लेंगे जिन्हें 2022 से 2024 तक टीम की कप्तानी करने के बाद रिलीज कर दिया गया था। दक्षिण अफ्रीकी के 40 वर्षीय डु प्लेसी आगामी सत्र में दिल्ली कैपिटल्स के लिए खेलेंगे।बृहस्पतिवार की घोषणा से पहले विराट कोहली के फ्रेंचाइजी के कप्तान के रूप में लौटने को लेकर भी अटकलें लगाई जा रही थी। कोहली 2013 से 2021 तक आरसीबी के कप्तान थे और उनका रिकॉर्ड शानदार रहा लेकिन उनकी अगुआई में टीम खिताब नहीं जीत सकी। कोहली ने 143 मुकाबलों में आरसीबी का नेतृत्व किया जो चेन्नई सुपर किंग्स के लिए दिग्गज महेंद्र सिंह धोनी के बाद कप्तान के रूप में दूसरा सबसे लंबा कार्यकाल है। कोहली ने पाटीदार को कप्तान बनाए जाने पर बधाई दी। कोहली ने फ्रेंचाइजी द्वारा साझा किए गए एक वीडियो बयान में कहा, मैं और टीम के अन्य सदस्य आपके साथ हैं, रजत।

कोहली ने आरसीबी के नए कप्तान पाटीदार से कहा, आपने इस पद पर रहने का अधिकार हासिल किया है

बेंगलुरू स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने बृहस्पतिवार को रजत पाटीदार को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू (आरसीबी) का नया कप्तान नियुक्त किए जाने का समर्थन करते हुए कहा कि इस बल्लेबाज ने अपनी निरंतरता और अनुशासन से इस पद पर रहने का अधिकार हासिल किया है। पाटीदार ने फाफ डु प्लेसी की जगह आरसीबी के कप्तान का पद संभाला है जिन्हें पिछले साल की बड़ी नीलामी से पहले रिलीज (अपने साथ बरकरार नहीं रखना) कर दिया गया था।आरसीबी द्वारा पोस्ट किए गए एक वीडियो में कोहली ने कहा, मैं यहां सभी को सूचित करने आया हूं कि रजत पाटीदार आरसीबी के नए कप्तान बनने जा रहे हैं। रजत, सबसे पहले मैं आपको बधाई और शुभकामनाएं देना चाहता हूं। आरसीबी की 2013 से 2021 तक कप्तानी करने वाले कोहली ने कहा, जिस तरह से आपने फ्रेंचाइजी में प्रगति की है और जिस तरह से आपने प्रदर्शन किया है, आपने पूरे भारत में आरसीबी के सभी प्रशंसकों के दिलों में जगह बनाई है। वे आपको नेतृत्व करते हुए देखने को लेकर उत्साहित होंगे। इसलिए आप इसके हकदार है।

खिलाड़ियों के साथ खड़े रहना महत्वपूर्ण, कोहली का अनुभव कप्तान की भूमिका में मदद करेगा: पाटीदार

बेंगलुरू रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू (आरसीबी) के नवनियुक्त कप्तान रजत पाटीदार ने बृहस्पतिवार को कहा कि वह कप्तानी की बारीकियां विराट कोहली से सीखना चाहेंगे और सभी परिस्थितियों में खिलाड़ियों के साथ खड़े रहने के महत्व पर जोर दिया।पाटीदार ने फाफ डु प्लेसी की जगह आरसीबी के कप्तान का पद संभाला है जिन्हें पिछले साल की बड़ी नीलामी से पहले रिलीज (अपने साथ बरकरार नहीं रखना) कर दिया गया था।पाटीदार ने यहां एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, मैं मुश्किल की स्थिति से वाकिफ हूं। इसलिए मुझे लगता है कि अपने खिलाड़ियों का समर्थन करना और हर परिस्थितियों में उनके साथ खड़े रहना और ऐसा माहौल देना महत्वपूर्ण है जहां वे सहज और आत्मविश्वास से भरा महसूस करें।पाटीदार ने कहा कि आरसीबी के कैंप में मौजूद अनुभवी नाम आईपीएल कप्तानी के चुनौतीपूर्ण काम में उनका मार्गदर्शन कर सकते हैं। हमारे पास नेतृत्वकर्ताओं का एक समूह है, जहां उनके अनुभव और विचार निश्चित रूप से मेरी नई नेतृत्व भूमिका में मदद करेंगे और एक व्यक्ति के रूप में भी प्रगति करने में मदद करेंगे।

डब्ल्यूपीएल का तीसरा सत्र शुक्रवार से , नजरें भारत के घरेलू क्रिकेटरों पर

डब्ल्यूपीएल का तीसरा सत्र आज से , नजरें भारत के घरेलू क्रिकेटरों पर

भाषा। वडोदरा

महिला प्रीमियर लीग का तीसरा सत्र शुक्रवार से यहां गत चैम्पियन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और गुजरात टाइटंस के मैच के साथ शुरू होगा जिसमें नजरें भारत के उदीयमान क्रिकेटरों पर लगी होंगी। अंतरराष्ट्रीय सितारों के साथ लीग की असल सफलता घरेलू खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर भी निर्भर करती है। पहले दो सत्र में श्रेयांका पाटिल और साइका इशाक जैसे खिलाड़ियों ने दबाव में शानदार प्रदर्शन किया और भारतीय टीम में भी जगह बनाई। डब्ल्यूपीएल के हर सत्र में उदीयमान भारतीय खिलाड़ियों की सूची बढती जा रही है। एलिसा हीली, सोफी मोलिनू और केट क्रॉस चोट के कारण इस सत्र में नहीं खेलेंगी। हरमनप्रीत कौर ने स्टार स्पोर्ट्स प्रेस रूम में कहा , भारतीय कप्तान होने के नाते मैं इस सत्र को लेकर काफी उत्साहित हूं क्योंकि कई घरेलू क्रिकेटरों ने इस टूर्नामेंट के लिए खुद को तैयार किया है। उन्होंने कहा , मुझे लगता है कि कई घरेलू क्रिकेटरों ने अच्छा प्रदर्शन किया है और सभी के दिमाग में कुछ नाम भी है। हम उम्मीद करते हैं कि वे अच्छा खेलें और भारतीय टीम मजबूत बने। खराब फॉर्म से जूझ रही शेफाली वर्मा दिल्ली कैपिटल्स के लिए अच्छा प्रदर्शन करके राष्ट्रीय टीम में वापसी करना चाहेंगी। भारतीय टीम जुलाई में इंग्लैंड का दौरा करेगी और वनडे विश्व कप भी भारत में होना है। तेज गेंदबाज हरफनमौला केशवी गौतम के पास भी खुद को साबित करने का मौका होगा।

विकल्प के तौर पर पारुनिका और नुजहत को चुना

नई दिल्ली। मुंबई इंडियंस ने चोटिल ऑलराउंडर पूजा वस्त्राकर के विकल्प के तौर पर महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के लिए पारुनिका सिसोदिया को अपनी टीम में शामिल किया है। फ्रेंचाइजी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) ने चोटिल स्पिनर आशा शोभना की जगह विकेटकीपर बल्लेबाज नुजहत परवीन को अपनी टीम का हिस्सा बनाया है।गत चैंपियन आरसीबी और गुजरात जाइंट्स के बीच शुक्रवार को वडोदरा में पहले मुकाबले के साथ डब्ल्यूपीएल की शुरुआत होगी।भारत के लिए पांच टी20 अंतरराष्ट्रीय खेलने वाली रेलवे की नुजहत 30 लाख रुपए के अपने आधार मूल्य पर आरसीबी से जुड़ेंगी।बाएं हाथ की स्पिनर पारुनिका 10 लाख रुपए में मुंबई इंडियंस की टीम का हिस्सा बनेंगी।

विदर्भ के खिलाफ रणजी ट्रॉफी सेमीफाइनल के लिए जायसवाल मुंबई टीम में

मुंबई। भारत के सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल को विदर्भ के खिलाफ आगामी रणजी ट्रॉफी सेमीफाइनल के लिए मुंबई टीम में शामिल किया गया है। मुंबई ने कोलकाता में खेले गए क्वार्टर फाइनल में हरियाणा को 152 रन से हराया था। सेमीफाइनल 17 फरवरी से खेला जाएगा। जायसवाल और शिवम दुबे को चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारतीय टीम में रिजर्व के तौर पर शामिल किया गया है जो यात्रा नहीं करेंगे। जायसवाल को प्रारंभिक टीम में जगह मिली थी लेकिन अंतिम सूची में वह जगह नहीं पा सके।

मास्टर्स लीग में मैच रैफरी होंगे गुंडप्पा विश्वनाथ

मुंबई। भारत के पूर्व दिग्गज क्रिकेटर गुंडप्पा विश्वनाथ आईसीसी एलीट पैनल के सेवानिवृत्त अंपायर साइमन टॉफेल और बिली बोडेन के साथ 22 फरवरी से शुरू होने वाली अंतरराष्ट्रीय मास्टर्स टी20 लीग के पहले सत्र में अधिकारी की भूमिका निभाएंगे। टॉफेल की अगुआई वाले अंपायरों के पैनल में उमेश दुबे और लिंडन एडवर्ड हैनिबल जैसे अनुभवी अधिकारी भी होंगे जबकि विश्वनाथ मैच रैफरी की भूमिका निभाएंगे।'न्यास ले चुके क्रिकेटरों का यह टूर्नामेंट नवी मुंबई, वडोदरा और रायपुर में खेला जाएगा तथा 16 मार्च तक चलेगा।

अमित पंघाल पेशेवर मुक्केबाज बने

नई दिल्ली। विश्व चैंपियनशिप में रजत पदक जीतने वाले भारत के एकमात्र पुरुष मुक्केबाज अमित पंघाल पेशेवर बनने वाले देश के नवीनतम मुक्केबाज बन गए है। ारत के सबसे सफल पुरुष मुक्केबाजों मे शामिल 29 वर्षीय पंघाल ने अमेरिका स्थित प्रतिभा प्रबंधन कंपनी क्रिटिकल स्पोर्ट्स एंड एंटरटेनमेंट के साथ करार किया है। एजेंसी ने इंस्टाग्राम पोस्ट में लिखा, क्रिटिकल स्पोर्ट्स एंड एंटरटेनमेंट को विश्व प्रसिद्ध ओलंपियन मुक्केबाज अमित पंघाल के साथ करार की घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है।

नाकामूरा से हारे गुकेश, कार्लसन को हराकर केमर ने किया उलटफेर

हैम्बर्ग (जर्मनी)। विश्व चैंपियन डी गुकेश का जीत का इंतजार जारी रहा और उन्हें फ्रीस्टाइल शतरंज ग्रैंडस्लैम के पांचवे से आठवे स्थान के मुकाबले मे हिकारू नाकामूरा के खिलाफ शिकस्त का सामना करना पड़ा।गुकेश को सफेद मोहरों से खेलते हुए अच्छी स्थिति मे पहुंचने के बावजूद टाईब्रेकर की दूसरी बाजी मे हार का सामना करना पड़ा।गुकेश ने एक रणनीतिक गलती की और नाकामूरा ने इसका फायदा उठाते हुए पांचवे स्थान के प्ले ऑफ मे जगह बनाई जहां उनकी भिड़ंत उज्बेकिस्तान के नोदिरबेक अब्दुसत्तोरोव से होगी।

सुरुचि, किरण व वरुण जीते

नई दिल्ली। राष्ट्रीय निशानेबाजी चैम्पियनशिप मे सात स्वर्ण और राष्ट्रीय खेलो में दो स्वर्ण जीतने वाली हरियाणा की युवा पिस्टल निशानेबाज सुरुचि ने यहां महिलाओ की 10मीटर एयर पिस्टल ट्रायल मे जीत दर्ज की। पुरुषों की 50 मीटर राइफल थ्री पोजिशंस और पुरुषो की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा मे भी राष्ट्रीय चैम्पियन विजई रहे। नौसेना के किरण जाधव ने 50 मीटर राइफल थ्री पोजिशंस जीती जबकि सेना के वरुण तोमर एयर पिस्टल मे विजई रहे। दो ओलंपिक कांस्य जीतने वाली मनु भाकर महिलाओं की एयर पिस्टल मे तीसरे स्थान पर रही। महिलाओ की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा मे सुरुचि ने क्वालीफिकेशन मे 586 अंक बनाए। एशियाई खेल चैम्पियन पलक दूसरे और मनु तीसरे स्थान पर रही। रिदम सांगवान और संयम भी फाइनल मे पहुंचे।

श्रेयस को कभी बाहर बैठाने की योजना नहीं थी: गंभीर

भाषा। अहमदाबाद

भारत के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने इन अटकलों को खारिज किया कि श्रेयस अय्यर को उनके शानदार फॉर्म के बावजूद एकदिवसीय टीम से बाहर रखा गया है। उन्होंने कहा कि लगातार अच्छा प्रदर्शन करने वाला दाएं हाथ का यह बल्लेबाज हमेशा योजनाओं का हिस्सा था और इस महीने होने वाली चैंपियंस ट्रॉफी में वह महत्वपूर्ण खिलाड़ी होंगे।इंग्लैंड के खिलाफ हाल ही में समाप्त हुई श्रृंखला में भारत की 3-0 की जीत के दौरान अय्यर शानदार फॉर्म में दिखे। नागपुर में 249 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत के 19 रन पर दो विकेट गंवाने के बाद उन्होंने पलटवार करते हुए 36 गेंद में 59 रन की आक्रामक पारी खेली। उन्होंने अगले दो मैच में 44 और 78 रन बनाए।पहले मैच के बाद अय्यर ने यह कहकर हलचल मचा दी थी कि उन्हें टीम में तभी शामिल किया गया जब विराट कोहली घुटने में दर्द के कारण मैच से बाहर हो गए। इससे यह अटकलें लगाई जाने लगीं कि अगले दो मैच में कोहली की वापसी पर उन्हें बाहर किया जा सकता है। बुधवार को तीसरे और अंतिम मैच के बाद गंभीर ने कहा, पूरी श्रृंखला के दौरान उन्हें बाहर बैठाने की योजना नहीं थी। हम पहले मैच में यशस्वी (जायसवाल) को मौका देना चाहते थे और देखना चाहते थे कि वह क्या कर सकते हैं क्योंकि ऑस्ट्रेलिया में वह बहुत अच्छी फॉर्म में थे। अय्यर को आखिरकार जायसवाल पर तरजीह दी गई और गंभीर ने उन्हें टीम में महत्वपूर्ण खिलाड़ी बताया।

चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए साथ नहीं जाएंगे परिजन

नई दिल्ली। चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए भारतीय क्रिकेट खिलाड़ियों के परिजन साथ नही जाएंगे चूंकि बीसीसीआई की नई यात्रा नीति पहली बार इस टूर्नामेंट के जरिए लागू हो रही है। भारतीय टीम को पहला मैच 20 फरवरी को बांग्लादेश के खिलाफ दुबई में खेलना है जिसके बाद 23 फरवरी को चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से सामना है। न्यूजीलैंड के खिलाफ मुकाबला दो मार्च को होना है। रोहित शर्मा की कप्तानी मे भारतीय टीम सारे मैच दुबई मे खेलेगी जबकि बाकी टूर्नामेंट 19 फरवरी से पाकिस्तान के तीन शहरों में होगा। चैम्पियंस ट्रॉफी का फाइनल नौ मार्च को है लिहाजा यह दौरा तीन सप्ताह से कम समय का ही है जिसमे बीसीसीआई खिलाड़ियों के परिवार को साथ जाने की अनुमति नही देगा। नई नीति के तहत 45 दिन या उससे लंबे दौरे पर ही परिवार खिलाड़ियों के साथ अधिकतम दो सप्ताह के लिए जा सकता है। बोर्ड के एक सूत्र ने पीटीआई से कहा , अगर कुछ बदलता है तो बात अलग है लेकिन अभी तो खिलाड़ियों के साथ उनका परिवार नही जा रहा।

भारत का क्षेत्ररक्षण बेहद संतोषजनक रहा: कोच दिलीप

अहमदाबाद। क्षेत्ररक्षण कोच टी दिलीप ने कहा कि इंग्लैंड के खिलाफ एकदिवसीय श्रृंखला के दौरान भारतीय टीम को अविश्वसनीय कैच लेने और रन रोकने का प्रयास करते हुए देखना बेहद संतोषजनक था। भारत ने जोस बटलर की टीम के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय में 4-। की जीत के बाद तीन मैच की एकदिवसीय श्रृंखला में क्लीन स्वीप किया जिसमें खिलाड़ियों ने कई शानदार कैच लपके, रन आउट किए और बाउंड्री पर शानदार क्षेत्ररक्षण किया।दिलीप ने बुधवार को यहां तीसरे और अंतिम एकदिवसीय में भारत की 142 रन की बड़ी जीत के बाद भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) द्वारा पोस्ट किए गए वीडियो में कहा, हमने हर समय कुछ शानदार मौके बनाए। मुझे लगता है कि चाहे वह आउटफील्ड मे शानदार क्षेत्ररक्षण हो या अद्भुत कैच लेना हो, पीछे की ओर दौड़ना हो और साथ ही मैच के अहम मोड़ पर महत्वपूर्ण रन आउट करना हो, मुझे लगता है कि सभी ने शानदार प्रयास किया। उन्होंने कहा, एक टीम के तौर पर हम अपने क्षेत्ररक्षण पर बहुत गर्व करते है और इस पूरी श्रृंखला में संयम और निरंतरता के साथ खेलना बेहद संतोषजनक रहा। दिलीप ने मुख्य कोच के रूप में राहुल द्रविड़ के कार्यकाल के दौरान भारतीय कोच का पद संभाला था और गौतम गंभीर के कोच बनने के बाद भी वह इस पद पर बने रहे। दिलीप ने कहा कि श्रृंखला के सर्वश्रेष्ठ क्षेत्ररक्षक का चयन करना कठिन काम था। उन्होने उप कप्तान शुभमन गिल, श्रेयस अय्यर और हर्षित राणा के प्रयासो की प्रशंसा की। उन्होने कहा, दावेदारों की बात करें तो मेरे लिए यह थोड़ा मुश्किल था। सबसे पहले एक तेज गेंदबाज होने के नाते वह प्रतिबद्धता (मैदान पर) दिखा रहा है और इन तीन (एकदिवसीय) मुकाबलों के दौरान मुझे लगता है कि उसने (हर्षित राणा) लगभग 10 से अधिक रन बचाए। दिलीप ने कहा, और दूसरे मैच में मिड ऑफ पर पीछे की ओर दौड़ते हुए एक बहुत ही महत्वपूर्ण कैच और मिड ऑफ पर नीचा कैच, शुभमन गिल। हालांकि श्रृंखला के इम्पैक्ट क्षेत्ररक्षक का पदक अय्यर को मिला जिन्होंने न केवल अपनी बल्लेबाजी बल्कि अपने क्षेत्ररक्षण कौशल से भी प्रभावित किया। उनका सबसे खास पल नागपुर में पहले एकदिवसीय में इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाज फिल सॉल्ट का शानदार रन आउट था। यह केवल उन कैचों के बारे में नही है जिन्हें हम हमेशा देखते है, बल्कि सीमा रेखा पर शानदार प्रयास करते हुए उन महत्वपूर्ण रनो को बचाना और रन आउट करना भी है।

क्विक न्यूज

छठीं एशियन स्वात फ्रेंच मार्शल आर्ट चैंपियनशिप में यूपी के खिलाड़ियों ने जीते चार पदक

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के खिलाड़ियों ने नई दिल्ली में आयोजित छठीं एशियन स्वात,फ्रेंच मार्शल आर्ट चैंपियनशिप में 2 रजत व 2 कांस्य पदक जीतकर प्रदेश का परचम लहराया। नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में गत 9 से 12 फरवरी 2025 तक आयोजित इस चैंपियनशिप में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए उत्तर प्रदेश के शैलेश कुमार ने पुरुष काम्बेट 89.5 किग्रा वर्ग में व कोमल सिंह ने महिला काम्बेट 44.9 किग्रा भार वर्ग में रजत पदक अपने नाम किया। वहीं विशाल सिंह ने पुरुष काम्बेट 51.9 किग्रा व सर्वेश ने पुरुष एसाल्ट 65.8 किग्रा भार वर्ग में कांस्य पदक जीते। इन पदक विजेताओं का वापसी के बाद स्वात एसोसिएशन ऑफ उत्तर प्रदेश के पदाधिकारीगण ने बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रोण्मनोज दीक्षित ने अपने आर्शीवचन में कहा कि उत्तर प्रदेश के खिलाड़ियों ने प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ियों के खिलाफकड़ी चुनौती पेश करते हुए उदाहरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर मौजूद सचिव केबी पंतए कोषाध्यक्ष कमल जोशी वरिष्ठ उपाध्यक्ष अशोक त्रिपाठी, उपाध्यक्ष श्रीमती रचना गोविल ने पदक विजेता खिलाड़ियों को प्रदर्शन के लिए बधाई दी।

यश जयस्वाल ने माइंड स्पोर्ट में मान बढ़ाया

लखनऊ। माइंड स्पोर्ट्स की दुनिया में, जहां कौशल, अनुशासन और रणनीति सफलता को परिभाषित करती है, लखनऊ के यश जायसवाल भारत के नए उभरते सितारे के रूप में उभरे हैं। पेशे से इंजीनियरिंग लीड और पसंद से एक भावुक पोकर खिलाड़ी, यश ने पोकरबाजी पर टूर्नामेंट जीत की एक प्रभावशाली श्रृंखला के साथ भारतीय पोकर समुदाय में हलचल मचा दी है। अकेले 2025 में 18 लाख रुपये से अधिक की जीत के साथ, उन्होंने खुद को इस माइंड स्पोर्ट के प्रतिस्पर्धी परिदृश्य में एक दुर्जेय दावेदार के रूप में मजबूती से स्थापित किया है। मूल रूप से लखनऊ के रहने वाले यश के पास एनआईटी, दिल्ली से सूचना प्रौद्योगिकी में बी.टेक की डिग्री है और वर्तमान में वह एक प्रमुख फर्म में इंजीनियरिंग लीड हैं। अपनी पूर्णकालिक पेशेवर प्रतिबद्धताओं के बावजूद, उन्होंने अपनी रणनीतिक मानसिकता और विश्लेषणात्मक कौशल का अधिकतम लाभ उठाते हुए अपने पोकर कौशल को सफलतापूर्वक निखारा है। पोकर में उनकी यात्रा दृढ़ता और अनुकूलनशीलता की शक्ति का एक वसीयतनामा है, यह साबित करते हुए कि सही दृष्टिकोण के साथ, पोकर सिर्फ एक खेल से कहीं अधिक हो सकता है-यह एक कौशल-आधारित खोज हो सकती है जो प्रभावशाली परिणाम दे सकती है।

लखनऊ के कृष्णा और यशदीप क्वार्टर फाइनल में

लखनऊ। उत्तर प्रदेश राज्य स्तरीय समन्वय सब जूनियर बालक बॉक्सिंग चैंपियनशिप में लखनऊ मंडल के कृष्णा और यशदीप ने शानदार प्रदर्शन कर क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली। उनके अलावा वाराणसी के सनीए आगरा के लवए मुरादाबाद के तरुणए सहारनपुर के धीरज और अलीगढ़ के मोहित ने भी अपने.अपने मुकाबले जीतकर अगले दौर में प्रवेश किया। यह चैंपियनशिप उत्तर प्रदेश खेल निदेशालय और यूपी बॉक्सिंग एसोसिएशन के समन्वय से केडी सिंह बाबू स्टेडियम के बाक्सिंग हाल में आयोजित की जा रही है। इसका उद्घाटन मुख्य अतिथि यूपी बॉक्सिंग एसोसिएशन के चेयरमैन नीरज सिंह व विशिष्ट अतिथि खेल निदेशक डॉ आरपी सिंह ने किया। उद्घाटन समारोह के दौरान अतिथियों ने बॉक्सिंग हॉल के बाहर पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया और अधिक से अधिक पौधे लगाने की अपील की। इस मौके पर यूपी बॉक्सिंग एसोसिएशन के महासचिव प्रमोद कुमार, बॉक्सिंग एसोसिएशन लखनऊ के अध्यक्ष अतुल अग्निहोत्री, सचिव सहदेव सिंह, लखनऊ मंडल के क्षेत्रीय क्रीड़ाधिकारी अनिमेष सक्सेना और ममता चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष राजीव मिश्रा भी उपस्थित थे।

सेंट मोनिका स्कूल की वार्षिक खेलकूद में आराध्या और मोहसिन बने फर्राटा चैंपियन

लखनऊ। आराध्या यादव व मोहसिन ने सेंट मोनिका स्कूलए लखनऊ में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता 2024.25 में 100 मीण्दौड़ में पहला स्थान हासिल करते हुए फर्राटा चैंपियन होने का गौरव प्राप्त किया। बुधवार को आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि डॉण् आनंद किशोर पाण्डेय ;निदेशकए स्पोर्ट्स नेटवर्क इंडियाद्ध व विशिष्ट अतिथि ग्रैंडमास्टर अभय सिंह राठौर ;ताइक्कांडोए नाइंथ डैन ब्लैक बेल्ट, अमेरिका, ने खेलों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए खिलाड़ियों की को प्रेरित किया। इस अवसर पर बालिका 100 मीटर दौड़ में आराध्या यादव पहलेए प्राची उपाध्याय दूसरे व सृष्टि तीसरे स्थान पर रही। बालक 100 मीटर दौड़ में मोहसिन पहले व मोहम्मद अनस दूसरे स्थान पर रहे। बालक 200 मीटर दौड़ में आयुष कुमार पहले, मोहम्मद सैफ दूसरे व ताहा कफील तीसरे स्थान पर रहे। बालिका 200 मीटर दौड़ में सारा पहलेए प्रीति दूसरे व अपर्णा तीसरे स्थान पर रही। इस समारोह का आयोजन प्रशासक श्रीमती लतिका एवं श्री फिलिप द्वारा शानदार रूप से आयोजित किया गयाए जिन्होंने छात्रों को खेलों के प्रति प्रेरित करने का सराहनीय कार्य किया।

कूह स्पोर्ट्स एवं लाइफकेयर ने दर्ज की जीत

लखनऊ। धारदार गेंदबाजी की सहायता से कूह स्पोर्ट्स क्रिकेट क्लब ने आरबीएन ग्लोबल टी20 प्राइजमनी कप क्रिकेट टूर्नामेंट 2025 के मैच में सेंट्रल क्रिकेट क्लब को 93 रन से पराजित किया। दिन के दूसरे मैच में लाइफकेयर क्रिकेट क्लब ने साउंड इमेज क्रिकेट क्लब को चार विकेट से शिकस्त दी। डीजीआई स्टेडियम पर कूह स्पोर्ट्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित ओवर में नौ विकेट पर 182 रन का मजबूत स्कोर बनाया। टीम से कुशाग्र सिंह ने 32 गेंदों पर 6 चौके व 2 छक्के से 42 रन की पारी खेली। नमन श्रीवास्तव ने 29, शिवम दीक्षित ने 24 और आदित्य प्रताप सिंह ने 20 रन का योगदान दिया।सेंट्रल क्रिकेट क्लब से नितेश कुशवाहा ने चार विकेट चटकाए जबकि सत्यम पांडेय ने तीन विकेट लिए। जवाब में लक्ष्य का पीछा करने उतरी सेंट्रल क्रिकेट क्लब की टीम 14ण्4 ओवर में 89 रन पर ढेर हो गई। टीम के नौ बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा पार भी नहीं कर सके। वहीं सत्यम पाण्डेय ने सर्वाधिक 42 रन का योगदान दिया लेकिन टीम को हार से नहीं बचा सके। कूह स्पोर्ट्स क्रिकेट क्लब से आदित्य प्रताप सिंह ने तीन जबकि शिवमए शाहिद और ओमकार ने दो-दो विकेट चटकाये। मैन ऑफद मैच का पुरस्कार आदित्य प्रताप सिंह को उनके शानदार प्रदर्शन के लिए दिया गया। इसी टूर्नामेंट के दूसरे मैच में लाइफकेयर क्रिकेट क्लब ने मैन ऑफद मैच अरबाज अहमद-4 विकेट, की गेंदबाजी के बाद उपयोगी बल्लेबाजी की सहायता से साउंड इमेजेस क्रिकेट क्लब को चार विकेट से हराया। साउंड इमेजेस ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित ओवर में 147 रन का स्कोर बनाया। इसमें अंबिकेश्वर मिश्र ने 37 गेंदों पर 6 चौके व 2 छक्के से 48 रनए यादवेन्द्र सिंह यादव ने 35 एवं अंशुमान पांडे ने 28 रन बनाये। लाइफकेयर से अरबाज अहमद ने घातक गेंदबाजी करते हुए 22 रन देकर चार विकेट चटकाये। उनके अलावा शैलेंद्र सिंह ने दो विकेट झटके। जवाब में लाइफकेयर क्रिकेट क्लब ने चार गेंद शेष रहते छह विकेट के नुकसान पर 148 रन बनाकर मैच जीत लिया। हालांकि लाइफकेयर की शुरुआत खराब रही और उसके चार विकेट केवल 65 रन पर गिर गए।

हरियाणा और कर्नाटक ने राष्ट्रीय खेलों में हॉकी के स्वर्ण पदक जीते

हरिद्वार। हरियाणा ने पिछले सत्र की अपनी हार का बदला चुकता करते हुए बृहस्पतिवार को यहां गत चैंपियन मध्य प्रदेश को 4-। से हराकर राष्ट्रीय खेलों की महिला हॉकी स्पर्धा का स्वर्ण पदक जीता।मध्य प्रदेश को ऐश्वर्या चव्हाण ने पांचवें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर गोल दागकर बढ़त दिलाई लेकिन मध्यांतर के बाद हरियाणा ने जोरदार वापसी करते हुए महिमा चौधरी (37वें मिनट), इशिका (45वें और 50वें मिनट) और मोनिका (55वें मिनट) के गोल की बदौलत जीत दर्ज की। कांस्य पदक के मुकाबले में झारखंड ने महाराष्ट्र को 2-। से हराया।गोवा में 2023 में हुए राष्ट्रीय खेलों में मध्य प्रदेश ने शूट आउट में हरियाण को 3-0 से हराकर खिताब जीता था।पुरुष वर्ग में कर्नाटक ने बेहद कड़े मुकाबले में उत्तर प्रदेश को 3-2 से हराकर स्वर्ण पदक जीता। फराज खान ने पहले ही मिनट में पेनल्टी कार्नर पर गोल करके उत्तर प्रदेश को बढ़त दिलाई लेकिन कर्नाटक के सामंत सी ने आठवें मिनट में स्कोर।-। कर दिया। भरत महालिंगप्पा कुर्ताकोटि (18वें मिनट) और अभारन सुदेश (39वें मिनट) ने इसके बाद पेनल्टी कॉर्नर पर गोल दागकर कर्नाटक को 3-। की बढ़त दिलाई।शारदा नंद तिवारी ने 45वें मिनट में उत्तर प्रदेश की ओर से पेनल्टी कॉर्नर पर दूसरा गोल दागा लेकिन अपनी टीम को हार से नहीं बचा पाए।महाराष्ट्र ने पंजाब को।-0 से हराकर कांस्य पदक जीता।

एटीपी टेनिस : मानस धामने, आर्यन शाह और करण सिंह को वाइल्ड कार्ड

पुणे। उभरते हुए खिलाड़ियों मानस धामने, आर्यन शाह और करण सिंह को बृहस्पतिवार को महा ओपन एटीपी चैलेंजर 100 पुरुष टेनिस चैंपियनशिप के लिए वाइल्डकार्ड दिया गया। इस प्रतियोगिता में 28 देशों के शीर्ष खिलाड़ी 16 से 23 फरवरी तक यहां खिताब के लिए चुनौती पेश करेंगे। महाराष्ट्र राज्य लॉन टेनिस संघ इस टूर्नामेंट का आयोजन महाराष्ट्र सरकार के खेल एवं युवा सेवा विभाग के सहयोग से म्हालुंगे बालेवाड़ी में शिव छत्रपति खेल परिसर में करेगा। यह प्रतियोगिता भारत में आयोजित होने वाले चार एटीपी चैलेंजर टूर्नामेंट की श्रृंखला का तीसरा टूर्नामेंट है। शुरुआती दो चैलेंजर टूर्नामेंट चेन्नई और दिल्ली में आयोजित किए गए थे जबकि आखिरी प्रतियोगिता बेंगलुरू में खेली जाएगी।

भारत की टीम एशियाई बैडमिंटन मिश्रित टीम में कोरिया से हारा

अंतिम आठ में जापान से मुकाबला

भाषा। किंगदाओ (चीन)

भारत को बैडमिंटन एशिया मिश्रित टीम चैंपियनशिप के ग्रुप डी मुकाबले में बृहस्पतिवार को यहां दक्षिण कोरिया के खिलाफ 2-3 से हार का सामना करना पड़ा लेकिन टीम ग्रुप में दूसरे स्थान पर रहते हुए क्वार्टर फाइनल में जगह बनाने में सफल रही।बुधवार को मकाऊको 5-0 से हराकर शानदार शुरुआत करने वाले भारत ने अंत तक चुनौती पेश की लेकिन एमआर अर्जुन और सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी की पुरुष युगल जोड़ी की निर्णायक मैच में जिन योंग और एनए सुंग सेयुंग के खिलाफ सीधे गेम में हार के साथ टीम ने मुकाबला गंवा दिया।ध्रुव कपिला और तनिषा क्रास्टो की मिश्रित युगल जोड़ी ने पहला गेम 21-11 से जीतकर अच्छी शुरुआती की लेकिन अगले दो गेम 12-21, 15-21 से गंवाते हुए 56 मिनट में मैच हार गए। भारत की शीर्ष वरीयता प्राप्त महिला खिलाड़ी मालविका बंसोड़ को दुनिया की 19वें नंबर की खिलाड़ी सिम यू जिन के खिलाफ केवल 27 मिनट में 9-21, 10-21 से हार का सामना करना पड़ा।चेन्नई के सतीश करुणाकरण ने एक घंटे 12 मिनट में चो गिओनयिओप को 17-21, 21-18, 21-19 से हराकर भारत को वापसी दिलाई जिसके बाद त्रीशा जॉली और गायत्री गोपीचंद की दुनिया की नौवें नंबर की जोड़ी ने महिला युगल में किम मिन जी और किम यू जुंग पर 19-21, 21-16, 21-11 की जीत के साथ स्कोर 2-2 कर दिया।

यूपी की पुरुष हॉकी टीम ने जीता रजत पदक

38वें राष्ट्रीय खेल : जिम्नास्टिक्स में आदित्य ने रजत व सिद्धार्थ वर्मा ने जीते दोहरे कांस्य

लखनऊ। 38वें राष्ट्रीय खेलों में उत्तर प्रदेश की पुरुष हॉकी टीम ने शानदार प्रदर्शन किया और कांटे के मुकाबले में रजत पदक जीता। वहीं निशानेबाजी के महिला स्कीट में अरीबा खान ने रजत पदक जीता जबकि जिम्नास्टिक्स में आदित्य सिंह राणा ने रजत व सिद्धार्थ वर्मा ने दोहरे कांस्य पदक जीते। हरिद्वार में पुरुष हॉकी के फाइनल में उत्तर प्रदेश का मुकाबला कर्नाटक से हुआ जिसमें कर्नाटक ने संघर्ष के बाद 3-2 से जीत दर्ज की। प्रतियोगिता के शीर्ष स्कोरर उत्तर प्रदेश के शारदानंद तिवारी रहे। इससे पूर्व उत्तर प्रदेश पुरुष हॉकी टीम ने 36वें नेशनल गेम्स में रजत व 37वें नेशनल गेम्स में कांस्य पदक जीता। आज फाइनल में उत्तर प्रदेश के फराज़ खान ने पहले ही मिनट में पेनाल्टी कॉर्नर से गोल कर टीम को बढ़त दिलाईए लेकिन जल्द ही कर्नाटक के शमंथ सीएस ने आठवें मिनट में बराबरी की। कर्नाटक के भरत महालिंगप्पा कुर्तकोटी 18वां और अभरण सुदेव बी 39वां ने पेनाल्टी कॉर्नर से गोल कर टीम को मजबूत स्थिति में पहुंचा दिया। उत्तर प्रदेश से शारदानंद तिवारी ने 45वें मिनट में पेनाल्टी कॉर्नर से गोल कियाए लेकिन यह उनकी टीम को जीत दिलाने के लिए पर्याप्त नहीं था। गुरुवार को जिम्नास्टिक्स में उत्तर प्रदेश ने एक रजत व दो कांस्य पदक जीते। इसमें पैरेलल बार्स म उत्तर प्रदेश के आदित्य सिंह राणा ने 12ण्433 स्कोर के साथ रजत पदक जीता। उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थ वर्मा ने वॉल्टिंग टेबल में 12-50 के स्कोर के साथ और हॉरिजेंटल बार में 11ण्833 के स्कोर के साथ कांस्य पदक जीते। दूसरी ओर निशानेबाजी के महिला स्कीट फाइनल में उत्तर प्रदेश की अरीबा खान ने 45 अंक के साथ रजत पदक जीता। उत्तर प्रदेश ओलंपिक एसोसिएशन के महासचिव डॉ. आनन्देश्वर पाण्डेय ने बताया कि 38वें राष्ट्रीय खेल में उत्तर प्रदेश के खिलाड़ियों ने 13 स्वर्ण, 20 रजत व 23 कांस्य सहित 56 पदक जीत चुके हैं और तालिका में 13वें स्थान पर है।

राउंडग्लास हॉकी अकादमी और नवल टाटा ओडिशा क्वार्टर फाइनल म, यूपी करम बाहर

लखनऊ। राउंडग्लास हॉकी अकादमी पंजाब ने 35वीं ऑल इंडिया केडी सिंह बाबू सब.जूनियर अंडर-14 प्राइज़मनी हॉकी टूर्नामेंट में लगातार तीसरी जीत दर्ज करते हुए क्वार्टर फाइनल का टिकट पक्का कर लिया। दूसरी ओरए मेजबान टीम यूपी करम दूसरी लगातार हार के साथ टूर्नामेंट से बाहर हो गई। केडी सिंह बाबू स्मारक सोसायटी के तत्वावधान में गुरु गोविंद सिंह स्पोर्ट्स कॉलेज के ध्यानचंद एस्ट्रोटर्फस्टेडियम में आयोजित टूर्नामेंट में पूल ए से राउंडग्लास हॉकी अकादमी ने तीन जीत के साथ शीर्ष स्थान पर अपनी पकड़ बनाईए जबकि पिलकर्स ब्रदर्स दो जीत के साथ दूसरे स्थान पर रहते हुए क्वार्टर फाइनल में पहुंची। पूल बी से नवल टाटा ओडिशा ने तीन जीत अर्जित की और मनमोहन सिंह अकादमी हरियाणा ने दो जीत के साथ अंतिम आठ में प्रवेश किया। नवल टाटा ओडिशा ने मेजबान यूपी करम को 7.0 से हराकर जोरदार जीत हासिल की। यूपी की टीम ने कड़ी मेहनत कीए लेकिन गोल के मौके नहीं तलाश सकी। नवल टाटा ओडिशा के निर्मल मिंज ने छठवेंए 33वें और 38वें मिनट में गोल दागेए वहीं रोशन मिंज19वें मिनट अभिनाश कुजूर 24वें मिनट सींचोरिया 56वें मिनट और अभिषेक सोरेंग 58वें मिनट ने 1-1 गोल किए। दूसरी ओरए पिछली विजेता राउंडग्लास हॉकी अकादमी ;पंजाबद्ध ने पिलकर्स ब्रदर्स को 8.0 से हराकर अपनी लगातार तीसरी जीत दर्ज की। पूरे मैच में टीम ने आक्रामक खेल दिखाया और मजबूत डिफेंस के कारण विरोधी को कोई भी गोल करने का अवसर नहीं मिला। मैच का पहला गोल गुरमानवदीप सिंह ने 14वें मिनट में पेनाल्टी कार्नर पर दागा। वहीं हरकीरत सिंह ने 27वें मिनट में साथी खिलाड़ी से मिले पास पर दूसरा गोल किया।

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा द इंडियन एक्सप्रेस प्रा.लि. सी-26 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोन: 0522-4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक: शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: विजय प्रकाश सिंह।
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।